

आर.एन.आई. नं. 3653/57 डाक पंजीयन संख्या JaipurCity/413/2015-17  
मुद्रण तिथि दिनांक 5 से 8 जनवरी, 2016  
वर्ष : 74 ★ अंक : 01 ★ मूल्य : 10 रु.  
डाक प्रेषण तिथि 10 जनवरी, 2016 ★ पौष, 2072

ISSN  
2249-2011

हिन्दी मासिक

# जिनवाणी

आचार्य हीरा : आचार्यपद रजत साधनावर्ष



मंगल-मूल, धर्म की जननी, शाश्वत सुखदा कल्याणी।  
द्रोह-मोह-छल-मान-मर्दिनी, फिर प्रगटी यह 'जिनवाणी' ॥

संसार की समस्त सम्पदा और भोग  
के साधन भी मनुष्य की इच्छा  
पूरी नहीं कर सकते हैं।

- आचार्य हस्ती



आवश्यकता जीवन को चलाने  
के लिए जरूरी है, पर इच्छा जीवन  
को बिगाड़ने वाली है,  
इच्छाओं पर नियंत्रण आवश्यक है।

- आचार्य हीरा



जिनका जीवन बोलता है,  
उनको बोलने की उतनी जरूरत भी नहीं है।

- उपाध्याय मान

With Best Compliments :  
Rajeev Nita Daga Foundation Houston

# जिनवाणी हिन्दी-मासिक

## संरक्षक

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ  
घोड़ों का चौक, जोधपुर (राज.), फोन-2636763

## संस्थापक

श्री जैन रत्न विद्यालय, भोपालगढ़

## प्रकाशक

विनयचन्द डागा, मंत्री-सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल  
दुकान नं. 182-183 के ऊपर, बापू बाजार,  
जयपुर-302003(राज.)  
फोन-0141-2575997, फैक्स-0141-2570753

## प्रधान सम्पादक

प्रो. (डॉ.) धर्मचन्द जैन  
सामायिक-स्वाध्याय भवन, प्लॉट नं. 2,  
नेहरू पार्क, जोधपुर-342003 (राज.)  
फोन : 0291-2626279  
E-mail : jinvani@yahoo.co.in  
E-mail : editorjinvani@gmail.com

## सह-सम्पादक

नौरतन मेहता, जोधपुर  
डॉ. श्वेता जैन, जोधपुर

## भारत सरकार द्वारा प्रदत्त

रजिस्ट्रेशन नं. 3653/57  
डाक पंजीयन सं.-JaipurCity/413/2015-17  
ISSN 2249 - 2011



कसिणं पि जो इमं लोवं,  
पडिपुण्णं दलेज्ज इक्कस्सा।  
तेणावि से व संतुस्से,  
इइ दुप्परुए इमे ब्राया।।

-उत्तराध्ययन सूत्र, 8.16

जैसे लाभ, लोभ भी वैसे,  
लोभ लाभ से बढ़ता है।  
दो माशा सोने का कार्य भी,  
करोड़ों से ना भरता है।।

जनवरी, 2016

वीर निर्वाण संवत्, 2542

पौष, 2072

वर्ष 74

अंक 1

सदस्यता शुल्क

त्रिवार्षिक : 250 रु.

20 वर्षीय, देश में : 1000 रु.

20 वर्षीय, विदेश में : 12500 रु.

स्तम्भ सदस्यता : 21000/-

संरक्षक सदस्यता : 11000/-

साहित्य आजीवन सदस्यता- 4000/-

एक प्रति का मूल्य : 10 रु.

शुल्क/साभार नकद राशि 'जिनवाणी' बैंक खाता संख्या SBBJ 51026632986

IFSC No. SBBJ 0010843 में जमा कराकर जमापत्री (काउन्टर-प्रति) अथवा ड्राफ्ट भेजने का पता

'जिनवाणी', दुकान नं. 182 के ऊपर, बापू बाजार, जयपुर-302003 (राज.)

फोन नं.0141-2575997, 2571163, फैक्स : 0141-2570753, E-mail:sgpmandal@yahoo.in

मुद्रक : दी डायमण्ड प्रिंटिंग प्रेस, मोतीसिंह भोमियों का रास्ता, जयपुर, फोन- 0141-2562929

नोट- यह आवश्यक नहीं कि लेखकों के विचारों से सम्पादक या मण्डल की सहमति हो।

# विषयानुक्रम

सम्पादकीय-	जैन एवं बौद्ध दर्शन में साम्य एवं भेद	-डॉ. धर्मचन्द्र जैन	5
अमृत-चिन्तन-	आगम-वाणी	-सम्पादक	10
विचार-वारिधि-	दान	-आचार्यप्रवर श्री हस्तीमल जी म.सा.	12
प्रेरक-संदेश-	आचार्यप्रवर श्री हीरा का संदेश	-आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा.	13
प्रवचन-	सहिष्णुता से बनाएँ सुन्दर भविष्य	-तत्त्वचिन्तक श्री प्रमोदमुनिजी म.सा.	17
जीवन-व्यवहार-	जीवन के सत्य	-आचार्यश्री विजयरत्नसुन्दरसूरिजी म.सा.	21
शोधालेख-	गोम्मटसार कर्मकाण्ड के आधार पर कर्म तथा कर्म की विविध अवस्थाएँ	-श्री वीरचन्द्र जैन	22
आ.हस्ती जन्मदिवस-	स्वाध्याय : अंधकार में प्रकाश	-श्री अरूण मेहता	30
आ.पद रजतवर्ष-	गणिवर हीरा गुणों के भण्डार हैं	-श्री धर्मचन्द्र जैन	20
	गणि हीरा पदारोहण - रजत वर्ष मनाएँ	-श्री जौहरीमल छाजेड़	29
	जिनशासन के दीप्तिमान नक्षत्र : आचार्यश्री हीरा	-महासती श्री सुयशप्रभाजी	89
प्रासंगिक-	क्या बाल दीक्षा पर कानून का हस्तक्षेप उचित है ?	-डॉ. चंचलमल चोरडिया	37
	समाचारी से सम्बन्धित सुझाव	-एक संत	45
	शेषकाल में विशेष श्रुताराधना	-डॉ. दिलीप धींग	48
काव्य-	वीर प्रभु की अंतिम वाणी (18)	-मधुर व्याख्यानी श्री गौतममुनि जी म.सा.	51
अंग्रेजी-स्तम्भ-	Ahimsa and Samayika (2)	-Sh. Tejraj P.	55
तत्त्व-ज्ञान -	आओ मिलकर ज्ञान बढ़ाएँ (97)	-श्री धर्मचन्द्र जैन	63
धारावाहिक -	लग्न की वेला (16)	-आचार्यश्री उमेशमुनिजी 'अणु'	75
समाज-चिन्तन -	अहिंसा और समाज	-प्रो. प्रेमसुमन जैन	81
युवा-स्तम्भ -	सहयोग के भाव का विस्तार	-श्री रतनलाल जैन	85
नारी-स्तम्भ -	ऐसी भी है आधुनिक नारी	-श्रीमती निधि दिनेश लोढ़ा	88
स्वास्थ्य-विज्ञान -	स्वास्थ्य का अचूक उपाय : योग	-प्रवर्तक श्री गणेशमुनि शास्त्री	91
	योग में है समस्याओं का समाधान	-डॉ. रीना बैद	92
जीवन-व्यवहार -	पर-निन्दा नहीं, स्वयं की आलोचना करें	-श्री पद्मचन्द्र गाँधी	94
बाल-स्तम्भ -	दृष्टिकोण में निहित है- विवाद और समाधान	-श्री जसराज देवड़ा धोका	100
	माँ	-श्री प्रशान्त जैन	102
विचार-	जिनवाणी का सच्चा उपासक सदैव	-श्री नितेश नागोता जैन	16
	वृद्धावस्था में आचार विचार सही रखें	-श्री जशकरण डागा	93
	महावीर और मोक्ष-पथ	-श्री जसराज देवड़ा धोका	104
कविता/गीत-	नव वर्ष सभी को शुभ हो	-श्री मगनचन्द्र जैन	36
	साधना	-अरुणा कर्णावट	47
	ये तो भगता रे मन भाया	-श्री एन. महावीरचन्द्र तातेड़	50
	शुभ चिंतन रहे सदा मन में	-श्री मोहन कोठारी 'विनर'	61
	निश्चित ही सुख तुम पाओगे	-श्री अशोक गोगड़	84
	जीवन-बोध क्षणिकाएँ	-श्रद्धेय श्री यशवन्तमुनिजी	97
	वीतरागता अपनाया कर....	-श्री देवेन्द्रनाथ मोदी	127
रिपोर्ट-	हिण्डौन चातुर्मास में भक्ति की अभिव्यक्ति	-श्री धीरज जैन	98
साहित्य-समीक्षा-	नूतन साहित्य	-डॉ. श्वेता जैन	105
समाचार विविधा-	समाचार-संकलन	-संकलित	107
	साभार-प्राप्ति-स्वीकार	-संकलित	128

## जैन एवं बौद्ध दर्शनों में साम्य एवं भेद

❖ डॉ. धर्मचन्द्र जैन

जैन एवं बौद्ध धर्म-दर्शन श्रमण संस्कृति के परिचायक हैं। दोनों में श्रम, शम एवं सम का महत्त्व अंगीकृत है। ये दोनों वैदिक कर्मकाण्ड एवं ईश्वर का सृष्टिकर्तृत्व नहीं मानते। दोनों की व्यक्ति के श्रम एवं पुरुषार्थ पर आस्था है। दोनों की मान्यता है कि मनुष्य स्वयं अपने कारणों से दुःखी-सुखी होता है। वह चाहे तो दृष्टि को सम्यक् बनाकर मोक्ष किं वा निर्वाण को प्राप्त कर सकता है। वैदिक धर्म जहाँ लौकिक अभ्युदय एवं निःश्रेयस दोनों को धर्म के स्वरूप में प्रतिष्ठित करते हैं वहाँ जैन एवं बौद्ध धर्म अपना लक्ष्य निःश्रेयस, मोक्ष अथवा निर्वाण को बनाते हैं। वर्ण, जाति आदि के आधार पर मानव समुदाय को उच्च एवं निम्न समझना इन दोनों दर्शनों को स्वीकार्य नहीं है। इनमें हिंसा, झूठ, चोरी आदि करने वाले को अनार्य तथा इनका त्याग करने वाले को आर्य कहा गया है। ब्राह्मण आदि को जन्म से नहीं कर्म से मान्यता दी गई है। उत्तराध्ययनसूत्र (25.33) में कहा गया है- कम्मुणा बंभणो होइ, कम्मुणा हवइ खत्तिओ। वइस्सो कम्मुणा होइ, सुद्धो हवइ कम्मुणा।- कर्म (कार्य) से ही कोई ब्राह्मण होता है, कर्म से ही क्षत्रिय होता है। कर्म से ही वैश्य एवं कर्म से ही शूद्र होता है। इसी प्रकार का कथन बौद्ध ग्रन्थ सुत्तनिपात (वासेट्ट सुत्त) में हुआ है- न जच्चा वसलो होति, न जच्चा होति ब्राह्मणो। कम्मुणा वसलो होति, कम्मुणा होति ब्राह्मणो। न जाति (जन्म) से कोई शूद्र होता है, न जन्म से कोई ब्राह्मण होता है। कर्म से ही कोई शूद्र एवं कर्म से ही ब्राह्मण होता है। जैन ग्रन्थ आदि पुराण (38.45) में समस्त मनुष्यों की एक ही मनुष्य जाति मानी गई है- मनुष्यजातिरेकैव। निर्युक्ति में कहा गया है- एक्का मणुस्सजाइ। इन दोनों धर्मों की एक समानता यह भी है कि इन दोनों के प्रवर्तकों ने अपना उपदेश लोकभाषा में दिया है। तीर्थंकर महावीर ने अर्धमागधी प्राकृत भाषा में उपदेश दिया है तो बुद्ध ने पालिभाषा में। पालिभाषा प्राकृत का ही अंग रही है।

बौद्धदर्शन में बुद्ध, धर्म और संघ की शरण का प्रतिपादन है- बुद्धं सरणं गच्छामि, धम्मं सरणं गच्छामि, संघं सरणं गच्छामि। जैन धर्म में अरिहंत, सिद्ध, साधु एवं धर्म इन चार की शरण अंगीकार की गई है- अरिहंते सरणं पवज्जामि, सिद्धे सरणं पवज्जामि, साहुसरणं पवज्जामि, केवलिपण्णत्तं धम्मं सरणं पवज्जामि।

जैन धर्म में श्रमण-श्रमणियों के लिए पंच महाव्रतों तथा गृहस्थ श्रावक-श्राविकाओं के लिए पंच अणुव्रतों की अवधारणा है। बौद्धधर्म में भी कुछ अन्तर से पंचशील का

प्रतिपादन हुआ है। जैन परम्परा में प्रतिपादित पाँच महाव्रत हैं- 1. प्राणातिपात विरमण, 2. मृषावाद विरमण, 3. अदत्तादान विरमण, 4. मैथुन विरमण, 5. परिग्रह विरमण। बौद्ध धर्म में पंचशील के अन्तर्गत प्राणातिपात विरमण, मृषावाद विरमण एवं अदत्तादान विरमण का तो समान रूप से कथन हुआ है, मैथुन विरमण के स्थान पर काम-मिथ्याचार विरमण शब्द का प्रयोग हुआ है, जिसमें कोई विशेष अर्थ भेद नहीं है तथा परिग्रह विरमण को शील के अन्तर्गत स्थान न देकर सुरा-मेरेय-मद्य प्रमाद-स्थान विरमण का कथन हुआ है। इसमें मदिरा आदि मादक पदार्थों के सेवन का त्याग किया जाता है। यह शील का आवश्यक अंग है। पंचशील के सम्बन्ध में धम्मपद (गाथा 246-247) में कहा गया है-

यो पाणमतिपातेति, मुसावादञ्च भासति।  
लोके अदिमं आदियति, परदारञ्च गच्छति।  
सुरामेरेयपानञ्च यो नरो अनुयुञ्जति।  
इधेवमसो लोकस्मिं मूलं खनति उत्तनो॥

जो प्राणों का अतिपात करता है, झूठ बोलता है, चोरी करता है, परस्त्रीगमन करता है, सुरा-मदिरा पीता है, वह इसी लोक में अपनी जड़ खोदता है, अर्थात् अपनी हानि करता है। जैन धर्म में मांस-मदिरा के त्याग को श्रावक एवं साधु बनने के लिए प्राथमिक आवश्यकता माना गया है। सप्त कुव्यसनो एवं पन्द्रह कर्मादानों में भी इन्हें त्याज्य निरूपित किया गया है।

परिग्रह-परिमाण का सीधा कथन बौद्ध धर्म में भले ही न हुआ हो, किन्तु इच्छा-परिमाण एवं तृष्णा-क्षय की प्रेरणा अवश्य प्राप्त होती है। सुत्तनिपात (अट्ठकवगो, गाथा 4-5) में कहा गया है-

खेत्तं वत्थुं हिरञ्जं वा, गवस्सं दासपोरिसं।  
थियो बन्धु पुथु कामे, यो नरो अनुगिञ्जति॥  
अबला नं बलीयन्ति, महन्तेनं परिरस्सया।  
ततो नं दुक्खमन्वेति, नावं भिन्नमिवोदकं॥

(जो मनुष्य खेत, वास्तु, स्वर्ण, गौ, अश्व, दास, स्त्री, बन्धु-बान्धव आदि की कामना करता है तथा इनमें गृद्ध होता है, उस दुर्बल को वासनाएँ दबा लेती हैं, बाधाएँ उसका मर्दन करती हैं। तब वह जल में टूटी नौका के समान दुःख ही प्राप्त करता है।)

जैनदर्शन में इच्छा-परिमाण को श्रावक के व्रतों में भी स्थान दिया गया है तथा आगमों में अनेकशः प्रेरणा की गई है। आचारांगसूत्र में कहा गया है- 'आसं च छन्दं च विगिंच धीरे।' हे धीर पुरुष! तुम आशा एवं इच्छा का त्याग कर दो। उत्तराध्ययन सूत्र में कहा है-

छंदनिरोहेण उवेइ मोक्खं। (उत्तरा. 4.8) इच्छा के निरोध से मोक्ष प्राप्त होता है। कामे पत्थेमाणा अकामा जंति दुगाइं (उत्तरा. 9.53) काम-भोगों की याचना करते हुए व्यक्ति, कामना पूरी हुए बिना दुर्गति में चले जाते हैं।

जैन एवं बौद्ध दोनों धर्मों में ज्ञानपूर्वक आचरण पर बल दिया गया है। जैनदर्शन में सम्यग्दृष्टि एवं सम्यग्ज्ञानपूर्वक सम्यक् आचरण (चारित्र) को मोक्ष का उपाय बताया गया है तो बौद्धधर्म में भी अष्टांगिक मार्ग के अन्तर्गत सम्यग्दृष्टि एवं सम्यक् संकल्प (ज्ञान) के साथ सम्यक् वाचा, सम्यक् कर्मान्त, सम्यक् आजीव, सम्यक् व्यायाम, सम्यक् स्मृति एवं सम्यक् समाधि का कथन हुआ है। इनमें सम्यक् दृष्टि एवं सम्यक् संकल्प को प्रज्ञा कहा गया है। सम्यक् वाचा, सम्यक् कर्मान्त, सम्यक् आजीव एवं सम्यक् व्यायाम (सतत प्रयत्नशीलता) सम्यक् आचरण या शील के अंग हैं। सम्यक् स्मृति एवं सम्यक् समाधि को समाधि के अन्तर्गत लिया गया है।

पाप त्याज्य है, इसका निरूपण दोनों धर्मों में हुआ है। बौद्ध ग्रन्थ धम्मपद (गाथा 183) में कहा गया है—सव्वपापस्स अकरणं, कुसलस्स उपसम्पदा। सचित्तपरियोद्वपनं, एतं बुद्धानं सासनं॥ (सभी पाप कार्य अकरणीय हैं, कुशल कर्म उपादेय हैं तथा अपने चित्त की शुद्धि आचरणीय है, यही बुद्धों की शिक्षा है।) धम्मपद (गाथा 314) में कहा गया है कि दुष्कृत (पाप) नहीं करना ही श्रेयस्कर है, क्योंकि दुष्कृत करने के पश्चात् ताप होता है। सुकृत करना ही श्रेयस्कर है, जिसे करके कोई अनुताप नहीं करना पड़ता। मन, वचन एवं काया से कर्म किया जाता है। कुशल अथवा शुभ कर्म आचरणीय होते हैं तथा अकुशल, पाप या अशुभ कर्म अकरणीय होते हैं। धम्मपद में कहा गया है कि बुरे कर्म जो आत्म-अहितकारी होते हैं, वे करने में सरल होते हैं, किन्तु हितकर एवं अच्छे कर्म करने में परम दुष्कर लगते हैं।

कर्मसिद्धान्त को जैनदर्शन की भाँति बौद्धदर्शन में भी स्थान मिला है, किन्तु जैनदर्शन में कर्मसिद्धान्त का जितना व्यापक एवं व्यवस्थित विवेचन हुआ है, उतना बौद्धदर्शन में प्राप्त नहीं होता है। यह भी कहना उचित होगा कि अन्य सभी भारतीय दर्शनों की अपेक्षा जैनदर्शन में कर्मसिद्धान्त का गूढ एवं विस्तृत विवेचन हुआ है। षट्खण्डागम, प्रज्ञापनासूत्र, भगवतीसूत्र, कसायपाहुड, गोम्मटसार कर्मकाण्ड एवं विभिन्न कर्म ग्रन्थों, पंचसंग्रहों में ज्ञानावरणादि आठ कर्मों के बन्ध, उदय, उदीरणा, सत्ता आदि का एवं अन्य कई विषयों का विवेचन प्राप्त होता है। कर्म का फल कर्ता को प्राप्त होता है, इत्यादि सामान्य नियम बौद्ध आदि दर्शनों में प्राप्त होते हैं, किन्तु आठ कर्मों एवं उनकी उत्तर प्रकृतियों का विवरण जैनदर्शन के अतिरिक्त कहीं नहीं हुआ है। बौद्धदर्शन में कर्म को जैनदर्शन की भाँति

पौद्गलिक या अचेतन नहीं माना गया है।

मनोविज्ञान की दृष्टि से विचार किया जाए तो बौद्ध दर्शन में जैनदर्शन की अपेक्षा चित्त की दशा का अधिक सूक्ष्म विवेचन हुआ है। वहाँ चित्त के तीन प्रकार प्रतिपादित हैं- 1. कुशल चित्त, 2. अकुशल चित्त, 3. उपेक्षा चित्त अथवा अव्याकृत चित्त। मोह, निर्लज्जता, चंचलता, लोभ, मान, द्वेष, ईर्ष्या आदि से युक्त चित्त अकुशल होता है। श्रद्धा, स्मृति, पाप भीरुता, अलोभ, अद्वेष आदि धर्मों से युक्त चित्त कुशल होता है। रूप-धर्म, चित्त-विप्रयुक्त धर्म एवं असंस्कृत धर्मों से युक्त चित्त अव्याकृत कहलाता है। चित्त की अवस्था या प्रवृत्ति के आधार पर उसके कामावचर, रूपावचर, अरूपावचर एवं लोकोत्तर भेद किए गए हैं। कामनाओं अथवा वासनाओं से युक्त चित्त को कामावचर चित्त, बाह्य स्थूल विषयों पर योगाभ्यासी चित्त को रूपावचर चित्त, अत्यन्त सूक्ष्म विषयों यथा अनन्त आकाश, अनन्त विज्ञान आदि में लगे चित्त को अरूपावचर चित्त तथा वासना, संस्कार, राग-द्वेष आदि के प्रहाण से युक्त चित्त को लोकोत्तर चित्त कहा गया है। चित्त शब्द यहाँ चेतना का द्योतक है, मन का नहीं। क्षणिकवादी बौद्धदर्शन में चेतना चित्तसन्तान के रूप में प्रवाहित होती रहती है। चित्त की अवस्था विशेष को ही चैत या चैतसिक कहा जाता है। स्थविरवाद के अनुसार 52 प्रकार के चैत या चैतसिक होते हैं। इनके स्पर्श, वेदना, संज्ञा, मोह, लोभ, अकर्मण्यता, श्रद्धा, स्मृति, अलोभ, अद्वेष आदि अनेक भेद प्रतिपादित हैं। लोभ, मोह और द्वेष से युक्त चित्त किस प्रकार अनेक दोषों को उत्पन्न करता है तथा उसकी विभिन्न अवस्थाएँ किस प्रकार परिवर्तित होती रहती हैं, इसका विवेचन बौद्ध ग्रन्थों में विस्तार से प्राप्त होता है।

गुणस्थान सिद्धान्त, लेश्या सिद्धान्त आदि जैनदर्शन के विशिष्ट सिद्धान्त हैं, जो उसे बौद्धदर्शन से पृथक् प्रतिपादित करते हैं। बन्धन और मुक्ति की प्रक्रिया में आस्रव, संवर आदि पारिभाषिक शब्द जिस प्रकार जैनदर्शन में प्रयुक्त हुए हैं। उसी प्रकार बौद्धदर्शन में भी प्रयुक्त हुए हैं। जैनदर्शन में पूर्वबद्ध कर्म की निर्जरा के लिए तप का विधान है। इसमें बाह्य एवं आभ्यन्तर तप का प्रतिपादन करते हुए बाह्य तप के अनशन, ऊनोदरी, भिक्षाचर्या, रसपरित्याग, कायक्लेश एवं प्रतिसंलीनता- ये छः भेद तथा आभ्यन्तर तप के प्रायश्चित्त, विनय, वैयावृत्त्य, स्वाध्याय, ध्यान एवं कायोत्सर्ग- ये 6 भेद प्रतिपादित हुए हैं। ये दोनों प्रकार के तप आत्मसंयम के साथ संवर एवं निर्जरा का पथ प्रशस्त करते हैं। तप के द्वारा पूर्वबद्ध कर्मों का फल, भोग, काल एवं फलानुभव में कमी आती है तथा कर्मों की उदीरणा होकर उनकी शीघ्र निर्जरा हो जाती है। बौद्ध दर्शन में बाह्य तप को काय-क्लेश मानकर उस पर कम बल दिया गया है। जैनदर्शन में ज्ञानपूर्वक तप करने को विशेष महत्त्व दिया गया है तथा उसे ही निर्जरा का साधन स्वीकार किया गया है।

अहिंसा का प्रतिपादन यद्यपि जैन एवं बौद्ध धर्म दोनों में प्राप्त होता है तथापि जैनधर्म में उसकी विशेष सूक्ष्मता दृष्टिगोचर होती है। जैनदर्शन में पृथ्वीकायिक, अप्कायिक, तेजस्कायिक, वायुकायिक, वनस्पतिकायिक जीवों की जो संकल्पना है वह बौद्धदर्शन में कहीं दिखाई नहीं पड़ती।

बौद्धदर्शन में मैत्री, करुणा, मुदिता और उपेक्षा नाम से चार ब्रह्मविहारों का निरूपण हुआ है, जिनका जैनदर्शन में निरूपित मैत्री, प्रमोद, कारुण्य और माध्यस्थ भावनाओं के साथ साम्य दिखाई देता है। जैनदर्शन में मतिज्ञान आदि पाँच ज्ञानों की जो अवधारणा एवं उसके पंचविध भेद बौद्धदर्शन में दृष्टिगत नहीं होते। जैनदर्शन में ज्ञानमीमांसा की दृष्टि से दर्शन को निर्विकल्पक एवं ज्ञान को सविकल्पक प्रतिपादित किया गया है, जबकि बौद्धदर्शन में ज्ञान के ही निर्विकल्पक एवं सविकल्पक भेद स्वीकार किए गए हैं।

बौद्ध भिक्षुओं की प्रचारात्मक दृष्टि के कारण बौद्ध धर्म आज एशिया के चीन, तिब्बत, कोरिया, जापान, श्रीलंका, भूटान, बर्मा आदि विभिन्न देशों में व्याप्त है तथा अरबों की संख्या में इसके अनुयायी हैं। यूरोप एवं अमेरिकी देशों में भी यह धर्म निरन्तर प्रसार पा रहा है। जैनधर्म भारतीय धरा पर ही सुरक्षित रहा। यहाँ पूर्व से उत्तर, पश्चिम, एवं दक्षिण तक पहुँचा, किन्तु विदेशों में अपने अधिक अनुयायी न बना सका। इसके अनेक कारण रहे, जिनमें एक कारण यह सम्भव है कि जैन दर्शन में श्रमण-श्रमणियों की आचार संहिता अत्यन्त कठोर है, जो वाहनों द्वारा उन्हें विदेशी यात्रा के लिए अनुमति प्रदान नहीं करती। दूसरी बात यह है कि जैन धर्म अपनी उदार एवं अनेकान्तवादी दृष्टि के कारण वैदिक परम्पराओं के साथ समन्वय बिठाने में सक्षम रहा, अतः उसके समक्ष ऐसी कोई विवशता नहीं रही कि उसे यहाँ से पलायन करना पड़े। बौद्ध भिक्षुओं को भारत से पलायन करना पड़ा, उसमें एक कारण हिन्दु परम्परा का प्रतिरोध एवं मुस्लिम आक्रान्ताओं के द्वारा कृत विनाश भी रहा।

यह उल्लेखनीय है कि बुद्ध-वाणी मूल रूप से जितनी सुरक्षित रही है उतनी प्रभु महावीर की वाणी सुरक्षित नहीं रह सकी। बुद्ध-वाणी के संरक्षण हेतु बुद्ध-निर्वाण के चार माह में ही प्रथम संगीति हो गई थी, जबकि महावीर के निर्वाण के 160 वर्ष पश्चात् प्रथम वाचना हुई। जैनदर्शन में ज्ञानपूर्वक आचरण की कठोरता पर बल प्रदान किये जाने के कारण जैन साधु-साध्वी आज भी आचार-पालन की दृष्टि से अन्य धर्मों के साधु-साध्वियों की अपेक्षा अग्रणी हैं। बौद्ध दर्शन की महायान परम्परा में करुणा का विशेष प्रतिपादन हुआ है। वहाँ स्वीकार किया गया है कि बोधिसत्त्व में इतना करुणा भाव होता है कि वह संसार के समस्त प्राणियों को दुःख मुक्त करने के पश्चात् ही स्वयं मुक्त होना चाहता है। जैनदर्शन में करुणा तो है किन्तु मुक्ति को टालना उपयुक्त नहीं माना गया।

(शेषांश पृष्ठ संख्या 35 पर)

## आगम-वाणी

चउव्विहा मई पण्णत्ता, तं जहा- अरंजरोदकसमाणा, वियरोदक-समाणा, सरोदकसमाणा, सागरोदकसमाणा।

-स्थानांग सूत्र, चतुर्थ स्थान, चतुर्थ उद्देशक, मति सूत्र-607

अर्थ- मति चार प्रकार की कही गई है, जैसे- 1. अरंजरोदकसमाना-अरंजर (घट) के पानी के समान अल्प बुद्धि। 2. विदरोदकसमाना- विदर (गड्ढा) के पानी के समान अधिक बुद्धि। 3. सर-उदकसमाना- सरोवर के पानी के समान बहुत अधिक बुद्धि। 4. सागरोदकसमाना- समुद्र के पानी के समान असीम विस्तीर्ण बुद्धि।

विवेचन- जैन आगम नन्दीसूत्र, स्थानांगसूत्र, भगवतीसूत्र आदि में पाँच ज्ञानों की चर्चा प्राप्त होती है। पाँच ज्ञान हैं- मतिज्ञान (आभिनिबोधिक ज्ञान), श्रुतज्ञान, अवधिज्ञान, मनःपर्यायज्ञान एवं केवलज्ञान। इन्द्रिय, मन अथवा दोनों की सहायता से होने वाले ज्ञान को मतिज्ञान अथवा आभिनिबोधिक ज्ञान कहा जाता है। स्मृति, प्रत्यभिज्ञान, तर्क एवं अनुमान का भी समावेश मतिज्ञान में ही होता है। पूर्वजन्म के स्मरण स्वरूप जातिस्मरण ज्ञान भी मतिज्ञान का ही एक प्रकार है। बुद्धिज्ञान को भी मतिज्ञान में अन्तर्निविष्ट किया जाता है। नन्दीसूत्र एवं स्थानांगसूत्र में चार प्रकार की बुद्धियों का उल्लेख हुआ है- 1. उप्पत्तिया (औत्पत्तिकी), 2. वेणइया (वैनयिकी), 3. कम्मिया (कार्मिकी) एवं 4. पारिणामिया (पारिणामिकी)। पहले अदृष्ट अश्रुत और अज्ञात तत्त्व को तत्काल जानने में सक्षम प्रत्युत्पन्न मति को औत्पत्तिकी बुद्धि कहा जाता है। दूसरों के द्वारा सिखाने से जब बुद्धि कार्य करती है तो उसे वैनयिकी बुद्धि तथा कार्य करते-करते क्रियाशील होने वाली बुद्धि कार्मिकी अथवा कर्मजा बुद्धि कहलाती है। कार्य के परिणाम को जानकर अथवा उग्र ढलने के साथ जो बुद्धि कार्य करती है, वह पारिणामिकी बुद्धि है।

स्थानांगसूत्र के प्रस्तुत प्रकरण में बुद्धि के चार प्रकार भिन्न तरह से कहे गए हैं, जिनसे बुद्धि की संकीर्णता एवं विशालता का बोध होता है। बुद्धि की इस तरतमता को समझाने के लिए घट (अरंजर), गड्ढा (विदर), सर एवं सागर के जल का उदाहरण दिया गया है। घट में थोड़ा ही जल जाता है एवं वह सीमित होता है, उसी प्रकार जो बुद्धि अल्प एवं सीमित होती है उसे घट के जल के समान कहा गया है। उपयोग तो उस बुद्धि का भी होता है, किन्तु सीमित रूप में होता है। उससे व्यापक बुद्धि को गड्ढे में रहे जल की उपमा दी गई है। इस

बुद्धि में थोड़ा खुलापन होता है, तथापि वह भी अपेक्षाकृत संकीर्ण एवं मलिन ही होती है। इससे अधिक विकसित बुद्धि को सरोवर के उदक की उपमा दी गई है, जिसमें बुद्धि की विशालता बढ़ जाती है। बुद्धि के चौथे प्रकार को सागर के जल के समान बताने का अभिप्राय है कि यह बुद्धि का अत्यन्त विशाल रूप होता है। बुद्धि की अत्यन्त व्यापकता को बताने के लिए यह उपमा दी गई है।

संसार में हम मनुष्यों पर दृष्टिपात करें तो उनमें भी बुद्धि की तरतमता दिखाई देती है। किसी को कोई बात शीघ्र समझ में आती है तथा सभी क्षेत्रों में उनकी बुद्धि त्वरित कार्य करती है। सत्-असत् के भेद का भी बोध उसे शीघ्र समझ में आ जाता है। वहीं ऐसे भी मनुष्य हैं जो मन्दबुद्धि हैं। साधारण से कार्य भी उनके लिए कठिन प्रतीत होते हैं। जगत् के सभी जीवों के आधार पर विचार किया जाए तो बुद्धि की न्यूनाधिकता के शताधिक स्तर हो सकते हैं, किन्तु यहाँ पर स्थूल रूप से चार प्रकार निरूपित किए गए हैं।

बुद्धि के मूलतः दो प्रकार हैं- लब्धि एवं उपयोग। मति ज्ञानावरण कर्म के क्षयोपशम से जो बुद्धि प्राप्त होती है उसे 'लब्धि' तथा उस बुद्धि को प्रयोग में लेना 'उपयोग' है। लब्धि के अनुरूप ही उपयोग हो सकता है। जिसे बुद्धि कम ही मिली है, वह उसका सही दिशा में अधिकाधिक उपयोग कर उसका सदुपयोग कर सकता है। बुद्धि का दुरुपयोग करने वाला का पतन निश्चित है। इसलिए बुद्धि कितनी भी कम या अधिक प्राप्त हुई हो, उसका सदुपयोग करना ही अर्थ रखता है। स्वाध्याय से, समता में रहने से एवं उसका सदुपयोग करने से वह निरन्तर वृद्धि को प्राप्त होती है।- सम्पादक

### आगामी पर्व तिथि

पौष शुक्ला 8, रविवार	17.01.2016	अष्टमी
पौष शुक्ला 14, शुक्रवार	22.01.2016	चतुर्दशी, आचार्य श्री हस्तीमलजी म. सा. का 106 वां जन्मदिवस
पौष शुक्ला 15, शनिवार	23.01.2016	पक्खी
माघ कृष्णा 4, गुरुवार	28.01.2016	उपाध्यायप्रवर का 82 वां जन्मदिवस
माघ कृष्णा 8, सोमवार	01.02.2016	अष्टमी
माघ कृष्णा 14, रविवार	07.02.2016	चतुर्दशी, पक्खी
माघ शुक्ला 2, बुधवार	10.02.2016	आचार्य श्री हस्तीमलजी म.सा. का 96 वां दीक्षा दिवस
माघ शुक्ला 8, सोमवार	15.02.2016	अष्टमी
माघ शुक्ला 15, सोमवार	22.02.2016	चतुर्दशी, पक्खी

## दान

आचार्यप्रवर श्री हस्तीमल जी म.सा.

- यह परिग्रह जाने वाला है, आज नहीं तो कल स्वतः सुनिश्चित रूप से जाएगा। स्वयं जाय इससे पहले ही इसको छोड़ दें तो इसमें बलिहारी है। लेकिन आप कहोगे कि स्वयं जाय उसकी परवाह नहीं, हम आगे होकर इसको कैसे छोड़ें? पर यह तो समझो कि आप जो अन्न खाते हो, क्या उसका विसर्जन नहीं करते? क्या इसके लिए आपसे किसी को कहने की जरूरत पड़ती है? यह सुनिश्चित है कि जिस प्रकार अन्न ग्रहण किया जाता है उसी प्रकार समय पर शरीर के मल का विसर्जन भी होना चाहिए। यदि मल विसर्जन नहीं होगा तो हमारी तन्दुरुस्ती को खतरा है। यदि जमा रह गया तो डॉक्टर को दवा देकर या एनिमा लगाकर निकालना होगा। इसी प्रकार जिस दिन ज्ञान हो जाए कि परिग्रह-पुद्गल छोड़ने योग्य हैं, जिस तरह से हम उनका संग्रह करते हैं, उसी प्रकार उनका निष्कासन या विसर्जन भी होना चाहिए। विसर्जन की नाड़ी भी साफ रहनी चाहिए। यदि विसर्जन की नाड़ी बिगड़ गयी तो स्वास्थ्य बिगड़ जाएगा। यह ज्ञान हो गया तो आप स्वयं विसर्जन के लिए तैयार हो जाओगे।
- धन पर ममता की पकड़, ममता की गांठ ढीली होगी, तभी दान की भावना जगेगी, दान दिया जा सकेगा।
- आप हजारों रुपयों का दान करते हैं। गरीबों के पास कुछ ज्यादा चला गया तो क्या बुरा है, लेकिन आपको यह बात बर्दाश्त नहीं होती। आप चाहेंगे कि उसको आठ आने कम दिये जायें। यह भी एक तरह का पाप है और इसलिए लगता है कि आपमें परिग्रह बुद्धि है, पैसे पर ममता है।
- यदि तुझे किसी को दान देना है तो जो दरिद्र है, तेरे से कमजोर है, गरीब है, साधनहीन है, उसको दे। जो पहले से ही साधन-सम्पन्न है, जिसके पैसे का हिसाब तैयार करने के लिये चार आदमी बैठते हैं उसको देने से क्या लाभ?
- दान की यह विशेषता है कि वह स्व और पर दोनों का कल्याण करता है। दान देने की प्रवृत्ति तभी जागृत होगी जब मानव के मन में अपने स्वत्व की, अपने अधिकार की वस्तु पर से ममता हटेगी। ममत्व हटने पर जब उसके अन्तर में सामने वाले के प्रति प्रमोद बढ़ेगा, प्रीति बढ़ेगी और उसे विश्वास होगा कि इस कार्य में मेरी सम्पदा का उपयोग करना लाभकारी है, कल्याणकारी है, तभी वह अपनी सम्पदा का दान कर सकेगा।

प्रेरक-संदेश

## आचार्यप्रवर श्री हीरा का संदेश : नूतन वर्ष, नव हर्ष : कार्यकर्ता बनो सहर्ष

पूज्य आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा. के आचार्य पदारोहण का यह रजतवर्ष चल रहा है। हमारे निवेदन पर उन्होंने नूतन वर्ष के आगमन पर कार्यकर्ताओं को एक विशेष संदेश के बारे में जो भाव अभिव्यक्त किए हैं, उन्हें यहाँ प्रस्तुत किया जा रहा है। -सम्पादक

ज्येष्ठ कृष्णा पंचमी 2 जून सन् 1991 को मेरे जीवन निर्माता, भाग्य विधाता (आचार्य हस्ती) के संदर्भ (मैंने) में इन भावों की अभिव्यक्ति की थी- “जैसे सामान्य लकड़ियों में चन्दन, पत्थरों में रत्न थोड़े ही होते हैं, ऐसे ही युग निर्माता, महान् कर्मयोगी मेरे गुरुदेव थे। कौनसा ऐसा सत्कर्म है, जो उन्होंने नहीं किया? कौनसा ऐसा भक्त है, जिसकी झोली उन्होंने त्याग व नियम से नहीं भरी? कौनसा ऐसा कीर्तिमान है, जो उन्होंने कायम नहीं किया?” आचार्य भगवन्त (श्री हस्ती) अकेले कृतित्व कर सब कुछ कर गये। व्यक्ति की पहचान नाम से नहीं, अपितु काम से होती है। सामायिक-स्वाध्याय प्रवृत्ति का नाम आते ही, गुरुदेव का नाम जुड़ा होने से सहज ही स्मृति में आ ही जाता है। महिमा उन्हीं की गाई जाती है, जो कुछ करके जाते हैं।

हर व्यक्ति यदि देखा जाये तो व्यक्तिगत रूप से कुछ न कुछ करता रहता है। लेकिन संघ सेवा जो अमृत सागर है, उसके लिए कितना कर रहा है? स्थानांग सूत्र के तृतीय स्थान में प्रभु महावीर ने मानव को जगाते हुए कहा है- ‘मणसुप्पणिहाणे वयसुप्पणिहाणे, कायसुप्पणिहाणे’ हर मनुष्य के पास मन-वचन-काया के सुप्रणिधान की तीन निधियाँ हैं। यदि देश एवं संघ-समाज की उन्नति में उसके मस्तिष्क का पाण्डित्य नहीं लगा, तो वह प्राप्त निधियों का उपयोग, उस चतुर कृषक के समान नहीं करता है, जो जल को नाली में न डालकर बाड़ी में बहाता है। मेरा सम्बोधन संघ के उन कार्यकर्ताओं को है जिन्हें भूमि, जायदाद की जितनी सोच है, उतनी ही सोच संघ द्वारा संचालित प्रवृत्तियों के संदर्भ में है या नहीं। और यदि है तो उसमें वर्ष दर वर्ष कितना वर्धापन किया है? जितनी आय, सम्पत्ति बढ़ी, उस अनुपात से संघ-सेवा में कार्य सम्पादन व सहकार का भी आकलन कीजिये। परिवार की तरह, संघ सेवा में हित-अहित, कर्तव्य-अकर्तव्य, धर्म-अधर्म, उचित-अनुचित का बोध दायित्व हर कार्यकर्ता को हो।

कार्य को जो कर्तव्य समझे, वही सच्चे मायने में कार्यकर्ता है। जिस संस्था में

जीवनदानी कार्यकर्ता है, वही संस्था जीवित रह सकती है। कार्यकर्तागण आत्म-अवस्थित रहते हुए सुव्यवस्थित कार्य करें। संघ वक्ताओं से नहीं, कार्यकर्ताओं से चलता है। कर्मठ कार्यकर्ताओं से चलता है। कर्मठ कार्यकर्ता यानी कर्म+आठ= आठ कर्मों को काटने की भावना से उद्यत रहे, वही कर्मठ कार्यकर्ता है। अच्छे कार्यकर्ताओं का सोच सकारात्मक, कार्य सृजनात्मक, व्यवहार समन्वयात्मक होता है। हर कार्य क्रमबद्धता से सजगता रखते हुए समय पर करे। त्रुटि होने पर छिपाने की भावना न रखे, वरन् पश्चात्ताप कर सुधार के प्रयास करे। कार्यकर्ता दीमक नहीं, दीपक सदृश हो। दीमक जहाँ भी लगती है, वस्तु को भीतर से खोखला कर विनष्ट कर देती है, जबकि दीपक अंधेरे से संघर्ष करता है और अपना उजाला फैलाता है। जैसे ही कार्यकर्ता संगठन को आलोक प्रदान करता है। कार्यकर्ता चालाक नहीं, चतुर हो। कार्यकर्ता प्रभु का बंदा हो, भक्तों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर चलने वाला हो। व्यक्ति-व्यक्ति को जागृत करने का काम कार्यकर्ता का है। व्यक्तियों के जुड़ाव में ही संघ की उन्नति है। धर्मशासन की तेजस्विता मिली-जुली शक्ति से ही संभव है।

कार्यकर्ता कार्य करना चाहता है। कार्य करने में उसे उत्साह व अनुभव भी है। पर कभी-कभी परस्पर में समन्वय का रूप नहीं बिठा पाता। यहाँ मोफतराज मुणोत द्वारा कहे गये शब्द सटीक लगते हैं- “अपनी उन्नति किसी की अवनति पर, अपने सुख किसी के दुःख पर, अपनी प्रशंसा किसी की निंदा के आधार पर न हो।” ऐसी अभीष्ट सोच हर कार्यकर्ता की हो। विनयशील कार्यकर्ता कुछ नहीं देकर भी प्रेम और विश्वास अर्जित कर लेता है। कार्यकर्ता में पहला सद्गुण समर्पण का हो। दूसरा सद्गुण समन्वय का हो। तीसरा सद्गुण सम्यग्दृष्टिकोण का हो। जिससे कार्य को भली भाँति समझकर, कार्य के पीछे रहे परिणाम से आश्वस्तता की ही प्रतीति हो। चौथा सद्गुण सक्षमता का हो। पाँचवाँ सद्गुण सहनशीलता का हो, क्योंकि आलोचना, प्रत्यालोचना, समालोचना करने वालों की कमी नहीं है। कार्यकर्ता किसी काम को छोटा नहीं समझे और अपने आपको कभी भी बड़ा मानकर नहीं चले। सेवा का कार्य सेवक बनकर करेंगे तो उसका विशेष प्रभाव होता है।

धर्मसंघ रत्नों-गुणों का समूह होता है। आप इस धर्म संघ के सम्मानित सदस्य-कार्यकर्ता या पदाधिकारी हैं। ज्ञान का गुण, श्रद्धा का गुण, अनुकम्पा के भाव बढ़ायें। अमेरिका के राष्ट्रपति अब्राहम लिंकन ने कीचड़ में फँसे सुअर को निकलने के प्रयास में असफलता देखकर कार रुकवाई। ड्राइवर से भी नहीं कहा- सूट पहने हुए थे, गंदे होने की संभावना थी, फिर भी अकेले ने सुअर को गंदगी से निकाल अनुकम्पा भाव- प्राणिमात्र के प्रति कर्तव्य भावना का परिचय दिया। ऐसी ही दृष्टि हर कार्यकर्ता व पदाधिकारी की हो। संसार में साधन सम्पन्न, धनीमानी युवक या कार्यकर्ता धर्म-मार्ग की ओर अग्रसर होंगे तो

अन्य बहुतों को भी प्रेरणा मिलेगी। वासुदेव श्री कृष्ण ने सोचा कि मैं धर्मकर्ता तो नहीं बन सकता, लेकिन धर्म-मार्ग में आगे बढ़ने की प्रेरणा तो कर सकता हूँ और द्वारिका नगरी में दूतों के माध्यम से ऐसी घोषणा भी करवाई कि जो प्रव्रज्या ग्रहण करना चाहते हैं, जिनके पीछे कोई नहीं है, उनके परिवार की सार संभाल का दायित्व मेरा होगा। इस तरह श्री कृष्ण ने दलाली कर, सहायक-प्रेरक-अनुमोदक बन एकान्त पुण्य का खजाना इकट्ठा कर लिया, तीर्थकर पद के अधिकारी बन गये। राजा कोणिक भी श्रमण भगवान महावीर स्वामी के विचरण विहार की नित्य पृच्छा कर आत्मतोष का अनुभव करते। महानुभावों! आप में से भी सारसंभाल करने वाले सेवाभावियों की कमी नहीं है। विदेशी प्रचारकों, राष्ट्रीय स्तर पर कार्यकर्ताओं को देखते हैं, तब विचार आता है कि अनार्य कहे जाने वाले लोग देश-धर्म व समाज के लिये घरबार का मोह तजकर जीवन अर्पण कर देते हैं। फिर क्या कारण है कि वीतराग संस्कृति में वैसे कार्यकर्ता स्वेच्छा से आगे नहीं आते। जीवनदानी, समयदानी कार्यकर्ता आएँ एवं कार्य कर कृतकृत्य हो जाएँ।

साधु-साध्वी, श्रावक-श्राविकारूप चतुर्विध संघ से धर्मरथ आगे बढ़ता है। साधु-साध्वी निवृत्तियुक्त प्रवृत्ति करते हैं तो श्रावक-श्राविका निवृत्ति के लक्ष्य से धर्म के प्रचार में प्रवृत्त होते हैं। श्रावक का कर्तव्य है कि वह साधु की संयम-साधना में सहायक बने। कार्यकर्ता के सम्पर्क में सैकड़ों श्रावक आते हैं। वह उन श्रावकों को प्रशिक्षित करे या सीख दे कि राग के वशीभूत होकर कोई भी गलत कार्य नहीं करे। कोई भी ऐसी वस्तु देने का प्रयास नहीं करे, जिससे साधु का संयम खतरे में पड़ता हो। जो संघ में भक्ति रखता है और शासन की उन्नति में योगदान करता है तथा 'वीरियं पुण दुल्लहं' - अपने तन की तरह संघ के दायित्वों के निर्वहन में पुरुषार्थ करता है, वही प्रभावक कार्यकर्ता है। इस शृंखला में सरदार चन्दजी भण्डारी, देवराजजी भण्डारी-जोधपुर, सरदारमल जी साण्ड-अजमेर, भंवरलाल जी बाघमार-चेन्नई, अजितराजजी बीराणी, भंवरलालजी बोथरा, चुन्नीलाल जी ललवाणी-जयपुर, प्यारचंदजी रांका-सैलाना, गणेशमलजी भण्डारी-बैंगलोर, गोविन्द प्रसादजी जैन-चौथ का बरवाड़ा, गिरधारीलालजी जैन-चकेरी एवं सरदारबाई मुणोत-अजमेर जो शेर कार्यकर्ता के नाम से जानी जाती हैं, ऐसे कई प्रभावक कार्यकर्ताओं का प्रचार-प्रसार, सेवा-संभाल के क्षेत्र में वर्चस्व रहा है। शासन प्रभावना के कार्य करने के अनेक रास्ते हैं, व्यर्थ ही द्रव्य लुटाकर, थोथा आडम्बर दिखाना बुद्धिमत्ता नहीं है। "आचर्यते इति आचारः" मर्यादा पूर्वक चलना ही आचार है, इसे हृदयगम कर कार्यकर्ता व्यवहार पालन में नवनीत सा कोमल एवं कर्तव्य पालन में वज्रवत् कठोर हो।

यों तो समाज में हजारों कार्यकर्ता हैं और भविष्य में होते रहेंगे, पर संस्था व समाज को

अपना समझकर घरेलू हानि-लाभ की तरह विचार कर, अदम्य साहस व पूर्ण प्रामाणिकता, 'व्यसनं विपत्तिः' के हार्द को समझते हुए लगनपूर्वक कार्य करने वाले कार्यकर्त्ताओं की महती आवश्यकता है। जैसे-विनीत शिष्य व जातिमान वृषभ एक बार रास्ते लगने के बाद बिना प्रेरित किये सर्वत्र चलते रहते हैं, ऐसे ही कार्यकर्त्ता भी क्षेत्र की सीमा से बंधकर ही नहीं रहे, अपितु राष्ट्रीय स्तर पर अपनी पहचान स्थापित करे। कार्यकर्त्ता को प्रसंगवश यदि अपशब्द सुनने को मिलें तो प्रत्युत्तर में निरुत्तर रहना ही बोलने वाले को शांत करने की सर्वोत्तम कला है। काँटे का जवाब फूल से देना सज्जनाचार है। उत्तेजना के समय किये जाने वाले कार्य में विलम्ब करना अच्छा है, किन्तु संघ को उन्नत बनाने वाले कामों में प्रमाद नहीं करना ही श्रेयस्कर है। कार्यकर्त्ता अर्थनीति में जितना समय देता है, यदि उसका आंशिक समय संघ सेवा में लगाये तो भविष्य समुज्ज्वल ही है। जहाँ कार्यकर्त्ता सक्रिय होते हैं, वहाँ पदाधिकारी स्वतः बनने की चाह रखते हैं। जहाँ का कार्यकर्त्ता कुशल होता है, वहाँ भामाशाहों के हाथ उदारता से बढ़ जाते हैं। संयोग से आपको श्रीकृष्ण की तरह प्रेरक बनने का निमित्त मिला है। तरुण पीढ़ी इस पर गहराई से विचारकर संघ सेवा में कदम बढ़ाकर सुयोग्य कार्यकर्त्ताओं की रिक्तता की पूर्ति करेगी, यही शुभेच्छा एवं मंगल मनीषा है।- जगदीश जैन

## जिनवाणी का सच्चा उपासक सदैव....

श्री नितेश जागोता जैन

1. स्वयं के जीवन को सहज-सरल आदर्श बनाता है।
2. अपनी कथनी-करनी में सदैव एकरूपता रखता है।
3. निंदा-ईर्ष्या, द्वेषदृष्टि से परहेज करता है। सदैव गुणदृष्टि रखता है।
4. सादगी-सहजता-आत्मीयता से परिपूर्ण रहता है।
5. साधनों की होड़ा-होड़ से दूर सदैव साधनारत रहता है।
6. जीवन की प्रत्येक परिस्थिति में सजग व सावधान रहता है।
7. अन्दर-बाहर से एकरूप रहता है।
8. अच्छे श्रोता के साथ अच्छा कार्यकर्त्ता एवं सच्चा अनुसरणकर्त्ता होता है।
9. सम्यक् ज्ञान-दर्शन-चारित्र-तप को समर्पित रहता है।
10. स्वयं धर्म में दृढ़ रहकर औरों को धर्म-मार्ग में दृढ़ बनाता है।
11. अपने सुकृत्यों से जीवन को सफल एवं सार्थक बनाता है।
12. दिशाबद्ध सम्यक् पुरुषार्थ से निज जीवन को धन्य-धन्य बनाता है।

-कर सलाहकार, जैन बोर्डिंग एरिया, भवानीमंडी-326502 (राज.)

## सहिष्णुता से बनाएँ सुन्दर भविष्य

तत्त्वचिन्तक श्री प्रमोदमुनिजी म.सा.

तत्त्वचिन्तक श्रद्धेय श्री प्रमोदमुनिजी म.सा. द्वारा महावीर भवन, अलवर में 08 नवम्बर, 2015 को फरमाए गए इस प्रवचनांश का संकलन-सम्पादन श्री ओमप्रकाशजी गुप्ता, राजस्थान टाइम्स, अलवर द्वारा किया गया है।-सम्पादक

‘पृथ्वी को माँ क्यों कहा जाता है, कभी चिन्तन किया? चूँकि संसार में माँ से बड़ा कोई सहनशील व उपकारी नहीं होता, इसीलिए धरती को माता कहकर उसका गौरव बढ़ाया गया है। पृथ्वी जो सहन करती है, वैसा संतान को जन्म देने वाली माँ भी नहीं करती, परन्तु माँ से बड़ा सहिष्णुता में कोई अन्य दूसरा नहीं है, तभी पृथ्वी को माँ की उपमा दी गई है। धरती माँ चाहे इंसान हो या हैवान, सभी का सब कुछ सहन करके भी धीर-गम्भीर रहती है और बदले में उपकारी व अपकारी को समान रूप से इतना देती है, जिसका संसार में अन्य कोई दूसरा उदाहरण न है और न कभी होगा। पृथ्वी माता चाहे गरीब हो या अमीर, राजा हो या रंक, मानव हो या जानवर, पंछी हो या कीट, चींटी हो या हाथी यानी सबका पेट ही नहीं भरती वरन् प्यास भी बुझाती है। रहने व जीने को स्थान देती है। पृथ्वी अपना सर्वस्व लुटाकर भी कभी शिकायत नहीं करती, यही तो इसकी महानता की पराकाष्ठा है। हम उस धरती माँ की सहिष्णुता से कुछ तो सीखें। आखिर हम धरती माँ को बदले में दे क्या रहे हैं, कभी सोचना। कहीं हम इतने स्वार्थी व अपकारी नहीं बन जाएं कि एक दिन इस धरती पर ही मटियामेट हो जाएं और धरती की विशेषता को भी न जान पाएं।

अपने जीवन को जरूर देखें कि मेरी सहनशीलता, सहिष्णुता और बर्दाश्त करने की सीमा कितनी है? क्या हम दूसरों की गाली या निन्दा को सहन कर पाते हैं? थोड़ा सा भी शारीरिक या मानसिक दुःख प्रकट होने पर क्या हम उसे सहन कर पा रहे हैं? छोटी-छोटी बातों पर किसी का अहित या बुरा तो नहीं सोच रहे? सामने वाले की तरक्की-प्रगति से भीतर ही भीतर जल-भुन तो नहीं रहे? उसने ऐसा क्यों कह दिया, उसे सबक सिखाने का विचार तो भीतर में उथल-पुथल नहीं कर रहा? उसने मेरे साथ ऐसा किया, अब मैं भी मौका मिलते ही उसे ऐसा मजा चखाऊँगा कि उसे दिन में तारे नज़र आ जाएंगे। उसने मेरा धन हड़पा है, उसे मैं बर्बाद करके रख दूँगा। अमुक व्यक्ति ने मेरा घर बिगाड़ा है, मैं भी उसके घर में ऐसी आग लगाऊँगा कि कोई पानी पिलाने वाला भी नहीं मिलेगा। चुनाव में उसने मेरी

खिलाफत की थी, अगली बार मैं भी उसकी औकात बता दूँगा। मेरे खिलाफ उस शख्स ने झूठी गवाही देकर मुझे फंसवाया है, मैं भी एक दिन उसका बल निकाल दूँगा। भाई ने मेरा हिस्सा दाबकर अच्छा नहीं किया, मैं इसके वंश का नाश कर दूँगा। अमुक अध्यापक ने भरी क्लास में मेरी बेइज्जती की, उसकी मैं ऐसी की तैसी कर दूँगा। पड़ोसी ने मेरे प्रति कान भरे हैं, मैं भी पड़ोसी की इज्जत को सरेआम नीलाम कर दूँगा। उसने मेरे ऊपर झूठे इल्जाम लगाकर मुझे बदनाम किया, मैं भी मौका आने पर उसको छोड़ूँगा नहीं। सोचना, ऐसे विपरीत विचार हमारे जीवन में तो नहीं हैं? यदि भीतर के किसी भी कोने में कोई भी गलत विचार या विपरीत विचार चल रहा है या बदले की कुंठा बनी हुई है, तब उन सबको निकाल देना। हम जब तक सहिष्णुता के उपासक नहीं बनेंगे, तब तक धर्म का बीजारोपण हृदय में नहीं होगा। बिना सहिष्णुता के कर्म क्षय होने वाले नहीं हैं। जब तक हम इस धारणा को पुख्ता नहीं करेंगे कि विपरीत स्थिति, हालात या घटनाक्रम मेरे ही जीव द्वारा बांधे गए कर्मों का दुष्परिणाम है। उन्हें सहन किए बिना मैं उनसे मुक्त नहीं हो सकता। फिर व्यर्थ मैं असहिष्णु क्यों बनूँ? ध्यान रखना—बिना सहन किए कर्मों से छुटकारा नहीं है। जो बांधा है, जो बोया है, जो किया है और जो अभी भी कर रहे हो, उन सबका परिणाम निश्चित उदय में आएगा, उसे कोई नहीं टाल सकता। इसलिए जितनी सहिष्णुता जीवन के हर मोड़ पर होगी, उतनी ज़िन्दगी और भावी भविष्य अच्छा—सुन्दर व सुखदायक चरितार्थ होगा।’

तीर्थंकर परमात्मा संसार के आवागमन से तभी मुक्त हो पाए, जब वीतराग दर्शन के मूल मंत्र सहिष्णुता की पराकाष्ठा को पार कर दिया। प्रभु महावीर ने अपने कानों में कीलें ठोकने वाले तक का बुरा नहीं सोचा, बल्कि उसे अपना परम उपकारी माना, तभी वे मुक्तिधाम में स्थायी स्थान प्राप्त कर सके। फिर सोचें, हम अपने जीवन में कितना राग-द्वेष कम कर समता के निकट आ पाए? छोटी-छोटी बातों पर हमारा राग-द्वेष जिस बेलगाम तरीके से बढ़ रहा है, वही तो हमें रूलाने का कारण बनता है। सहिष्णुता के विपरीत जब तक जीव का आचरण रहेगा, तब तक वह कभी सच्चे सुख का अधिकारी नहीं बन सकता। सच्चा सुख किसमें है? वह वीतरागता की साधना में है, क्योंकि संसार में जितने भी भव्य जीव मोक्ष में गए हैं, वे सब सामायिक-समता की साधना के द्वारा ही गए हैं और सामायिक-समता की साधना बिना सहिष्णुता के कभी संभव नहीं हो पाती। सहिष्णुता टकराव नहीं, सहन करना सिखाती है। सहिष्णुता बदले की भावना नहीं, क्षमाशील बनाती है। सहिष्णुता नफरत नहीं, प्रेम उत्पन्न करती है। सहिष्णुता विध्वंस नहीं, सृजन को बढ़ावा देती है। सहिष्णुता क्रोध को नहीं, शान्ति को बढ़ाती है। सहिष्णुता किसी का भी अपकार नहीं, सबका उपकार कराती है। सहिष्णुता हिंसा की नहीं, अहिंसा की जननी है। सहिष्णुता पाप कर्म नहीं, पुण्य कर्म बढ़ाती

है। सहिष्णुता में ही दया-करुणा-परोपकार-मानवता-प्रेम-वात्सल्य-मधुरता-मैत्री भाव और इंसानियत के तमाम गुण रहे हुए हैं, तब सहिष्णुता का धारक कभी विपरीत न सोच सकता है और न ही विपरीत कर सकता है। वह तो हर हाल में समता और सहिष्णुता में विश्वास रखता है। चूंकि वह भली प्रकार यह जान चुका होता है कि हर क्षण व पल के पीछे उसका ही पूर्व भव का निमित्त रहा हुआ है, फिर कैसी भी स्थिति-परिस्थिति-हालात क्यों न हो, वह अपनी सहिष्णुता पर कभी आंच नहीं आने देता। चूंकि जिसका लक्ष्य व ध्येय आत्म-उत्थान की ओर है, वह कभी पलट कर जवाब देने तक की सोच उत्पन्न नहीं होने देता। अपने मन-वचन-काया पर नियंत्रण व विवेक की आंखों को हमेशा खुली रखने वाले ही एक दिन इस नश्वर संसार से छुटकारा पाने की राह पा लेते हैं। संसार में असहिष्णुता के कारण कितना अहित व भयंकर बर्बादी हुई है, इतिहास के पन्ने उनसे भरे पड़े हैं।

मौजूदा पंचमकाल की यह घोर विडम्बना है कि जो स्वयं असहिष्णुता से परिपूर्ण है, वे आज चंद राजनीतिक स्वार्थों के लिए सहिष्णुता की बड़ी-बड़ी बातें कर रहे हैं। दूसरों को उपदेश देने वाले छद्म लोग अपने भीतर झांक कर नहीं देखते कि वे स्वयं कितने सहिष्णुता के निकट हैं? 'सहिष्णुता' कोई राजनीति अथवा तर्क-कुतर्क की वस्तु नहीं है, बल्कि सहिष्णुता तो जीवन बदलने की वह 'संजीवनी' है जिससे मुक्ति का धाम तक मिल सकता है। हमें पृथ्वी माँ की सहिष्णुता से प्रेरणा लेकर उन वीतराग भगवंतों की तरफ देखना होगा, जिन्होंने सहिष्णुता की पराकाष्ठा को पार करके मोक्ष में स्थान पाया। हम पेड़-पौधों-वृक्षों से भी सीख सकते हैं, जो तरह-तरह के झंझावात सहन करने के बाद भी पथिक को निःस्वार्थ भाव से छाया एवं शुद्ध हवा के साथ-साथ मीठे-मीठे फल, फूल-पत्तियाँ-औषधियाँ-लकड़ी देते हैं और वर्षा को आमंत्रण देते हैं। गाय सूखी घास खाकर अमृत जैसा दूध और शुद्ध घी प्रदान करती है, आज उसी गाय को लेकर राजनीति के धंधेबाज अपने-अपने तरकशों से ऐसे-ऐसे नुकीले तीर छोड़ रहे हैं कि बेचारी गाय व उसका माँस पूरे देश में बहस का विषय बना दिया गया। क्या गो माता की रक्षा व उसे राष्ट्रीय पशु घोषित करने की माँग करना असहिष्णुता है? यदि वन्य प्राणी 'नील गाय' की प्राण रक्षा के लिए कुछ अहिंसा प्रेमी आवाज बुलंद करते हैं, तब क्या यह असहिष्णुता है? जिस सहिष्णुता के द्वारा जीवों की रक्षा, उनके जीवनदान, अभयदान की गूंज होती है, करुणा-दया प्रकट होती और झलकती है, आज उसी सहिष्णुता का दीवाला निकाला जा रहा है। सहिष्णुता का यह मतलब नहीं है कि माँस खाने और गाय-नील गाय आदि जीवों की हत्या करने की वकालत करने दी जाए। हम पहले सहिष्णुता की आध्यात्मिक परिभाषा और उसके भीतर रहे हुए तत्त्वबोध की गहराई को समझें। सहिष्णुता जीवों की रक्षा, उनके संवर्द्धन, उनके संरक्षण

और उनके प्रति असीम करुणा-दया का सिर्फ सन्देश नहीं है, वैसा जीवन बनाने का मार्ग भी दिखाती है। हर जीव के प्रति मंगल मैत्री-करुणा को विकसित करना भी सहिष्णुता की परम कसौटी है। हम सबको सहिष्णुता के उस परम लक्ष्य को पाने के लिए सजग और समर्पित होना पड़ेगा। तभी सहिष्णुता से शान्ति-प्रेम-सुख और मुक्ति संभव है।

## गणिवर हीरा गुणों के भण्डार हैं

श्री धर्मचन्द जैन

(तर्ज: सौ साल पहले, हमें तुमसे.....।)

गणिवर हीरा गुणों के भण्डार हैं, संघ के आधार हैं,  
संयम सजगता अपरम्पार है। गणिवर हीरा....।।टेर।।  
मोती पितु प्यारे हैं, मोहनी के दुलारे हैं।  
पीपाड़ धरा प्यारी, गांधी कुल वारे हैं।  
गुरु को समर्पित, विनय बेमिसाल है-2।

संयम सजगता.....।।1।।

मुखमण्डल मोहक है, वाणी मल-शोधक है।  
शान्ति समता लघुता, अत्यन्त प्रभावक है।  
साधना में दृढ़ता, नित्य ही कमाल है-2।

संयम सजगता.....।।2।।

व्यसनों की चकरी में, मानव दुःख पाते हैं।  
फैशन की परस्ती में, नर-नारी पिसते हैं।  
व्यसन मुक्त जीवन ही, सुख का आधार है-2।

संयम सजगता.....।।3।।

निशि में भोजन करना, रोगों को बुलाना है।  
पापों का सेवन कर, आश्रव को बढ़ाना है।  
संवर और निर्जरा ही, मुक्ति का आधार है-2।

संयम सजगता.....।।4।।

गुरु भक्ति करने से, श्रद्धा गुण बढ़ता है।  
सेवा आज्ञा पालन, स्वाध्याय निखरता है।  
भावों की विशुद्धि ही, 'धर्म' का आधार है-2।

संयम सजगता.....।।5।।

-रजिस्ट्रार, अ.भा.श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, जोधपुर (राज.)

## जीवन के सत्य

आचार्य श्री विजयरत्नसुन्दरसूरिजी म. सा.

उत्तम खाद मिलने पर भी बेर  
अमरूद नहीं बन सकता।  
मेंढ़क चाहे कितना भी अपना  
सीना फुलाए, शेर नहीं बन सकता।  
जुगनू कितना भी प्रकाशित बने,  
वह सूर्य नहीं बन सकता।  
बस, इसी न्यायानुसार झूठ कितना भी  
अपना सामर्थ्य बढ़ाये वह सत्य का  
स्वरूप कभी प्राप्त नहीं कर सकता।

“मुझे जीने के लिए क्या-क्या चाहिए?”

इसकी सूचियाँ तो बहुत बनाई।  
अब एक ऐसी सूची बनाइये कि जिसमें  
“किस-किसके बिना मैं प्रसन्नता से जी  
सकता हूँ?” इसकी नोंध की गई हो।  
विश्वास के साथ कहता हूँ कि  
वह सूची आपकी जीवन व्यवस्था को  
नये रूप में स्थापित करने में अत्यन्त  
प्रोत्साहक बनेगी।

“मेरा जीवन दीर्घ समय तक टिकेगा”  
इस भविष्यवाणी में हम सत्य सिद्ध हो  
सकते हैं। परन्तु “मैं मेरा मन दीर्घ समय  
तक अच्छा ही रख सकूँगा” इस  
भविष्यवाणी में हम सत्य सिद्ध हों ऐसी  
संभावना लगभग नहीं है और इसीलिए  
जीवन को अच्छा रखने का एकमात्र  
विकल्प यह है कि आज यदि मन  
अच्छा है तो आज ही सत्कार्य कर  
लो। उसे आने वाले कल पर मत  
रखो।

जीवन में हताश होने वालों को  
स्वस्थ करना है?

उन्हें प्रेम दीजिए  
सम्यक् मार्गदर्शन के अभाव से  
दिशाशून्य बनने वालों को आगे बढ़ाना  
है? उन्हें प्रेरणा दीजिए! शक्ति होते हुए  
भी किसी कारण से निष्क्रिय बनकर  
बैठने वालों को सम्यक् क्षेत्रों में आगे  
बढ़ाना है? उन्हें प्रोत्साहन दीजिए।

## गोम्मटसार कर्मकाण्ड के आधार पर कर्म तथा कर्म की विविध अवस्थाएँ

श्री वीरचन्द्र जैन

अनादिकालीन पंच परावर्तन रूप लोक में अनन्तानन्त जीव द्रव्य की ओर दृष्टिपात करते हैं तो ज्ञात होता है कि जीव की चार अवस्थाएँ हैं- नारकी, तिर्यच, मनुष्य एवं देव। जीव राशि कर्मों के आश्रित होकर चतुर्गति एवं चौरासी लाख योनियों में जन्म-मरण कर अनादि काल से संसार परिभ्रमण कर रही है। अनादि काल से यह आत्मा कर्मों से युक्त है।

श्री जैनेन्द्र सिद्धान्त कोश में 'कर्म' का सामान्य परिचय देते हुए कहा है- "कर्म शब्द के अनेक अर्थ हैं। उन सबको तीन भागों में विभाजित किया जाता है- कर्मकारक, क्रिया और जीव के साथ बंधने वाले विशेष जाति के पुद्गल स्कन्ध।"<sup>1</sup>

व्याकरणशास्त्र में कर्म-कारक को 'कर्म' कहा जाता है। तदनुसार जिसे कर्ता अपनी क्रिया के द्वारा प्राप्त करना चाहता है, वह कर्म है। पाणिनि ने अष्टाध्यायी में कहा है- 'कर्तुरीप्सिततमं कर्म'<sup>2</sup> साधारणतया कर्म शब्द का अर्थ क्रिया समझा जाता है। खाना, पीना, सोना, चलना आदि विभिन्न क्रियाएँ कर्म की द्योतक हैं, विभिन्न व्यवसायों के अर्थ में भी कर्म शब्द का प्रयोग होता है। पौराणिक परम्परा में व्रत, नियम आदि धार्मिक क्रियाएँ कर्म रूप मानी जाती हैं।

तीसरे प्रकार के कर्म का निरूपण केवल जैन सिद्धान्त में ही किया गया है। जीव मन, वचन और काय के द्वारा जो करता है, उनसे प्रभावित होकर, एक विशेष जाति के सूक्ष्म पुद्गल स्कन्ध<sup>3</sup> जीव के साथ बंध जाते हैं। बंध को प्राप्त ये पुद्गल स्कन्ध ही 'कर्म' संज्ञा को प्राप्त करते हैं।<sup>4</sup>

कर्म ग्रंथ में कहा गया है कि विभिन्न हेतुओं से जीव कर्म योग्य पुद्गल द्रव्यों को आत्म प्रदेशों से बांध लेता है। आर. गाँधी ने जैन दर्शन में मान्य कर्म की उपर्युक्त यथार्थता को स्पष्ट करते हुए कहा है कि कर्म को यद्यपि हम आँखों से देख नहीं सकते, परन्तु कर्म की सत्ता वैसे ही यथार्थ है, जैसे हमारे चारों ओर की भित्तियाँ यथार्थ हैं।<sup>5</sup> यह सिद्धान्त केवल मनुष्यों पर ही घटित नहीं होता, अपितु सभी प्रकार के छोटे-बड़े प्राणियों पर भी घटित होता है।<sup>6</sup> प्रत्येक वह आत्मा जो मुक्त नहीं हुआ है, कर्म के इस चक्र से बंधा हुआ है।

शरीरादि भौतिक जगत् और रागद्वेषादि भाव जगत् की सृष्टि करने वाले, जीव के स्वकृत कर्म ही हैं। कर्म का कर्ता स्वयं अपने कर्मों का अनुगमन करता है।<sup>7</sup> इसी कारण जैन दर्शन में कर्म को जगत् का स्रष्टा भी कह दिया गया है, क्योंकि जैनमत में कर्मों के अनुसार फल प्राप्त करने में किसी अन्य सत्ता अथवा ईश्वर के हस्तक्षेप का निराकरण किया गया है और भगवद् गीता द्वारा मान्य अवतारवाद<sup>8</sup> को भी जैन दर्शन स्वीकार नहीं करता। जगत् में जो विषमता दृष्टिगोचर होती है, वह ईश्वर कृत नहीं है, अपितु जीव के अपने कर्मों के परिणामस्वरूप ही है। जिस प्रकार का अच्छा या बुरा कर्म होता है उसी प्रकार का फल प्राप्त होता है।<sup>9</sup> कर्मों की विषमताओं के कारण ही प्राणियों की देह, बुद्धि आदि की विषमताएँ दृष्टिगोचर होती हैं।

आचार्य नेमीचन्द्र ने अपने ग्रंथ गोम्मटसार कर्मकाण्ड<sup>10</sup> में कर्म के दो भेद किये हैं—द्रव्यकर्म व भावकर्म। कर्म की जीव से सम्बन्धित क्रिया भावात्मक होने के कारण 'भावकर्म' कहलाती है और कर्म की पौद्गलिक अवस्था द्रव्यात्मक होने के कारण 'द्रव्यकर्म' कहलाती है।<sup>11</sup>

मोह-राग और द्वेष को भावकर्म कहा जाता है। पुद्गल वर्गणाओं के पारस्परिक बन्ध से जो स्कन्ध बनते हैं, वे द्रव्यकर्म हैं। ये द्रव्यकर्म वर्गणा भेद से पाँच प्रकार के कहे गये हैं। इनसे ही स्थूल और सूक्ष्म शरीरों का निर्माण होता है। जीव का योग या प्रदेश-परिस्पन्दन द्रव्यकर्म और भावकर्म के मध्य की सन्धि है।<sup>12</sup> इन दोनों में परस्पर कार्य-कारण सम्बन्ध है। भावकर्म कारण और द्रव्यकर्म भी कारण है। परन्तु द्रव्यकर्म के अभाव में भावकर्म की भी निष्पत्ति नहीं होती, इसी कारण द्रव्यकर्म भी भावकर्म का कारण है। मुर्गी और अण्डे के समान भावकर्म और द्रव्यकर्म का कार्य-कारण भाव अनादि से ही है।<sup>13</sup> यह सम्बन्ध कब हुआ यह कहना कठिन है, क्योंकि जैनमतानुसार जीव और पुद्गल का सम्बन्ध अनादि काल से है। कर्मों की अनादि सत्ता को अन्य दर्शनों की भाँति जैन दर्शन में भी स्वीकार किया गया है।<sup>14</sup>

उपर्युक्त कथन का सारांश यह है कि जीव के योग अर्थात् मन-वचन-काय की क्रिया मात्र से कर्मशक्ति उत्पन्न नहीं होती, अपितु जीव के भावों अर्थात् राग-द्वेष, मोहादि परिणामों से समीपवर्ती सूक्ष्म परमाणुओं का आकर्षण होता है, जिससे वे जीव के सम्पर्क में आकर कर्म रूप में परिणत हो जाते हैं। इस प्रकार रागद्वेषादि परिणाम रूप भावकर्म से द्रव्यकर्म उत्पन्न होते हैं। यदि मन-वचन-काय की क्रिया, भाव निरपेक्ष हो तो द्रव्यकर्म का संचय नहीं होता। अर्हत अवस्था जिसे अन्य दर्शनों में जीवन-मुक्त अवस्था कहा गया है, ऐसी ही अवस्था है, जिसमें द्रव्यकर्म और भावकर्म की अविच्छिन्न धारा को रोक दिया जाता है।

## कर्म की विविध अवस्थाएँ

जैन कर्म सिद्धांत में कर्म की विविध अवस्थाओं का अति सूक्ष्म वर्णन किया गया है। सैद्धान्तिक भाषा में इन अवस्थाओं को 'करण' कहा जाता है। जैनेन्द्र सिद्धान्त कोश में 'करण' की परिभाषा करते हुए कहा गया है कि "जीव के शुभ-अशुभ आदि परिणामों की करण संज्ञा है।<sup>15</sup> गुणों की अवस्था को 'परिणाम' कहा जाता है।<sup>16</sup> यह प्रतिक्षण परिणमनशील रहता है। आत्मा के परिणामों को संज्ञा देने का कारण बतलाते हुए ध्वलाकार ने कहा है- 'जीव के शुभ-अशुभ परिणाम ही कर्मों की विविध अवस्थाओं का मूल कारण है, इसलिए साधकतम भाव की विवक्षा में भी परिणामों को 'करण' कहा जाता है।<sup>17</sup>

करण दस होते हैं- बन्ध, उदय, सत्त्व, उत्कर्षण, अपकर्षण, संक्रमण, उपशम, उदीरण, निधत्त और निकाचित। ये दस करण प्रत्येक कर्म प्रकृति में होते हैं।<sup>18</sup>

### (1) बन्धकरण-

सभी भारतीय दर्शनों में कर्मबन्ध की सत्ता स्वीकार की गई है। ज्ञान, ध्यान और तप रूप समस्त साधनाएँ इस बन्धन से मुक्ति के लिए ही की जाती हैं। बन्धन के स्वरूप के विषय में जैनदर्शन की अपनी विशिष्ट विचारणा है। इस विचारणा के अनुसार आत्मा के साथ सूक्ष्म जाति के कर्मपुद्गलों का नीर-क्षीर के समान अथवा लोहाग्नि के समान एक हो जाना बन्ध है। राजवार्तिक के अनुसार "आत्मकर्मणोरन्योन्यप्रवेशलक्षणो बन्धः"<sup>19</sup> अर्थात् जैसे लोहे और अग्नि का एक ही क्षेत्र है और नीर आदि मिलकर एक क्षेत्रावगाही हो जाते हैं उसी प्रकार आत्मा के साथ बन्ध को प्राप्त होकर, सूक्ष्म पुद्गल एक क्षेत्रावगाह हो जाते हैं। जीव के एक-एक प्रदेश पर कर्मों के अनन्त प्रदेश, अत्यन्त सघन और प्रगाढ़ रूप से अवस्थित होकर रहते हैं।<sup>20</sup>

जीव कर्मपुद्गलों का ग्रहण क्यों करता है? इसके उत्तर में कहा जा सकता है कि जीव अनादि काल से ही कर्म से सम्बन्धित है, जैसे- खानों से निकले स्वर्ण और पाषाण का सम्बन्ध अनादि काल से है। उसी प्रकार जीव और कर्म का सम्बन्ध भी अनादि काल से है।<sup>21</sup>

### (2) उदयकरण-

कर्मों के विपाक की अवस्था को 'उदय' कहते हैं।<sup>22</sup> पूर्व संचित कर्म जब अपना फल देता है तो उस अवस्था को जैन कर्मसिद्धान्त की भाषा में उदय कहा गया है। जीव के पूर्वकृत शुभ या अशुभ कर्म चित्तभूमि पर सदा अंकित रहते हैं। वे सब अपने-अपने समय पर परिपक्व दशा को प्राप्त होकर जीव को फल देकर नष्ट हो जाते हैं। कर्म के उदय में जीव

के परिणाम उस कर्मप्रकृति के अनुसार ही हो जाते हैं।<sup>23</sup> कर्मों का यह उदय, द्रव्य, क्षेत्र, काल और भाव की अपेक्षा रखकर ही होता है। यह उदय सविपाक और अविपाक भेद से दो प्रकार का होता है।<sup>24</sup> उदय क्रम से परिपाक काल को प्राप्त होने वाला सविपाक उदय कहलाता है। विपाक काल से पहले तपादि विशिष्ट क्रियाओं द्वारा कर्मों को फलोन्मुख अवस्था में ले आना 'अविपाक उदय' कहलाता है।<sup>25</sup>

कर्म प्रकृतियों की अपेक्षा कर्म के दो प्रकार हैं— स्वमुखोदय और परमुखोदय। जो प्रकृति अपनी प्रकृति रूप होकर ही उदय में आती है, उसे स्वमुखोदय कहते हैं। जैसे— क्रोध का क्रोध रूप में ही उदय आना। परन्तु कभी-कभी किसी विशेष स्वार्थ के कारण क्रोध, क्रोध रूप में ही उदय में न आकर मान या माया रूप से भी उदय में आ जाता है, इस प्रकार संक्रमित होकर उदय में आने को परमुखोदय कहते हैं।<sup>26</sup>

### (3) सत्त्वकरण—

जीव से सम्बद्ध हुए कर्म स्कन्ध तत्काल फल नहीं देते। बन्धने के दूसरे समय से लेकर फल देने के पहले समय तक वे कर्म आत्मा के साथ अस्तित्व रूप में रहते हैं। कर्मों की उस अवस्था को सत्ता या सत्त्व कहा जाता है।<sup>27</sup> जैसे— धान्य को संग्रह कर लिया जाता है और आवश्यकता पड़ने पर उस संग्रह में से थोड़ा-थोड़ा निकाला जाता है। जब तक वह बाहर नहीं निकलता तब तक वह संग्रह निधि रूप में रहता है। धान्य के संग्रह के समान ही पूर्व संचित कर्म का आत्मा में अवस्थित रहना सत्त्व कहलाता है।<sup>28</sup>

गोम्मटसार कर्मकाण्ड में सत्ता के भेदों का निरूपण किया गया है—

पंच णव द्दोष्णि अट्ठावीसं चउरो कमेण ते णउद्धी।

द्दोष्णि य पंच य भणिया एद्दाओ सत्त पयडीओ।।<sup>29</sup>

सत्त्व के दो भेद हैं— उत्पन्नस्थान सत्त्व और स्वस्थान सत्त्व। अपकर्षण आदि के द्वारा अन्य प्रकृति रूप से किया गया सत्त्व उत्पन्नस्थान सत्त्व कहलाता है और बिना अन्य प्रकृति रूप हुआ सत्त्व स्वस्थान सत्त्व कहलाता है।<sup>30</sup>

### (4) अपकर्षण —

“स्थित्यनुभागयोर्हानिरपकर्षणम्” कर्मों की स्थिति अर्थात् बंधे रहने का समय और अनुभाग अर्थात् शक्ति, इन दोनों में हानि हो जाना अपकर्षण कहलाता है।<sup>31</sup> कर्मों की स्थिति का अपकर्षण हो जाने पर कर्म जितने काल के लिए बंध को प्राप्त हुए थे, उनका वह काल पहले से बहुत कम हो जाता है। जिस प्रकार कर्मों की स्थिति में कमी हो जाती है उसी

प्रकार अनुभाग अर्थात् फलदान शक्ति में भी कमी हो जाती है। तीव्रतम शक्ति वाले संस्कार एक क्षण में मन्दतम हो जाते हैं। उदाहरण- किसी जीव ने पहले अशुभ कर्म का बंध किया, उसके पश्चात् उसकी भावना में निर्मलता आ जाती है। ऐसी अवस्था में पहले बंधे हुए अशुभ कर्मों की स्थिति कम हो जाती है और फल देने की शक्ति भी कम हो जाती है। यही वह रहस्य है, जिससे वर्तमान कर्मों के द्वारा अनागत को सुधारा जा सकता है और पूर्वसंचित कर्मों का क्षय किया जा सकता है।

### (5) उत्कर्षण-

“स्थित्यनुभागयोर्वृद्धिः उत्कर्षणम्” कर्मों की स्थिति अर्थात् बंध रहने का समय और अनुभाग अर्थात् शक्ति में वृद्धि हो जाना उत्कर्षण कहलाता है।<sup>32</sup> कर्मों की स्थिति का उत्कर्षण हो जाने पर कर्म जितने काल के लिए बन्ध को प्राप्त हुए थे उसका उल्लंघन करके बहुत काल के पश्चात् उदय में आते हैं। जिस प्रकार स्थिति में वृद्धि हो जाती है, उसी प्रकार अनुभाग अर्थात् फलदान शक्ति में भी वृद्धि हो जाती है। मन्दतम शक्ति वाले संस्कार एक क्षण में ही तीव्रतम हो जाते हैं। जैसे - किसी जीव ने पहले अशुभ कर्म का बन्ध किया, उसके पश्चात् उसकी भावना और अधिक कलुषित हो जाए तब पहले बंधे हुए अशुभ कर्मों की स्थिति बढ़ जायेगी और फल देने की शक्ति तीव्र हो जायेगी।

### (6) संक्रमण करण-

“परप्रकृतिरूपपरिणमनं संक्रमणम्” अर्थात् पहले बंधी कर्म-प्रकृति का अन्य प्रकृति रूप में परिणमन हो जाना संक्रमण है।<sup>33</sup> कोशकार के शब्दों में - “जीव के परिणामों के वश से पूर्वबद्ध कर्म प्रकृति का बदलकर, अन्य प्रकृति रूप हो जाना संक्रमण है।”<sup>34</sup> कुसंगति के प्रभाव से सज्जन भी दुर्जन हो जाते हैं। यह संक्रमण करण ही है, जो अभ्यास के अनुसार व्यक्ति के स्वभाव को बदल देता है। इस प्रकार शुभ-प्रकृति अशुभ रूप में और अशुभ-प्रकृति शुभ रूप में संक्रमित हो जाती है। यह संक्रमण केवल प्रकृति में ही नहीं होता, अपितु प्रकृति, स्थिति, अनुभाग और प्रदेश कर्मों की चारों अवस्थाओं में होता है। इस प्रकार से संक्रमण चार प्रकार का हो जाता है- प्रकृति-संक्रमण, स्थिति-संक्रमण, अनुभाग-संक्रमण और प्रदेश-संक्रमण।

### (7) उदीरणाकरण-

“भुंजणकालो उदओ उदीरणापक्कपाचणफलं”<sup>35</sup> कर्मों के फल भोगने के काल को उदय कहते हैं और भोगने के काल से पहले ही अपक्व कर्मों को पकने का नाम उदीरणा है। जो कर्म-स्कन्ध भविष्य में उदय में आने वाले हैं, उन्हें विशिष्ट प्रयत्न, तप, परीषह-

सहन, त्याग व ध्यान आदि से खींचकर उदय में आये हुए कर्मस्कन्धों के साथ ही भोग लेना उदीरणा है। इस प्रकार उदीरणा के द्वारा लम्बे समय के बाद उदय में आने वाले कर्मों को पहले ही भोग लिया जाता है।

### (8) उपशमकरण-

कर्मों के उदय को कुछ समय के लिए रोक देना उपशम कहलाता है।<sup>36</sup> कर्म की इस अवस्था में उदय अथवा उदीरणा संभव नहीं होती। जिस प्रकार राख से आवृत्त अग्नि, आवृत्त अवस्था में रहते हुए अपना विशेष कार्य नहीं कर सकती, किन्तु आवरण के हटते ही पुनः प्रज्वलित होकर अपना कार्य करने को समर्थ हो जाती है उसी प्रकार उपशमन अवस्था में रहा हुआ कर्म, उस अवस्था के समाप्त होते ही अपना कार्य प्रारम्भ कर देता है।

### (9) निधत्तकरण-

कर्म की वह अवस्था निधत्त कहलाती है, जिसमें उदीरणा और संक्रमण का सर्वथा अभाव होता है, किन्तु कर्मों का उत्कर्षण और अपकर्षण संभव होता है। कर्मों की इस विशेष अवस्था में आत्मा के साथ कर्म इस प्रकार संबंधित हो जाते हैं कि कर्मों में उत्कर्षण और अपकर्षण के अतिरिक्त उदय-उदीरणा संभव नहीं होते हैं।<sup>37</sup>

### (10) निकाचित करण-

कर्म की उस अवस्था का नाम निकाचना है, जिसमें उत्कर्षण, अपकर्षण, संक्रमण और उदीरणा ये चारों अवस्थाएँ असंभव होती हैं।<sup>38</sup> कर्मों की इस अवस्था को नियति कहा जा सकता है। क्योंकि इस अवस्था में कर्मों का फल उसी रूप में अवश्य प्राप्त होता है जिस रूप में बन्ध को प्राप्त हुआ था। इसमें इच्छा, स्वतन्त्रता या पुरुषार्थ का सर्वथा अभाव रहता है। किसी विशेष कर्म की यह अवस्था होती है।

उपर्युक्त दस करणों के विवेचन से स्पष्ट है कि जैनदर्शन के अनुसार जीव, जिस रूप में कर्मों का बन्ध करता है, वे कर्म उसी रूप में फलदायी नहीं होते। बन्ध से उदय तक के मध्यवर्ती काल में, वर्तमान कर्मों के अनुसार, पूर्वकृत कर्मों में संक्रमण, अपकर्षण, उत्कर्षण आदि अनेकविध परिवर्तन प्रत्येक समय में होते रहते हैं। जैनदर्शनानुसार वर्तमान पुरुषार्थ के द्वारा पूर्वबद्ध कर्मों में परिवर्तन किया जा सकता है, उसी प्रकार आचार्यों ने नवीन कर्म-पुद्गलों के प्रवाह को रोकने के लिए संवरपथ और पूर्वबद्ध कर्मों का समूल नाश करने के लिए निर्जरा-पथ का दिग्दर्शन कराया है।

### सन्दर्भ ग्रन्थ -

1. जिनेन्द्र सिद्धान्त कोश, भाग-2
2. अष्टाध्यायी, अध्याय-1, पाद-4, सूत्र-49

3. पूर्व निर्दिष्ट, अध्याय-3, (कर्मग्रहणयोग्याः पुद्गलाः सूक्ष्माः न स्थूलाः) सर्वार्थसिद्धि पृ. 402
4. जिनेन्द्र सिद्धान्त कोश, भाग-2
5. The karma Philosophy, Page-3, Gandhi Vir Chand R Devchand Lal bhai Pustakodhar fund, Bombay
6. Ibid, page-3
7. कत्तारमेवानुयातिकर्म, उत्तराध्ययन, सूत्र 13.23
8. भगवद्गीता, 4, 8
9. पंचास्तिकाय गाथा-67
10. गोम्मटसार-कर्मकाण्ड, गाथा 6,7
11. आस परीक्षा, श्लोक 113-114
12. कर्म-सिद्धान्त, पृ. 47
13. आस-मीमांसा, पृ. 96
14. पंचाध्यायी, उत्तरार्ध, श्लोक 55
15. जैनेन्द्र सिद्धान्त कोश, भाग-2 पृ. 4
16. परिणामोऽवस्था, पंचाध्यायी, पूर्वार्ध, श्लोक 117
17. षट्खण्डागम, धवला टीका 619 पृ. 217
18. गोम्मटसार कर्मकाण्ड, गाथा 437
19. राजवार्तिक पृ. 26
20. कर्म-प्रकृति, गाथा- 22
21. गोम्मटसार कर्मकाण्ड, जीवतत्त्व प्रदीपिका, गाथा-2
22. उदयो, विपाकः सर्वार्थसिद्धि-पृ. 332
23. समणसुत्तं गाथा-61
24. पंचसंग्रह (प्राकृत), अधिकार 1, गाथा 513
25. सर्वार्थसिद्धि -पृ. 399
26. गोम्मटसार कर्मकाण्ड, जीवतत्त्व प्रदीपिका, गाथा-342
27. कषायपाहुड, पृ. 1 पृ. 291
- ‘विदियसमयप्पहुडि जाव फलदाण हेट्ठि सम ओत्ति ताव संतववएसं पडिवज्जंति’
28. पंचसंग्रह, प्राकृत अधिकार-3, गाथा 3
29. गोम्मटसार-कर्मकाण्ड, गाथा-38
30. गोम्मटसार-कर्मकाण्ड, गाथा-351
31. गोम्मटसार-कर्मकाण्ड, गाथा-438 (जीवतत्त्व प्रदीपिका)
32. गोम्मटसार-कर्मकाण्ड, जीवतत्त्व प्रदीपिका, गाथा-438
33. गोम्मटसार-कर्मकाण्ड, जीवतत्त्व प्रदीपिका, गाथा-438
34. जैनेन्द्र सिद्धान्त कोश, भाग-4, पृ. 82

35. पंचसंग्रह (प्राकृत), अधिकार-3 गाथा 3  
 36. जैनेन्द्र सिद्धान्त कोश, भाग-1, पृ. 464  
 37. गोम्मटसार-कर्मकाण्ड, जीवतत्त्व प्रदीपिका, गाथा-450  
 38. गोम्मटसार-कर्मकाण्ड, जीवतत्त्व प्रदीपिका, गाथा-450

-शोधछात्र, जैनविद्या एवं प्राकृत विभाग,  
 मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर (राज.)

## गणि हीरा पदारोहण - रजत वर्ष मनाएँ

श्री जोहरीमल छाजेड़

विनति सुनलो हे गुरुदेव, हम आत्म कल्याणी बनें।  
 विचारों में शुद्धता लाएँ, और ज्ञान ध्यानवान बनें॥

गणि हीरा पदारोहण रजत वर्ष मनाएँ.....॥1॥

तप-त्याग में रमण करें, धर्म का आचरण सदा करें।  
 तन का ममत्व छोड़ें, आत्मभाव में रमण करें॥

गणि हीरा पदारोहण रजत वर्ष मनाएँ.....॥2॥

रागद्वेष को मिटा कर, प्रेम की गंगा बहाएँ।  
 रात-दिन प्रभु स्मरण कर, जीवन को सफल बनाएँ॥

गणि हीरा पदारोहण रजत वर्ष मनाएँ.....॥3॥

व्यसन मुक्त समाज की रचना करें, कुरीतियों को दूर भगाएँ।  
 समाज में नई क्रान्ति लाएँ, फिजूलखर्ची पर रोक लगाएँ॥

गणि हीरा पदारोहण रजत वर्ष मनाएँ.....॥4॥

नानवेज होटल में जाना छोड़ें, जमीकंद को नहीं अपनाएँ।  
 खाद्य पदार्थों की मर्यादा करें, फूल-पटाखों का त्याग करें॥

गणि हीरा पदारोहण रजत वर्ष मनाएँ.....॥5॥

चेतो जागो, युवा वर्ग जागो, पहचानो अपना कर्तव्य।  
 आपके दृढ़ संकल्पों से होगा, समाज कुरीतियों का उन्मूलन।

गणि हीरा पदारोहण रजत वर्ष मनाएँ.....॥6॥

धर्म क्रांति का दीप जलाएँ, समाज में नव प्रभात लाएँ।  
 गुरुदेव के इशारों पर, समाज को धर्मक्रांति की राह चलाएँ॥

गणि हीरा पदारोहण रजत वर्ष मनाएँ.....॥7॥

-वरिष्ठ स्वाध्यायी, म.सं. 155, पटेल चौक, भिस्त्रियों का बास, जोधपुर (राज.)

आचार्य हस्ती जन्म-दिवस पर

## स्वाध्याय : अंधकार में प्रकाश

श्री अरूण मेहता (FCA, FCS)

श्रमण भगवान महावीर स्वामी के इस शासन में अनेक महान् व विरली हस्तियाँ हुई हैं, जिन्होंने शासन की अनूठी सेवा करते हुए अपना नाम उजागर किया है, अमर किया है। इनमें एक है आगमज्ञ, इतिहास मार्तण्ड सामायिक-स्वाध्याय के प्रबल प्रेरक पूज्य आचार्य भगवन्त श्री हस्तीमल जी महाराज साहब, जिनका 106 वाँ जन्मदिवस 22 जनवरी 2016 को उपस्थित हो रहा है।

आचार्य श्री हस्ती ने अपने जीवन के 81 वर्षों में लगभग 71 वर्षों तक सामायिक (संयम) की अनवरत, निरतिचार, निर्दोष व अनुपम साधना करते हुए निरन्तर स्वाध्याय की प्रेरणा की। स्वयं अपने साधनाकाल के 71 वर्षों तक निरन्तर स्वाध्याय करते रहे, पराध्याय से कोसों दूर रहे तथा अपने सम्पर्क में आने वाले सभी को स्वाध्याय करने की निरन्तर प्रेरणा करते रहे।

प्राज्ञ सम्प्रदाय के पूज्य आचार्य श्री पन्नलाल जी महाराज साहब ने स्वाध्याय-संघ का बीजारोपण किया। सर्वप्रथम उन्होंने ही इस बात को सोचा कि साधु-साध्वियों से वंचित क्षेत्रों में भी धर्माराधन सुचारू रूप से होना चाहिए।

आचार्य हस्ती ने इस बीज को सींचा, पुष्पित-पल्लवित किया और वटवृक्ष का रूप दिया, जिसके फल आज आप और हम सभी प्राप्त कर रहे हैं। साधु-साध्वियों के चातुर्मास से वंचित क्षेत्र भी पर्युषण पर्व के दिनों में जिनवाणी का रसास्वादन कर रहे हैं। ऐसे क्षेत्रों में भी पर्युषण पर्व के पावन दिवसों में शास्त्रवाणी गूँज रही है, धर्म की ज्योत जल रही है तथा हजारों-हजार श्रावक-श्राविकाएँ धर्म-साधना से जुड़ रहे हैं।

आचार्य हस्ती के जन्मदिवस पर आज हम सभी मिलकर इस स्वाध्याय के अभियान को और आगे बढ़ा कर, अभिवृद्धि कर उस महान् साधक को उनके जन्मदिवस की भेंट अर्पित करें। इस स्वाध्याय के वटवृक्ष को और सिंचित कर इसके रस को और मधुर करें।

स्थानांग सूत्र के दूसरे ठाणे में कहा गया है- “दुविहे धम्मे पण्णत्ते, सुयधम्मे चेव चारित्त धम्मे य”। अर्थात् धर्म दो प्रकार का है- श्रुतधर्म व चारित्रधर्म। स्थानांग सूत्र में ही कहा गया है- ‘सुयधम्मो सज्झाओ’। अर्थात् स्वाध्याय श्रुतधर्म है। इस प्रकार स्वाध्याय को धर्म के दो मुख्य भेदों में स्थान मिला है।

## स्वाध्याय का अर्थ

1. स्वस्य अध्ययनं स्वाध्यायः। अर्थात् अपना स्वयं का अध्ययन करना, आत्मा का अध्ययन करना 'स्वाध्याय' है।
2. स्वाध्याय का एक और अर्थ है- सु+आङ्+ अध्ययन। अर्थात् सद्ग्रन्थों का सम्यक् प्रकार से अध्ययन करना स्वाध्याय है। सद्ग्रन्थों का आशय ऐसे ग्रन्थों से है, जिनके पठन-पाठन से राग-द्वेष, काम, क्रोध, मद, मत्सर आदि उपशान्त हों, षट्द्रव्यों की जानकारी हो, नव तत्त्वों की जानकारी हो, अपने आत्मस्वरूप की जानकारी हो, राग-द्वेष की ग्रंथि का भेदन हो।

धर्मशास्त्र व सद्साहित्य जिससे जीवन में तप, क्षमा व अहिंसा की ज्योति जगे, योग-जीवन उत्तरोत्तर आगे बढ़े तथा भोग-जीवन घटे, ऐसे आत्म हितकारी साहित्य का मर्यादापूर्वक, विधिपूर्वक पठन-पाठन स्वाध्याय है।

स्वाध्याय करने से ज्ञान बढ़ता है, निर्मल होता है। उत्तराध्ययन सूत्र के 32 वें अध्ययन में प्रभु महावीर ने फरमाया- 'णाणस्स सव्वस्स पगासणाओ, अन्नाणमोहस्स विवज्जणाओ' अर्थात् ज्ञान सर्वत्र प्रकाश करने वाला है, अज्ञान व मोह का विनाश करने वाला है।

## स्वाध्याय का अधिकारी

स्वाध्याय का अधिकारी साधु तो है ही, श्रावक भी इसका समानरूप से अधिकारी है। साधु-साध्वी के लिये दिन व रात्रि के प्रथम व अन्तिम प्रहर में स्वाध्याय करने का विधान उत्तराध्ययन सूत्र के 26 वें अध्ययन में किया गया है। भगवान ने आठ में से चार प्रहर सिर्फ स्वाध्यय करने का विधान किया है, इससे भी स्वाध्याय का महत्त्व स्पष्ट होता है। स्थानांग सूत्र में भी उल्लेख है कि रात्रि के पूर्व-पश्चात् प्रहर में धम्म-जागरणा से अतिशय ज्ञान की प्राप्ति होती है।

जिनशासन एवं स्थानकवासी परम्परा का मूल आधार स्वाध्याय ही है। आज जो नैतिक व चारित्रिक पतन बढ़ रहा है, उसका मूल कारण स्वाध्याय का अभाव ही है।

## स्वाध्याय के पाँच भेद

1. वाचना (Reading-Teaching)- पढ़ना, पढ़ाना, सुनना, सुनाना। ये सब वाचना के अन्तर्गत आते हैं।
2. पृच्छना (Asking)- पढ़कर, सुनकर, समझकर जो जिज्ञासा हमारे मन में जगती है, जो प्रश्न हमारे मन में उभरते हैं, उन्हें गुरु भगवन्तों, गुणवान, ज्ञानवान व्यक्तियों से पूछकर समझना, अपनी जिज्ञासा को शान्त करना, समाधान प्राप्त करना पृच्छना रूप

स्वाध्याय है।

3. **परिवर्तना (Revision-Repetition)**— जो पढ़ा है, सुना है, समझा है, याद किया है उसकी पुनः-पुनः पुनरावृत्ति करना, फेरना, गुणना आदि परिवर्तना रूप स्वाध्याय है। पुनरावृत्ति करने पर हर बार हमें कुछ न कुछ नया अर्थ उसमें से जानने को मिलेगा। परिवर्तना रूप स्वाध्याय स्मरण/याद रखने में भी सहायक बनता है।
4. **अनुप्रेक्षा (Minute Observance)**— उस पर चिन्तन-मनन करके, उसके गूढ़ रहस्य को, उसके सारभूत अर्थ को समझना अनुप्रेक्षा है।
5. **धर्मकथा (Discourse)**— जो सुना है, समझा है, उसे दूसरों को कहना, सुनाना धर्मकथा रूप स्वाध्याय है। धर्मकथा से जिनवाणी की प्रभावना होती है, धर्म का प्रसार होता है।

### स्वाध्याय से लाभ

1. स्वाध्याय से ज्ञानावरणीय कर्म क्षय होते हैं। उत्तराध्ययन सूत्र के 29 वें अध्ययन में पृच्छा है कि स्वाध्याय से जीव को क्या प्राप्त होता है—  
 सज्ज्वालणं मंते! जीवे किं जणयइ।  
 सज्ज्वालणं जीवे पाणावशण्णिज्जं कम्मं खवेइं।।  
 भगवान ने उत्तर फरमाया कि स्वाध्याय करने से जीव के ज्ञानावरणीय कर्मों की निर्जरा होती है। प्रत्येक छोटा-बड़ा जीव अनन्त ज्ञान का धारक है। लेकिन ज्ञानावरणीय कर्म के कारण वह प्रकट नहीं हो रहा है, दबा हुआ है। स्वाध्याय करने से ज्ञानावरणीय कर्म शिथिल होता है, ज्ञान निर्मल होता जाता है।
2. स्वाध्याय से ज्ञान का प्रकाश प्रज्वलित होता है। स्वाध्याय अंधेरे में उजाला है। स्वाध्याय से हेय, ज्ञेय और उपादेय की समझ आती है। नवतत्त्वों की, षट्द्रव्यों की जानकारी होती है। शास्त्रों का ज्ञान प्राप्त होता है। इनका रहस्यपूर्ण गूढ़ अर्थ समझ में आता है।
3. स्वाध्याय से ज्ञान-दर्शन-चारित्र-तप पुष्ट होते हैं, जो चारों मोक्ष के मार्ग हैं।
4. गुरु के संदेश व आदेश की पालना होगी। (आचरण ही भक्ति का सक्रिय रूप है।)
5. स्वाध्याय से संवर होगा, आस्रव रुकेगा।
6. स्वाध्याय आभ्यन्तर तप का एक भेद है, जिससे निर्जरा होती है।
7. स्वाध्याय से इन्द्रियों के विषयों के प्रति अनासक्ति जगेगी।
8. पूर्व के बांधे हुए अशुभ कर्मों की स्थिति व अनुभाग कम होंगे।
9. मन को शांति व समाधि मिलेगी।

10. चित्त की स्थिरता बढ़ेगी व चंचलता कम होगी।
11. समय का (मनुष्य जन्म का) सच्चा सदुपयोग होगा। मनुष्य जन्म के अलावा कहीं पर भी स्वाध्याय करना जीव के लिए सम्भव नहीं है।
12. स्वयं के दोषों को जानने का, समझने का अवसर मिलेगा। जानकर, समझकर उनके त्याग की ओर अग्रसर होंगे।
13. समभाव गुण का विकास होगा।
14. सहनशीलता गुण का विकास होगा।
15. तनावों से मुक्ति मिलेगी।
16. सभ्य समाज का निर्माण होगा।
17. स्व-पर का कल्याण होगा।
18. ज्ञान की वृद्धि होगी, ज्ञान की निर्मलता बढ़ेगी।
19. शास्त्रों का, थोकड़ों का, तत्त्वों का ज्ञान प्राप्त होगा।
20. आगमों का, ग्रन्थों का संरक्षण होगा, सम्भाल होगी।
21. स्वाध्यायी बनकर पर्युषण पर्व में सेवा देने का अवसर प्राप्त होगा।
22. बुढ़ापे का सच्चा सहारा होगा। उत्तराध्ययन सूत्र के 19 वें अध्ययन में कहा गया है- 'जम्मं दुक्खं, जरा दुक्खं, रोगाणि-मरणाणि य' अर्थात् जन्म, मरण, रोग व बुढ़ापा ये चार दुःख जीव के सबसे कठिन हैं, भारी हैं। जन्म व मरण के समय जीव को अति तीव्र वेदना होती है, लेकिन वह अल्पकालिक होती है। लेकिन रोग व बुढ़ापे का दुःख सामान्यतया दीर्घकालिक होता है। रोग का तो इलाज भी संभव होता है, पर बुढ़ापे का तो कोई इलाज भी नहीं होता। वह तो अवस्था जन्य है। बुढ़ापे में जब इन्द्रिय शिथिल हो जाती है, हाथ-पैर की शक्ति क्षीण हो जाती है, आँखों से दिखाई नहीं देता है, कानों से सुनाई कम देता है, पाचनशक्ति कमजोर हो जाती है, ऐसे समय में परिवार व समाज के सदस्य भी तिरस्कार करने लगते हैं। आज हमारे परिवारों में कितने हमारे पारिवारिकजन सेवा करते हैं या करेंगे यह बात हमसे छुपी हुई नहीं है। ऐसे बुढ़ापे के समय में पूर्व में किया हुआ स्वाध्याय ही हमारा सच्चा सहारा बन सकता है। स्वाध्याय करके जो ज्ञान हमने अर्जित किया है उसे नित्य पुनरावर्तन कर हम अपने बुढ़ापे का समय गुजार सकते हैं। साथ ही हमारे स्वाध्याय से अर्जित ज्ञान से हम यह जान सकते हैं कि मेरा यह बुढ़ापे का दुःख मेरे स्वयं के स्वकृत कर्मों का ही फल है। ऐसा समझकर हम बुढ़ापे में दूसरों पर दोषारोपण नहीं करके अपने समभाव व शान्ति को बनाये रख सकते हैं व बुढ़ापे के दुःख को सरलता से गुजार सकते हैं। इस तरह से बुढ़ापे का

एकमात्र सहारा स्वाध्याय ही है। पूज्य आचार्य हस्ती ने भी कहा है-

बिन स्वाध्याय ज्ञान नहीं होगा, ज्योति जगाने को।

राग-द्वेष की गांठ गले नहीं, बोधि मिलाने को।

जीवादिक स्वाध्याय से जानो, करणी करने को।

बन्ध-मोक्ष का ज्ञान करो, भव भ्रमण मिटाने को।

जिनवाणी का सदा सहारा, श्रद्धा रखने को।

बिन स्वाध्याय न संगत होगी, भव दुःख हरने को॥

अगर ज्ञान की ज्योति जगानी है तो धर्मशास्त्रों का स्वाध्याय करना होगा। अन्यथा ज्ञान की ज्योति नहीं जगेगी, राग-द्वेष की गांठ नहीं टूटेगी, सम्यक्त्व की प्राप्ति नहीं होगी।

स्वाध्याय से मन में शान्ति, वाणी में मधुरता व तन में समाधि आती है। सभी प्रकार की भ्रान्तियों का निवारण होता है। स्वाध्याय आत्मा की खुराक है। अपने जीवन को सामायिक व स्वाध्याय से सुसज्जित व सुशोभित करें। जैसे शरीर के लिए भोजन व पानी जरूरी है वैसे ही आत्मा के लिये सामायिक व स्वाध्याय जरूरी है।

अतः प्रत्येक व्यक्ति स्वाध्याय प्रवृत्ति से जुड़े, यही आचार्य हस्ती का संदेश था और है। स्वाध्याय की प्रवृत्ति में जितनी प्रगति होगी, उतना ही जीवन सुखी बनेगा, साथ ही परलोक भी सुधरेगा। अनादिकाल से हम पराध्याय में लीन हैं, इसी कारण से सच्चे सुख से अभी तक वंचित हैं। स्वाध्याय सच्चे सुख का साधन है। अतः हमें अधिक से अधिक समय स्वाध्याय में लगाना चाहिये। प्रमाद घटायें, स्वाध्याय बढ़ायें। आठ में से चार प्रहर स्वाध्याय करना चाहिये, यानी 24 घण्टों में से 12 घण्टे।

स्वाध्याय करते समय ध्यान रखने योग्य बिन्दु-

1. अस्वाध्याय काल में स्वाध्याय नहीं करना।
2. स्वाध्याय काल में स्वाध्याय जरूर करना।
3. असज्जाय के दोषों को टाल कर स्वाध्याय करना।
4. स्वाध्याय करने के पूर्व एवं पश्चात् देव-गुरु वंदना अवश्य करना। गुरुदेव-गुरुणीजी मौजूद हों तो उन्हें वन्दना करके स्वाध्याय करना चाहिए यदि वे न हों तो अरिहन्त एवं सिद्ध देव को वन्दना करके स्वाध्याय प्रारम्भ करना चाहिए। स्वाध्याय पूर्ण होने पर पुनः इसी प्रकार गुरु अथवा देव को वन्दना करनी चाहिए। इससे विनय गुण पुष्ट होगा एवं स्वाध्याय लाभकारी होगा।
5. स्वाध्याय देव-गुरु की आज्ञा लेकर करना।

6. स्वाध्याय विनय भाव के साथ करना।
7. ज्ञान व शास्त्रों के प्रति अहोभाव रखना।
8. ज्ञान व ज्ञानी की आशातना नहीं करना।
9. स्वाध्याय सामग्री की समय-समय पर प्रतिलेखना करना।
10. स्वाध्याय को निर्जरा व मोक्ष का साधन समझना।
11. स्वाध्याय से प्राप्त ज्ञान पर अहंकार नहीं करना।
12. स्वाध्याय यथोचित तपस्या के साथ करने का प्रयास करना। रसलोलुपता पर नियन्त्रण रखना एवं गरिष्ठ भोजन का निषेध करना उचित है।
13. स्वाध्याय में उच्चारण शुद्धि एवं हीनाक्षर-अत्यक्षर दोष टालने का विशेष ध्यान रखना।

### स्वाध्याय विस्तार में सहायक बिन्दु-

1. कनिष्ठ स्वाध्यायियों का सहयोग कर आगे बढ़ाना।
2. नये-नये स्वाध्यायी तैयार करने का प्रयास करना, प्रेरणा करना।
3. स्वाध्याय शिविरों में भाग लेना एवं उसमें अध्ययन कराने का प्रयास करना।
4. पर्युषण पर्व में सेवा संभवतया अवश्य देना।
5. स्वाध्याय संघ को पूर्ण सहयोग देना।
6. स्वाध्याय करके नई-नई जानकारी खोजकर उसे दूसरों को भी अवगत कराना।
7. नये स्वाध्यायी बनाने की जिम्मेदारी पुराने स्वाध्यायी की ही है। कम से कम एक नया स्वाध्यायी अवश्य बनाना जो आपकी स्वाध्यायी परम्परा को आपके पश्चात् भी जीवन्त रख सके, कायम रख सके, स्वाध्याय के वटवृक्ष को हराभरा रख सके।
8. संभव हो तो स्वाध्याय संघ के प्रचार-प्रसार कार्यक्रमों में समय का योगदान करना।
9. तन-मन-धन से स्वाध्याय व स्वाध्यायियों की सेवा करना।

-पूर्व महामंत्री, अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ,  
467-ए, 7 वीं 'ए' रोड, सरदारपुरा, जोधपुर-342003 (राज.)

### (सम्पादकीय का शेषांश)

इस प्रकार जैन एवं बौद्ध धर्म-दर्शनों में अनेकविध समानताएँ हैं तथा कुछ भेद भी हैं। बौद्ध तत्त्वमीमांसा में जहाँ वस्तु को क्षणिक स्वीकार किया गया है, वहाँ जैन दर्शन में वस्तु को नित्यानित्यात्मक माना गया है। जैनदर्शन में द्रव्यार्थिक नय से वस्तु नित्य है तथा पर्यायार्थिक नय से अनित्य है। जैनदर्शन में प्रभु महावीर की समाधान शैली में उन प्रश्नों के भी उत्तर दिए गए हैं, जिनके उत्तर बुद्ध नहीं देते।

## नव वर्ष सभी को शुभ हो

श्री मगनचन्द जैन

नव वर्ष सभी को शुभ हो यही भावना है।  
समस्त जग-जीव सुखी हों यही कामना है॥  
नये साल में कुछ नया करने का उत्साह जगाइए,  
प्रमाद त्याग सावचेत हो सुमार्ग पर बढ़ते जाइए,  
जो बीत गया उसे भूलिए वर्तमान को सँवारिए,  
स्वयं के दोष-दुर्गुणों को हटाने का पुरुषार्थ कीजिए,  
हृदय में करुणा हो, मन शुद्ध हो यही साधना है।  
समस्त जग-जीव सुखी हों, यही कामना है॥

नव वर्ष सभी.....॥1॥

रोग-ग्रस्त, भयभीत, भूखे जनों की ओर ध्यान दीजिए,  
तन-मन-धन से दें सहारा उन्हें सदा सुख पहुँचाइए,  
घबराओ मत, ऐसा कहकर उनका उत्साह बढ़ाइए,  
उनके उदास चेहरे खिल उठें, वैसा पाठ पढ़ाइए,  
मुसीबत में सबका सहारा बनो, यही प्रार्थना है।  
समस्त जग-जीव सुखी हों, यही कामना है॥

नव वर्ष सभी.....॥2॥

पीड़ित मानवता की सेवा के भाव संजोइए,  
स्वयं सुख पाना चाहते हो तो इसे अपनाइए,  
परोपकार करने के पावन विचार अन्तर में लाइए,  
भूले-भटके भाइयों को सहारा दे आगे चलाइए,  
'पर हित सरिस नहीं भाई' यही मानना है।  
समस्त जग-जीव सुखी हों, यही कामना है॥

नव वर्ष सभी.....॥3॥

प्रासंगिक

## क्या बाल दीक्षा पर कानून का हस्तक्षेप उचित है?

डॉ. चंचलमल चोरडिया

समय-समय पर बाल दीक्षा और पंडितमरण (संथारे) को लेकर जनसाधारण के मन में उनके औचित्य के बारे में विवादास्पद चर्चायें होती हैं। इन विवादों का समाधान न्यायालय से ढूँढ़ने का प्रयास किया जाता है। परन्तु क्या ऐसे कोई भी धार्मिक अनुष्ठान वर्तमान कानून के परिप्रेक्ष्य में विचारणीय हैं, चिन्तन का विषय है? धर्म क्या है? इसका हमारे जीवन से क्या सम्बन्ध है? इसकी पालना कब, क्यों और कैसे करनी चाहिये? इस सम्बन्ध में सर्वज्ञों द्वारा रचित शास्त्र क्या निर्देश देते हैं? जैन दीक्षा क्या है? इसकी भूमिका, स्वरूप और ग्रहण करने की विधि क्या है? बाल दीक्षाओं पर मानवाधिकारों के उल्लंघनों का आक्षेप कौन और क्यों लगाते हैं? उनकी आशंकाओं को निर्मूल करने के लिए शास्त्रों में क्या प्रावधान हैं? इन सब प्रश्नों पर हमें शान्तचित्त होकर अनेकान्त दृष्टिकोण से चिन्तन कर निर्णय करना होगा। अन्यथा हम समस्या का समाधान करने के स्थान पर नई-नई समस्याओं को उत्पन्न करने में भागीदार बन जायेंगे। भारत एक धर्मनिरपेक्ष राष्ट्र है, जिसमें प्रत्येक नागरिक को अपनी आस्था के अनुरूप धर्म पालन करने की पूर्ण स्वतन्त्रता का मूल अधिकार है। बाल-दीक्षा उस अधिकार के उपयोग में कितनी सहायक अथवा बाधक है, पूर्वाग्रह छोड़ कर चिन्तन करने की अपेक्षा है।

### मानव जीवन का लक्ष्य

मानव जीवन का लक्ष्य क्या है और उसको कैसे प्राप्त किया जा सकता है? मैं कौन हूँ? कहाँ से आया? कहाँ जाऊँगा और कैसे जाऊँगा? क्या मैं अपने लक्ष्य को प्राप्त करने की दिशा में बढ़ रहा हूँ? ये प्रश्न जिनके मन और मस्तिष्क में निरन्तर उठते हैं वे ही अपने सही लक्ष्य को प्राप्त कर सकते हैं। अधिकांश व्यक्ति तो प्रायः अपने सही लक्ष्य के बारे में कभी चिन्तन तक नहीं करते, तब निर्धारण का तो प्रश्न ही कहाँ? बहुत से व्यक्ति इस जगत् की भौतिक चकाचौंध में ऐसे पराधीन हो जाते हैं कि वे जनसाधारण का अन्धानुकरण कर गलत लक्ष्य बना लेते हैं तथा उसी की प्राप्ति में अपना जीवन बर्बाद कर देते हैं। इसी कारण भगवान ने मनुष्य के लिये चार बातें दुर्लभ बतलाईं। मनुष्य जीवन की प्राप्ति, पाँचों इन्द्रियों का सशक्त मिलना, भगवान की वाणी सुनने अथवा पढ़ने का संयोग तथा उसके अनुरूप आत्मोन्नति करने का सम्यक् पुरुषार्थ। मानव जीवन मिलने के बावजूद यदि ये संयोग नहीं

मिलते हैं तो अमूल्य मानव जीवन व्यर्थ ही चला जाता है। मानव जीवन में ही आत्मा का सर्वोच्च विकास संभव होता है। वह नर से नारायण, भक्त से भगवान और आत्मा से परमात्मा बनने में सक्षम है। जो साधन, साध्य और आचरण उस लक्ष्य की प्राप्ति में जितने-जितने सहायक होते हैं, वास्तव में वे ही कार्य करणीय होते हैं। उनके करने में ही मानव की क्षमताओं का अधिकतम सही विकास होता है। मनुष्य का शारीरिक और मानसिक विकास तब तक संभव नहीं, जब तक आध्यात्मिकता जीवन में नहीं आती। इसके विपरीत जो आचरण इस लक्ष्य की प्राप्ति में बाधक होते हैं, वे बुद्धिमान व्यक्ति के लिये अकरणीय होते हैं, त्याज्य हैं। जो मानव जीवन को भौतिक उपलब्धियों की अंधी दौड़ में गंवा नीच गति को आमन्त्रित करते हैं उनका प्रयास अज्ञानवश अमूल्य हीरे को पत्थर समझ चन्द पैसों में बेचने के समान होता है, लाखों रुपये देकर चाय पीने के समान अबुद्धिमत्ता पूर्ण होता है। जो चाय चन्द पैसों में मिल जाती है, उस हेतु लाखों रुपये देने वाला व्यक्ति बुद्धिमान कैसे कहा जा सकता है ?

**धर्म क्या है ?**

धर्म के नाम पर आज मानव को बांटा जा रहा है। परन्तु धर्म क्या है ? क्या उपासना पद्धति और साम्प्रदायिक मर्यादाओं का पालन मात्र ही धर्म होता है ? क्या स्वार्थ, लोभ एवं अधिकारों की लड़ाई का धर्म से सम्बन्ध है ? क्या धर्म से विमुख होना संभव है ? अंग्रेजी में धर्म को Religion कहते हैं। जिसका मतलब होता है फिर से जोड़ना। अर्थात् जो आत्मा को परमात्मा से पुनः जोड़ दे, वह धर्म होता है। धर्म आत्मा का स्वभाव है। शरीर नश्वर है और आत्मा अजर-अमर है। धर्म आत्मा पर आये कर्मों के आवरण दूर कर उसे निर्मल, पवित्र एवं शुद्ध बनाने की प्रक्रिया है।

मनुष्य में वासना और विवेक दोनों तत्त्व होते हैं। फिसलना आसान होता है। ऊपर चढ़ना कठिन होता है। वासना पर विवेक का अंकुश ही धर्म का केन्द्र होता है। कोई भाग्यशाली ही ऐसे कठिन पथ पर चलने का मानस बना आगे बढ़ सकता है। यदि कोई उस पथ पर न चल सके तो यह उसकी कमजोरी, विवशता तथा दृढ़ मनोबल के अभाव का द्योतक होता है। प्रत्येक व्यक्ति भारत का राष्ट्रपति अथवा प्रधानमंत्री बनना चाहता है, परन्तु सभी क्यों नहीं बन पाते, इसका समाधान तर्क से नहीं मिल सकता। ठीक उसी प्रकार मोक्ष की चाहना करने के बावजूद विरले साधक ही उस लक्ष्य को प्राप्त कर पाते हैं।

**दीक्षा क्या है ?**

दीक्षा जीवन भर पाप से मुक्त होने की शिक्षा है। प्राणिमात्र को अभयदान देने वाली सर्वश्रेष्ठ दिनचर्या है। आश्रवों से बचकर संवर और निर्जरा का राज मार्ग है। अनुकूलताओं

का त्यागकर प्रतिकूलताओं को सहन करने का प्रशिक्षण है। राग-द्वेष रूप कषायों को मन्द कर अशुभ से शुभ में आने तथा प्रमाद छोड़कर मोक्ष मार्ग में बढ़ने का सम्यक् पुरुषार्थ है। दीक्षा कोई प्रलोभन की वस्तु नहीं, इन्द्रियों ओर कामवासनाओं के पोषण का माध्यम नहीं, परन्तु अपने आपको संयमित, नियमित एवं अनुशासित रखने की साधना है। दीक्षा हेतु न तो किसी को अन्धकार में रखा जाता है और न कारागार में। व्यक्ति जब चाहे अपने को उस परिधि से स्वतन्त्र कर सकता है। दीक्षा का सम्बन्ध मन की अन्तर्मुखी प्रवृत्ति से होता है। यह आत्मा का आत्मा से परिचय कराती है।

### श्रमणाचार की नियमावली एवं दीक्षा हेतु आवश्यक शर्तें

वास्तव में जैन साधु का जीवन आज के भौतिकवादी विश्व का सबसे बड़ा आश्चर्य है। राकेट के युग में भी जैन साधु नंगे पाँव पैदल चलते हैं। बालों का लोंच करते हैं। अपने पास एक पैसा नहीं रखते, अपना कोई घर नहीं बनाते। वे अहिंसा, सत्य, अचौर्य, ब्रह्मचर्य एवं अपरिग्रह जैसे महाव्रतों का तीन करण तीन योग से पालन करते हैं, पाँच समिति तीन गुप्ति रूपी अष्ट प्रवचनमाता की आराधना करते हैं, इन्द्रियों और मन पर पूर्ण नियन्त्रण और संयम रखते हैं, एकेन्द्रिय जैसे सूक्ष्म जीवों से लेकर पंचेन्द्रिय तक के जीवों की विराधना से यथा संभव बचने का प्रयास करते हैं। 22 प्रकार के कठिन परीषहों को सहन करते हैं, क्रोध, मान, माया और लोभ से बचने हेतु सजग रहते हैं, 42 दोषों को टालकर गृहस्थियों के घर से भिक्षा लेते हैं आदि अनेक नियमों में आबद्ध जीवन जीते हैं। फिर भी उनका जीवन शान्त एवं तनाव मुक्त होता है, उनकी मस्ती कुछ निराली ही होती है। किसी कवि ने ठीक ही कहा है—

चाह गई चिन्ता मिटी, मनवा बेपरवाह।

जिस्को कुछ नहीं चाहिये, वही शहनशाह।।

मानव जीवन की सफलता साधु जीवन को स्वीकारने में ही है। साधु बाह्य सुख-सुविधाओं का तो त्याग करता ही है, परन्तु अन्तरंग समृद्धि को भी हासिल करता है। वह तो कोड़ी को त्याग कर रत्नों को पाने का व्यापार करता है। पूर्व जन्म के पुण्योदय से ही किसी भाग्यशाली को ऐसे सुपथ पर चलने हेतु वैराग्य उत्पन्न होता है। तब वह अपने गुरु के पास रहकर अपनी क्षमताओं को कसौटी पर कसने का प्रशिक्षण प्राप्त करता है। इतना सब कुछ होने के बावजूद उसे गुरु तब तक दीक्षित नहीं कर सकता जब तक उसके अभिभावक उस पथ पर चलने के लिये आज्ञा नहीं देते। सच्चे वैरागी को कभी-कभी अपने अभिभावकों से आज्ञा पाने के लिये पर्याप्त संघर्ष करना पड़ता है। ऐसे दृष्टान्तों से शास्त्र भरे पड़े हैं। बालक अतिमक्त कुमार जो लघुवय में भगवान महावीर के पास दीक्षित हुआ अपने माता-

पिता से दीक्षा की आज्ञा पाने के लिये उसने जो तर्क दिया, वह आज भी जनसाधारण के लिये पहेली बना हुआ है। उस छोटे से बालक को माता-पिता ने आज्ञा से पूर्व जब साधुचर्या की कठोरता से अवगत कराया तब अतिमुक्त कुमार ने कहा- “जिसे मैं जानता हूँ उसे नहीं जानता तथा जिसे नहीं जानता उसे मैं जानता हूँ।” अर्थात् मैं यह जानता हूँ जो जन्मा है वह एक दिन अवश्य मरेगा, परन्तु यह नहीं जानता कौन, कब और कैसे मरेगा? इसी प्रकार मैं यह जानता हूँ कि अच्छे कर्मों का फल अच्छा मिलता है, परन्तु यह नहीं जानता कि वह कब, कहाँ, कैसे मिल सकता है। क्या आयु का कोई भरोसा है? अतः सर्वज्ञों ने दीक्षा के लिये आयु की कोई सीमा का निर्धारण नहीं किया। दीक्षा का आयोजन सबकी सहमति से समाज की साक्षी में होता है, अतः उसको अनुचित कहना उचित नहीं। पहले साधु को साधारण दीक्षा दी जाती है और जब दीक्षार्थी साधुचर्या के कठिन मार्ग पर चलने में सक्षम हो जाता है तब ही सम्पूर्ण दीक्षा का शास्त्रों में प्रावधान है, जिसे बोलचाल की भाषा में हम बड़ी दीक्षा कहते हैं।

### मानवाधिकार कानून का उद्देश्य

इस कानून के अन्तर्गत मानव पर होने वाले अत्याचारों के प्रति संरक्षण का प्रावधान है। परन्तु आजकल सस्ती लोकप्रियता पाने के लिये बालदीक्षा अथवा पंडित मरण (संधारा) जैसे पावन प्रसंगों पर अपने आपको मानवाधिकारों के हितैषी मानने वाले कानून के उल्लंघनों का होहल्ला मचाते हैं। साध्वाचार और दीक्षा के बारे में, उसके मर्म के बारे में उनको जानकारी नहीं होती और विरोध करने लग जाते हैं। आगम साक्षी है हजारों वर्ष पूर्व बाईसवें तीर्थंकर अरिष्टनेमी नाथ जी ने श्री कृष्ण के लघु भ्राता गजसुकुमाल को 16 वर्ष की आयु में दीक्षा दी। भगवान महावीर ने अतिमुक्त कुमार को बाल्यावस्था में दीक्षा दी। आचार्य शय्यम्भव ने अपने पुत्र मनक को लघुवय में दीक्षा दी और जब उन्होंने अपने ज्ञान से उसकी लघुवय को जाना तो साध्वाचार के सार रूप में दशवैकालिक सूत्र की रचना की। हेमचन्द्राचार्य, स्वर्गीय आचार्य हस्तीमल जी तथा श्रमण संघ के स्वर्गीय आचार्य श्री देवेन्द्र मुनि जी, साधुमार्गी संघ के आचार्य स्वर्गीय श्री नानालाल जी, तेरापन्थी समाज के गणाधिपति स्वर्गीय श्री तुलसी जी जैसे अनेक जैनाचार्य हुए हैं जो न केवल लघु वय में दीक्षित हुए, अपना और प्राणिमात्र का भी जनकल्याण किया। उसी के परिणाम स्वरूप आज के इस भौतिक युग में भी ये परम्परायें कायम हैं।

बाल्यकाल ही संस्कार, जीवन-निर्माण और विकास का सर्वोत्तम समय होता है। जो संस्कार इस आयु में मिलते हैं, जितना अध्ययन इस आयु में होता है, जितनी स्मरणशक्ति इस आयु में तीव्र होती है, उतनी बाद में नहीं होती। अतः जिन्हें इस आयु में वैराग्य की

भावना बलवती होती है वह उनके पूर्व पुण्य का प्रभाव ही समझना चाहिये। अतः आध्यात्मिक ज्ञान की प्राप्ति के लिये भी यही अवस्था सर्वश्रेष्ठ होती है जबकि विभिन्न भाषाओं तथा शास्त्रों का अध्ययन और शुद्ध उच्चारण सरलता पूर्वक सीखा जा सके। आज तक जितने भी महापुरुष एवं सफल आचार्य हुए हैं, उनमें अधिकांश बाल्यकाल में ही दीक्षित हुए हैं। 30-35 वर्ष के व्यक्ति को पाठशाला पढ़ने भेजो तो भला वह कैसे अध्ययन कर सकेगा। ज्ञानोपार्जन और विकास बचपन में ही हो सकता है, बाद में नहीं। साध्वाचार का भी अपने आप से ही पालन होता है। भगवान ने यही निर्देश दिया—“अहासुहं देवाणु-प्यिया अर्थात् ‘हे देवताओं के प्रिय मानव, जैसे सुख हो वैसे करो।’ सुख किसमें है संसार त्याग में अथवा भोग में, इसका निर्णय तुम अपनी विवेक बुद्धि और प्रज्ञा से करो। भावना सदैव एक जैसी नहीं रहती। वयस्क होने के पश्चात्, गृहस्थ जीवन में प्रवेश करने के पश्चात् इन्द्रियों और मन पर नियन्त्रण रखना आसान नहीं। मक्खन को अग्नि का सम्पर्क मिले और वह न पिघले, असंभव है। रक्षा सेनाओं में अवयस्क आयु में ही भर्ती की जाती है। क्या यह मानवाधिकारों का हनन नहीं है? जिसमें व्यक्ति को मरने मारने का प्रशिक्षण दिया जाता है।

एक बार सांसारिकता का रंग चढ़ने के पश्चात् मन को संयमित रखना बहुत कठिन होता है। अतः दीक्षा के लिये बाल्यकाल ही सर्वश्रेष्ठ एवं उपयुक्त आयु होती है। आशंकाओं के कारण बाल दीक्षा का विरोध कदापि न्याय संगत नहीं। हमारी कौनसी सभी इच्छाएँ पूर्ण हो जाती हैं? संकल्पबद्ध होने से व्यक्ति गलत राह से सहज बच जाता है। साधु समाचारी/ नियमावली इतनी वैज्ञानिक और सनातन है कि उसका पालन करने वाला युवा अवस्था में शारीरिक परिवर्तन से होने वाली वासनाओं पर आसानी से नियन्त्रण रख सकता है। आध्यात्मिक ऊर्जा हेतु ब्रह्मचर्य का पालन आवश्यक होता है। साधुचर्या में उसकी रक्षा के लिए सुरक्षा कवच के रूप में तो बाड़ों का शास्त्रों में प्रावधान दिया गया है। चलने वाला कभी-कभी गिर जाता है। इस भय से कितने व्यक्ति चलना छोड़ते हैं? बहुत सी महिलाएँ शादी के बाद विधवा हो जाती हैं। विद्यार्थी परीक्षा में फ़ैल हो जाते हैं। व्यापार में घाटा लग जाता है। फिर भी विद्यार्थी पढ़ना और व्यापारी व्यापार करना नहीं छोड़ते, एवं अधिकांश महिलाएं शादी करना नहीं छोड़तीं। परन्तु आध्यात्मिक विषयों पर हमारा चिन्तन इतना व्यापक नहीं होता। हम बिना बात आशंकाओं में जीते हैं। हम अपने बच्चे को जब तक वह सक्षम नहीं हो जाता, व्यापार में पूर्ण जवाबदारी नहीं सौंपते, परन्तु धर्म के क्षेत्र में बिना जानकारी के अधिकारपूर्वक दृढ़ता के साथ अपना मन्तव्य अभिव्यक्त करते संकोच नहीं करते। मानवाधिकारों के हितों की रक्षा करने का दम्भ भरने वालों का आचरण ऐसा ही होता है। उनका कर्तव्य है कि जिस परम्परा में बाल दीक्षा हो रही है उसको भली प्रकार

जानना और समझना चाहिये कि अभी तक उस परम्परा में कितनी बाल दीक्षाएँ हुईं और उनका क्या परिणाम रहा ?

मानवाधिकार के हितैषियों को अश्लील फिल्मों के प्रभाव पर, दुर्व्यसनों के विज्ञापनों पर, शराब, बीड़ी, सिगरेट, गुटखे जैसी प्रवृत्तियों को रोकने, महिलाओं के अर्द्धनग्न दृश्यों को दर्शाने वाले होर्डिंगों पर ध्यान देकर इन्हें बंद करने हेतु कदम उठाना चाहिए। बच्चों को दो ढाई साल की उम्र में पाठशाला भेजने, टीकाकरण अभियान के नाम पर मनुष्य की शारीरिक क्षमताओं को क्षीण करने वाले अभियानों, सोने के समय देर रात टी.वी. के प्रसारणों जैसे कार्यक्रमों को अपने कार्यक्षेत्र में लेना चाहिये। उनका ऐसी गलत, हानिकारक प्रवृत्तियों को रोकने के लिये कानून के सहयोग की ओर ध्यान नहीं जाता।

किसी व्यक्ति की धार्मिक भावना को ठेस पहुँचाने के दुष्परिणामों से हम भलीभांति परिचित हैं। अयोध्या में विवादित ढांचा गिराने मात्र से भारतीय राजनीति में भूचाल आ गया। स्वर्णमंदिर में सेना भेजने के आदेश के परिणाम स्वरूप भूतपूर्व प्रधानमंत्री इन्दिरा गांधी को अपने जीवन से हाथ धोना पड़ा। स्पष्ट है इस भावनाप्रधान देश में ऐसे संवेदनशील विषयों को उछालना, तूल देना नई-नई समस्याओं को पैदा करेगा।

क्या ऐसे मानवाधिकार प्रेमी जो अवयस्क साधु बन गये हैं, उनको गृहस्थ बनाने के लिये कानून का सहारा लेंगे? क्या हमारे न्यायालय साधुओं को उनकी भावना के विपरीत आचरण करने को बाध्य कर सकते हैं? क्या 18 वर्ष की आयु होते ही स्वतः परिपक्वता आ जाती है? क्या 18 वर्ष की आयु पूर्ण होने से पहले कोई नहीं मरता? इन सभी प्रश्नों पर अनेकान्त दृष्टि से चिंतन करने के पश्चात् न्यायालयों को निर्णय लेना होगा, अन्यथा हमारे निर्णय पूर्वाग्रहों से ग्रसित हो सकते हैं, क्योंकि न्यायाधीश सर्वज्ञ नहीं होते। अतः भविष्य के लिये उठाई गई आशंकाओं के प्रति स्पष्ट अभिव्यक्ति नहीं कर सकते।

**जैन न्याय-व्यवस्था वर्तमान कानून की अपेक्षा अधिक तर्कसंगत**

जैन धर्म में आध्यात्मिक कानून का भावनात्मक पक्ष सूक्ष्म एवं गहन है। उसका उल्लंघन करने पर कर्म-बन्धन के रूप में दण्ड का प्रावधान प्रतिपादित किया गया है। कानून भंग करने की मुख्यतः चार स्थितियां होती हैं- अतिक्रम (Intention) अर्थात् कानून विरुद्ध सोचना, नियम भंग करने की भावना जागृत होना। दूसरा व्यतिक्रम (Determination) अर्थात् उस भावना में दृढ़ता लाना। तीसरा अतिचार (Preparation) अर्थात् कानून को भंग करने हेतु आवश्यक तैयारी करना, साधन जुटाना और चौथा (Implementation) अर्थात् कानून को भंग करना। परन्तु वर्तमान सरकारी कानून प्रायः अनाचार के बाद ही प्रभावी होता है। विशेष परिस्थितियों में ही अतिचार स्तर

(Preparation Level) तक उसकी पहुँच होती है। दूसरी बात दण्ड का विधान सनातन सत्य के सिद्धान्तों पर आधारित होता है। अच्छे कर्मों का फल सुखद या अच्छा मिलता है और अशुभ कर्मों का फल दुःखद अथवा बुरा होता है। वर्तमान कानून भावनात्मक सत्य अथवा तथ्य की अपेक्षा तर्क एवं प्रस्तुतीकरण से ज्यादा प्रभावित होता है। अतः अपराधी दण्ड से बच भी सकता है तो कभी-कभी निरपराधी भी दण्डित हो सकता है। तीसरी बात, फैसला न्यायाधीशों की मानसिकता, संस्कारों अथवा योग्यता पर आधारित होता है, जो न सर्वज्ञ होते हैं और न अनेकान्त दृष्टिकोण वाले। अतः धार्मिक मान्यताओं में कानून का हस्तेक्षप अनुचित है। दो और दो मिलकर चार ही होते हैं। करोड़ों व्यक्तियों के कहने से पाँच नहीं हो जाते। पारस को पत्थर कहने से वह पत्थर नहीं बन जाता है। अतः धर्म का आचरण कब, क्यों और कैसे हो यह कानून का विषय नहीं है। बाल-दीक्षा जैसे प्रसंगों पर यदि कहीं जबरदस्ती हो रही हो, दीक्षार्थी अथवा उसके अभिभावक कानून का सहयोग मांगें तो कानून को अवश्य सक्रिय होकर मदद करनी चाहिये।

जिस प्रकार रत्नों की परीक्षा के लिये जौहरी का परामर्श एवं रोगी के लिये डॉक्टर की राय महत्त्वपूर्ण होती है, उसी प्रकार ऐसे प्रसंगों पर समाज के विभिन्न आचार्यों का परामर्श ही उचित निर्णय दिलाने में सक्षम हो सकता है।

### बाल-दीक्षा हेतु सजगता आवश्यक

बाल-दीक्षा का विरोध करने वालों का सोच है कि बाल दीक्षा से बालक पर मनोवैज्ञानिक रूप से दुष्प्रभाव पड़ता है। वयस्क होने से पहले उसमें स्वयं निर्णय लेने की क्षमता नहीं होती। आज के इस भोग-प्रधान युग में युवावस्था आने पर काम-वासना पर विजय पाना कठिन है। ऐसे समय पुनः गृहस्थाश्रम में जाने की बदनामी से साधक तनावग्रस्त रहता है जो उसकी स्वतन्त्रता का अपहरण है। परन्तु ये आरोप निराधार हैं। अवयस्कों की दीक्षा अपराध है तो क्या अवयस्कों को भोग एवं भौतिक लोलुपता की शिक्षा देना भी अपराध माना जाना चाहिए। दीक्षा कोई हौवा अथवा कैद नहीं जो जबरदस्ती किसी को धकेल दिया जाए और फिर वह जीवन में बाहर निकल ही नहीं सके। ज्ञान, विवेक और संयम के अंकुश से श्रमणाचार की समाचारी में मर्यादित, अनुशासित जीवन पद्धति और परीषद सहन करने हेतु जो कसौटियाँ हैं उनका पालन कर संत-जीवन को संयमित, नियमित और नियन्त्रित रखा जा सकता है। आवश्यकता है दीक्षा से पूर्व वैराग्य भावना, श्रमणाचार के विधि-विधानों का पूर्ण प्रशिक्षण एवं शास्त्रों के गूढ़ रहस्यों को जानने तथा आत्म-विकास की भावना को बलवती करने की। परिवार नियोजन की आवश्यकता वाले इस युग में ऐसे व्यक्तियों को प्रेरणा देनी चाहिए जो स्वेच्छा से जीवन भर ब्रह्मचर्य व्रत

का पालन कर जनसंख्या वृद्धि में योगदान न दें।

उपर्युक्त चर्चा का सारांश यही है कि भारत के प्रत्येक नागरिक को अपने धर्म को मानने, उसका पालन करने तथा बिना किसी को कष्ट पहुँचाए उसे बढ़ाने का पूर्ण अधिकार है। किसी भी व्यक्ति को संविधान के तहत मूल अधिकारों से वंचित नहीं किया जा सकता। न्यायालय व्यक्ति के धर्म-पालन की स्वतन्त्रता पर रोक नहीं लगा सकता। न्यायपालिका को तो इन अधिकारों को लागू करने में सहायता करनी चाहिये न कि बाधा पहुँचाने में अपना सहयोग। बाल-दीक्षा से न तो किसी वैधानिक अधिकारों का हनन होता है और न अन्य व्यक्तियों अथवा समाज के लोगों पर कुप्रभाव ही पड़ता है। दीक्षा जैसे संकल्पों से तो प्रामाणिकता, व्यवहार एवं विचार शुद्धि तथा समता को प्रोत्साहन ही मिलता है। कानून और सरकार को ऐसे विवादों में नहीं उलझना चाहिये। क्योंकि वर्तमान जीवन अंतिम जीवन नहीं और वर्तमान कानून जीवन का अंतिम सत्य नहीं। प्रकृति का कानून सनातन सत्य पर आधारित होता है। पाप का फल तो भोगना ही पड़ता है। सीता के जब कर्म उदय में आये तो मर्यादा पुरुषोत्तम कहलाने वाले राम और लक्ष्मण जैसे आज्ञाकारी देवर भी बदल गये। अतः बाल-दीक्षा जैसी प्रवृत्तियों पर भविष्य की आशंकाओं के आधार पर कानून का हस्तक्षेप सर्वथा अनपेक्षित है।

-चोरडिया भवन, जालोरी गेट के बाहर, जोधपुर-342003 (राज.)

E-mail: cmchordia.jodhpur@gmail.com, Website: www.chordiahealthzone.in

### स्वास्थ्य-आलेख प्रश्नोत्तर प्रतियोगिता का परिणाम

जिनवाणी के नवम्बर-2015 के अंक में 'स्वास्थ्य-विज्ञान स्तम्भ' के अंतर्गत 'रंग चिकित्सा' के प्रश्नों के उत्तर 20 प्रतियोगियों से प्राप्त हुए। सर्वाधिक अंक प्राप्त करने वाले प्रतियोगियों के नाम इस प्रकार हैं-

**पुरस्कार एवं राशि- नाम**

प्रथम पुरस्कार (1000/-रु.) श्री अनिकेत दिलीपचन्द जैन-जयपुर (राज.) (67/70)

द्वितीय पुरस्कार (750/-रु.) श्री ताराचन्द आहूजा-जयपुर (राज.) (66.5/70)

तृतीय पुरस्कार (500/-रु.) श्रीमती विजया कोठारी-अजमेर (राज.) (66/70)

अन्य प्रतियोगी अपने अंक मालूम करना चाहें तो चंचलमल जी चोरडिया-94141-34606 (मो.) से सम्पर्क कर सकते हैं। प्रतियोगी अपना नाम व फोनमय पूरा पता उत्तरपुस्तिका एवं लिफाफे पर अवश्य लिखें। पता नहीं लिखे जाने पर उसे प्रतियोगिता में शामिल नहीं किया जाएगा।

## श्रावक-श्राविकाओं की समाचारी से सम्बन्धित कतिपय सुझाव

संघ में जब होता संघर्ष, कभी न होता उत्कर्ष।

संघ एकता में विकास है, मिलकर करो विमर्श।।

संघ के विकास के लिए श्रावक समुदाय एवं पदाधिकारीगण व संघ सदस्यों के लिए सत् संकल्प व गतिविधि निम्नानुसार संचालित होवें-

1. सभी जीवात्मा में परमात्मा मान साधर्मीजन को सम्मानपूर्वक 'जय जिनेन्द्रसा' कहकर अभिवादन करें। किसी व्यक्ति को गौण न करें। सबको योग्यतानुसार महत्त्व दें।
2. बाहर गाँव से आगन्तुक दर्शनार्थी या गुरुभक्त का परिचय लें। भोजन(अन्न) खिलाना पुण्य है, अतः उल्लास, उमंग व सत्कारपूर्वक खुश होकर अचित्त आहार पानी करायें।
3. साधर्मीजन को विपदा के क्षण में यथाशक्ति द्रव्य तथा सद्भावना से सहयोग करें।
4. श्रावक वर्ग धर्मसाधना के लिए स्थानक में आता है ताकि घर में होने वाली आरंभ परिग्रह क्रियाओं से बच सके। संघ की ओर से उन्हें उपकरण भी प्रदान किये जाते हैं। वे उपकरण स्वच्छ व व्यवस्थित हों ताकि संवर, पौषध आदि का उपयोग करने में संकोच न हो।
5. ज्ञान की आशातना न हो। पुस्तकें सुरक्षित व योग्य स्थान पर रखी जायें, ताकि आने वाले लोग उनका लाभ उठा सकें।
6. युवा समूह को प्रोत्साहन, प्रेम व सम्मान दें, कार्य पढ़ने पर व कार्य पूर्ण होने पर वरिष्ठ पदाधिकारी उन्हें धन्यवाद देकर प्रोत्साहित अवश्य करें।
7. संघ में भोजनशाला, अतिथिगृह, कार्यालय आदि में कार्य करने वालों का समय-समय पर सम्मान हो, प्रोत्साहन देते रहें ताकि वे अधिक उत्साह से कार्य में लगे रहें।
8. संत-सतियों के दर्शनार्थ आगन्तुक महानुभावों को अपने हाथों से भोजन परोसें। उनके पास मौजूद रहें। इससे उदारता, प्रेम एवं वात्सल्य भाव बढ़ेगा।
9. कार्य चाहे छोटा हो, बड़ा हो, उसे पूरा करने में तत्पर रहें। यदि पदाधिकारी गण ऐसा करेंगे तो उनका अनुसरण बाकी लोग स्वतः ही करने लग जायेंगे। पदाधिकारी यदि

सेवा में, तपस्या में, ज्ञान-ध्यान में लग जाते हैं तो अन्य भाई-बहिनों को भी स्वतः प्रेरणा मिल जाती है।

10. ज्ञानार्थी विरक्त भाई-बहिन की भावना को बढ़ाने का प्रयास अवश्य करना चाहिए। पारिवारिक अथवा अन्य कोई अवरोध हो तो उसे दूर करना चाहिए। यह उत्कृष्ट धर्मदलाली का रूप है।
11. बच्चों में जैनत्व, अहिंसा एवं सत्य के संस्कार हेतु संस्कार पाठशालाओं में भेजें। संस्कार पाठशालाओं में सुयोग्य शिक्षकों को नियुक्त करें। पदाधिकारी भी समय-समय पर निरीक्षण करें। ज्ञानवान व्यक्ति सिखाने-पढ़ाने के कार्य में सहयोग प्रदान करें।
12. श्रावक वर्ग में सूत्र, तत्त्वादि के अच्छे जानकार तथा क्रियावान व्यक्ति तैयार किये जायें। उनका संघ में, समाज में समुचित आदर-सम्मान हो।
13. संघ की गतिविधियों से भाई-बहिनों को जोड़ने हेतु मौहल्लेवार टीम बनाकर घर-घर जाकर प्रत्यक्ष सम्पर्क करें, इससे आपसी आत्मीयता बढ़ेगी।
14. विरक्त आत्माओं को संभालते रहें। उनकी आवश्यकता के बारे में पूछते रहें, ताकि सन्त-सतियों को इस कार्य में हस्तक्षेप नहीं करना पड़े।
15. साप्ताहिक सामूहिक सामायिक अपने निकटवर्ती स्थानक में जाकर करने की प्रेरणा करें।
16. प्रातःकाल प्रार्थना के स्वर घरों में गूँजें। कार्यालय, दुकान आदि में प्रार्थना से कार्य प्रारम्भ हो। सुविचारों के बोर्ड लगायें ताकि आने-जाने वालों को भी प्रेरणा मिले।
17. सामायिक, संवर, दया, पौषध आदि में हों तो परठने का पूरा विवेक रखें। खुली निर्दोष भूमि पर परठें।
18. किसी की भी निन्दा-विकथा-बुराई न करें।
19. रात्रिभोजन त्याग, जमीकन्द त्याग, कच्चे पानी का त्याग करें। धोवन पानी गर्म पानी पीने में काम में लें ताकि सहज ही अतिथि-संविभाग व्रत का लाभ प्राप्त हो सके।
20. कीटनाशक, हाइपावर वाले विषैले पदार्थ काम में न लें। घरेलू उपचार से काम चलायें ताकि जीव-विराधना से बचा जा सके।
21. स्वाध्याय में रुचि उत्पन्न कर योग्य व्यक्तियों को स्वाध्यायी सेवा देना हेतु प्रेरित करें।
22. क्रमिक ज्ञानवृद्धि करने हेतु शिक्षण बोर्ड की परीक्षाओं में भाग लेने की पुरजोर प्रेरणा करें।
23. किसी का देहावसान हो जाने पर लोकाचार में, उठावणे आदि में संघ के पदाधिकारी

- अवश्य भाग लें। इससे घर-परिवारजनों को सांत्वना प्राप्त होगी। संघ व समाज में उनका जुड़ाव बना रहेगा।
24. संघ की मीटिंगों में सबके विचार सुनें, सुझाव देने वालों का उत्साह बढ़ाएँ।
  25. पदाधिकारी व्रतों को जीवन में धारण करने का प्रयास करें।
  26. आगम वाणी का स्वाध्याय चलता रहे ताकि तत्त्वज्ञान रूपी अमृत को अपने हृदय में भर सकें।
  27. वर्ष में कम से कम एक दिन समूचे परिवार के लोग मोबाइल आदि इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों एवं भौतिक सुविधाओं को छोड़कर संत-सतियों की सेवा में बितायें।
  28. विचरण-विहार में सेवा देने का लक्ष्य रखें। विशेषकर महासतियाँजी के विहार में पूरा ध्यान रखें।

-(एक सन्त की डायरी से संकलित)

## साधना

अरुणा कर्णावट

हर क्षण सजगता देती यह साधना  
 स्व से स्व का परिचय कराती ये साधना  
 प्रत्येक श्वास में स्व चेतना का बोध  
 राग-द्वेष की ग्रन्थि का करा रही भेदन  
 भेद में अभेद का परिचय कराती यह साधना  
 हर जीव को सिद्ध सम बनाती यह साधना  
 “मिती में सब्ब भुएसु, वेरं मज्झं ण केणइ” की यह साधना  
 क्षण-प्रतिक्षण कर्म-निर्जरा की ओर गतिशील  
 पौद्गलिक आसक्ति से निरासक्त बनाती यह साधना  
 योग से अयोग की तरफ हो रहा निष्कासन  
 मिथ्यात्व से अपूर्वकरण की ओर ले जाती यह साधना  
 कृष्ण पक्षी से शुक्ल पक्षी का हो रहा अभ्युदय  
 निगोद से सिद्धत्व का वरण करती यह साधना  
 अनन्त संसार को सीमित संसार की तरफ संकुचित करती यह साधना  
 आत्मा से परमात्मा, महात्मा से परमात्मा का मार्ग प्रशस्त कराती  
 राग से विराग व वीतरागता का आरोहण कराती यह साधना।

-एफ-30-बी, लाल बहादुर नगर, जयपुर (राज.)

## शेषकाल में विशेष श्रुताराधना

डॉ. दिलीप धींग

जैन श्रमण परम्परा में चार महीने के वर्षावास काल के अलावा आठ महीने की अवधि शेषकाल (सेखेकाल) कहलाती है। ज्ञान-ध्यान की लक्ष्यपूर्ण आराधना से शेषकाल को भी विशेषकाल बनाया जा सकता है। शेषकाल में विचरण के दौरान नये क्षेत्रों की स्पर्शना होती है तथा अनेक नये श्रावक-श्राविकाओं तथा सामान्य जनता को धर्म-बोध देने का सुयोग भी मिलता है।

शेषकाल में व्यर्थ की बातों से ध्यान हटाकर, अप्रमत्त होकर आगम ग्रंथों तथा आगमों के व्याख्या-साहित्य का नियमपूर्वक नित्य स्वाध्याय किया जाना चाहिये। क्रमपूर्वक एक-एक आगम के सम्पूर्ण स्वाध्याय का लक्ष्य (टारगेट) रखना चाहिये। समूह में रहते हुए ज्ञान-साधना में एक-दूसरे का सहयोग करना चाहिये। यदि लक्ष्यपूर्ति में व्यवधान आए तो जप-तप और आहार-संयम के संकल्प किये जाने चाहिये। ज्ञान की इस प्रकार की निष्ठापूर्वक आराधना ही ज्ञानाचार बनती है। ज्ञानाचार की सुदृढ़ता के साथ अन्य चार आचार भी तेजस्वी बन जाते हैं। व्यवहार भाष्य (7.217) में कहा गया है कि ज्ञान के अभाव में चारित्र भी नहीं है - 'नाणंमि असंतंमि, चारित्तं वि न विज्जए'

यह सच है कि सबका क्षयोपशम समान नहीं होता है, लेकिन पुरुषार्थ में मन्दता नहीं आनी चाहिये और प्रमाद को हावी नहीं होने देना चाहिये। धीरे-धीरे चलने वाला अप्रमत्त कछुआ भी लक्ष्य हासिल कर लेता है और तेज दौड़ने वाला प्रमादी खरगोश भी पीछे रह जाता है। कार्तिकेयानुप्रेक्षा (गाथा 462) में कहा है-

पूयादिसु णिरवेक्खो, जिणसत्थं जो पढेइ भत्तीए।

कम्ममल्लसोहणट्ठं, सुयत्ताहो सहयरो तस्स॥

पूजा-प्रतिष्ठा आदि की चाह से निरपेक्ष, जो योगी अन्तर्मन का शोधन करने के लिए बहुमान और भक्तिभाव से शास्त्रों का पठन-मनन करता है, उसके लिए श्रुतज्ञान का लाभ सहज सुगम हो जाता है। श्रुतज्ञान के बल से जीवन और जगत की अनेक समस्याओं को आसानी से हल किया जा सकता है। श्रुतज्ञान के विवेकसम्मत व समयोचित उपयोग से समाज में सत्य, सदाचार और सौहार्द की प्रतिष्ठा की जानी चाहिये।

श्रमण-दिनचर्या में स्वाध्याय पर सर्वाधिक बल दिया गया है, ताकि अधिकाधिक

श्रुतज्ञान अर्जित किया जा सके और श्रुत की रक्षा की जा सके। उत्तराध्ययन चूर्ण के शुभारंभ में कहा गया है कि श्रुतज्ञान सब ज्ञानों में सर्वश्रेष्ठ है - 'सव्वणाणुत्तरं सुयणाणं।' श्रुतज्ञान साधक को केवलज्ञान तक ले जाने में समर्थ है। श्रुतज्ञान से मतिज्ञान भी निर्मल बनता है। श्रुतज्ञान की अप्रमत्त आराधना से सम्यक् चारित्र में विवेक बढ़ता है तथा अन्तर में उज्ज्वलता पैदा होती है। जब अन्तर में उजाला होता है तो बाहर भी उसकी रश्मियाँ विकीर्ण होंगी ही। ऐसी रश्मियों से आत्मा तो जगमगाता है ही, समाज भी आलोकित होता है।

अर्जित सम्यग्ज्ञान सदैव और सर्वत्र उपयोगी होता है। वह चातुर्मास काल में भी उपयोगी होता है और शेषकाल में भी। वह स्वयं की आत्म-साधना के लिए भी उपयोगी होता है और प्रवचन, ज्ञान-शिविर, व्यक्तित्व-विकास कार्यशाला आदि के माध्यम से दूसरों को प्रतिबोधित करने के लिए भी उपयोगी होता है। उत्तराध्ययन सूत्र (25.32) में कहा गया है कि 'णाणेण य मुणी होइ' अर्थात् ज्ञान से मुनित्व की साधना फलवती बनती है। अतः मुनि जीवन में अप्रमत्त होकर ज्ञानार्जन किया जाना चाहिये।

ज्ञान-साधना सबके लिए अत्यावश्यक है, लेकिन साधु-साध्वियों द्वारा की जाने वाली ज्ञान-साधना विशेष प्रभावना का कारण बनती है। साधु-साध्वियों को समाज अपना पथ-प्रदर्शक मानता है। संत की ज्ञान-साधना का सुप्रभाव सन्त के जीवन में तो होगा ही, उसका अनुकूल प्रभाव संघ और समाज पर भी पड़ेगा। साधु-साध्वियों के संयममय जीवन के प्रति लोगों में असीम आस्था होती है। संयम के साथ ज्ञान की साधना अधिक मूल्यवान बन जाती है। ऐसे संयममय ज्ञान से फलित उपदेश का प्रभाव भी अधिक होता है।

अप्रमत्त होकर श्रुताराधना करने से ज्ञान, दर्शन और चारित्र, तीनों दीप्तिमान होते हैं। रत्नत्रय की साधना में सम्यग्ज्ञान का बुनियादी महत्त्व होता है। रयणसार (गाथा 157) में कहा गया है -

णाणेण झाणसिज्झी, झाणादो सव्वकम्म-णिज्जरणं।

णिज्जरफलं ओक्खं, णाणब्भासं तदो कुज्जा।

ज्ञान से ध्यान की सिद्धि होती है। ध्यान से सब कर्मों की निर्जरा होती है। निर्जरा का फल मोक्ष है। अतः सतत ज्ञानाभ्यास करना चाहिये। नियमित रूप से ज्ञानाभ्यास करता हुआ साधक व्यर्थ की बातों से सहज ही दूर हो जाता है।

नियमित अध्ययन नहीं करने वाला विद्यार्थी या तो उत्तीर्ण नहीं होगा और यदि किसी तरह उत्तीर्ण हो भी जायेगा तो श्रेणी अच्छी नहीं बनेगी। ज्ञानार्जन में नियमितता आवश्यक

है। नियमित रूप से कानून की किताबें पढ़ने वाला वकील अपने पेशे के साथ न्याय कर पाता है और ग्राहक के साथ भी। इसी प्रकार नियमित श्रुताभ्यास/ज्ञानाभ्यास करने वाला श्रमण अपने संयम-जीवन के साथ न्याय करता है और समाज के साथ भी।

गृहस्थजनों का कर्तव्य-क्षेत्र और प्राथमिकताओं का दायरा सन्तों से भिन्न होता है। इसके बावजूद ये सारी बातें विद्वानों, स्वाध्यायियों, व्रतियों, श्रावक-श्राविकाओं और जिज्ञासु गृहस्थों के लिए भी समान रूप से उपयोगी और आचरणीय हैं। विचारवान गृहस्थ समाज में अभिनव आलोक प्रसारित करते हैं। जो स्वयं श्रुताराधना नहीं कर सकते हैं, वे दूसरों की श्रुताराधना में सहयोगी बनते हैं। जिस समाज में सन्त, विद्वान और गृहस्थ अपने-अपने कर्तव्य निष्ठा से निभाते हैं, वह समाज समर्थ और हर क्षेत्र में अग्रणी बनता है।

निदेशक : अंतरराष्ट्रीय प्राकृत अध्ययन व शोध केन्द्र,  
सुगन्ध हाउस, 18, रामानुजा अय्यर स्ट्रीट, साहुकारपेट, चेन्नई-600079

## ये तो भगता रे मन भाया

श्री एन. महावीरचन्द तातेड़

(तर्ज:- धरती धौरा री.....।)

ये तो भगता रे मन भाया, माता मोहनी का जाया,  
गाँधी कुल रा है उजियारा, गुरुवर प्यारा होऽऽ।

हो गुरुवर हमारा हो।

कार्तिक सुदी षष्ठी आयी, श्री संघ में खुशियाँ छायी,  
देते सब मिल के बधाई, गुरुवर प्यारा होऽऽ।

गुरुवर कण-कण में समाया, हृदय आनन्द बरसाया,  
मैं तो असली हीरो पाया, गुरुवर प्यारा होऽऽ।

चन्दा देख थने सरमावे, मन ही मन में है मुस्कावे,  
प्रवचन सारभूत फरमावे, गुरुवर प्यारा होऽऽ।

रत्नवंश री पहचान, सामायिक करते हैं नर-नार,  
व्यसन मुक्त रो आह्वान, गुरुवर प्यारा होऽऽ॥4॥

हस्ती-हीरा री फुलवारी, दुनिया जावे है बलिहारी,  
गावे 'चन्द वीर' गुणारी, गुरुवर प्यारा होऽऽ॥5॥

हो गुरुवर हमारा हो।

-25, चन्द्रप्या मुदली स्ट्रीट, पहला माला, साहुकारपेट, चेन्नई-79 (तमिलनाडु)

## वीर प्रभु की अन्तिम वाणी (18)

मधुर व्याख्यानी श्रद्धेय श्री गौतममुनिजी म. सा.

श्रद्धेय मुनिश्री द्वारा रचित यह पद्यानुवाद सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल के कार्याध्यक्ष एवं उत्कृष्ट कवि श्री सम्पतराजजी चौधरी-दिल्ली द्वारा संशोधित-सम्पादित है।-सम्पादक

(तर्ज:- गुण सौरभ से रहे महकता, ऐसा अपना घर हो)

वीर प्रभु की अन्तिम वाणी, सुनलो और सुनालो।

जीवन धन्य बनालो.....॥

उत्तराध्ययन में गुंजित होती, प्रभु शिक्षा अपनालो।

जीवन धन्य बनालो.....॥

(उनतीसवाँ अध्ययन : सम्यक्त्व पराक्रम)

कालिक प्रतिलेखन से भंते! जीव प्राप्त क्या करता,

समय-समय पर जो भी करना, करने से क्या मिलता,

बोध प्राप्त करने को उत्सुक, अपना शीश नमालो॥507॥

चौतीस अस्वाध्याय को टाले, यही काल प्रतिलेखन,

काले कालं समायरे हो, चउकाल अन्वेषण,

ज्ञानावरणीय कर्म खपाते, प्रभु आज्ञा निभालो॥508॥

प्रायश्चित्त करने से भंते! जीव यहाँ क्या पाता,

पाप विशुद्धि हो जाने से, कैसे फल को पाता,

बोध प्राप्त करने को उत्सुक, अपना शीश नमालो॥509॥

प्रायश्चित्त से पापकर्मों की, होती विशुद्धि भारी,

मार्ग विशुद्धि आचार आराधन, इसकी ही बलिहारी,

मार्ग फल की विशुद्धि से, मुक्ति का फल पालो॥510॥

क्षमादान से हे भंते! कहो जीव क्या पाता,

क्षमादान लेने से, वह कैसे भाव बसाता,

बोध प्राप्त करने को उत्सुक, अपना शीश नमालो॥511॥

क्षमादान देने लेने से, चित्त प्रसन्नता पाता,

आत्मतुला है जीव जगत के, मैत्री भाव जगाता,

उससे भाव विशुद्धि पाकर, निर्भय होकर चालो॥512॥

स्वाध्याय से हे भंते! जीवों को क्या मिलता,  
 श्रुत के अध्ययन करने से, क्या कर्मभार है घटता,  
 बोध प्राप्त करने को उत्सुक, अपना शीश नमालो॥513॥  
 स्वाध्याय से ज्ञानावरणी, कर्म क्षीण कर पाता,  
 इसकी महिमा कही न जाए, तप है श्रेष्ठ कहाता,  
 स्व का स्व में अध्ययन करके, आत्मरूप चमकालो॥514॥  
 सूत्र वाचना से प्राणी, जग में क्या है पाता,  
 श्रुत का अध्ययन करने से, तीर्थ कौनसा पाता,  
 बोध प्राप्त करने को उत्सुक, अपना शीश नमालो॥515॥  
 सूत्र वाचना से प्राणी, श्रुत आशातन से बचता,  
 धर्मतीर्थ का अवलम्बन ले, महानिर्जरा करता,  
 श्रुत की धारा रहे चिरंतन, पढ़लो और पढ़ालो॥516॥  
 प्रतिपृच्छना से भंते! प्राणी को क्या मिलता,  
 प्रतिप्रश्न करने से वह, क्या निर्णय है करता,  
 बोध प्राप्त करने को उत्सुक, अपना शीश नमालो॥517॥  
 प्रच्छा प्रतिपृच्छा करने से, संशय सारे तजता,  
 सूत्र अर्थ को शुद्ध करे, तत्त्वों का निर्णय करता,  
 कांक्षा मोहनीय कर्म नष्ट हो, संदेह सभी मिटालो॥518॥  
 परिवर्तना से प्राणी, किस गुण को है पाता,  
 सूत्र अर्थ की आवृत्ति से, कैसी लब्धि कमाता,  
 बोध प्राप्त करने को उत्सुक, अपना शीश नमालो॥519॥  
 सूत्र अर्थ की आवृत्ति से, पाठ सिद्ध कर पाता,  
 विस्मृत ना हो पाठ कभी वो, व्यंजन लब्धि पाता,  
 अभिनव ज्ञान बना रहता है, सूत्र अर्थ को पालो॥520॥  
 अनुप्रेक्षा से हे भगवन्! प्राणी क्या फल पाता,  
 सूत्र अर्थ के चिन्तन से, कौन बंध छुड़ाता,  
 बोध प्राप्त करने को उत्सुक, अपना शीश नमालो॥521॥  
 पूर्वबंध को शिथिल करता, अनुप्रेक्षा से साधक,  
 अशुभ कर्म को नहीं बांधता, बनता है आराधक,  
 भव अटवी को शीघ्र पार कर, मोक्ष सुखों को पालो॥522॥

धर्मकथा से हे भगवन्! प्राणी क्या फल पाता,  
 चार तरह की धर्म कथा से, कौन कर्म कमाता,  
 बोध प्राप्त करने को उत्सुक, अपना शीश नमाओ॥523॥  
 धर्मकथा करने से साधक, धर्म प्रभावक बनता,  
 भद्रभाव से शुभ कर्मों का, बंध भविष्य में करता,  
 धर्मकथा को सुन-सुन करके, अनुपम लाभ कमालो॥524॥  
 श्रुत के आराधन से भंते! जीव कहो क्या पाता,  
 आगम के अवगाहन से, किस रस को है पाता,  
 बोध प्राप्त करने को उत्सुक, अपना शीश नमालो॥525॥  
 श्रुत के आराधन से प्राणी, अज्ञान नष्ट है करता,  
 रागद्वेष का क्लेश न रखता, प्रशम रसों में रमता,  
 विशिष्ट बोध पाकर के अपना, मिथ्या ज्ञान मिटालो॥526॥  
 एक चित्तता से भगवन्, प्राणी क्या फल पाता,  
 शुभ का अवलम्बन लेकर के, कैसी सिद्धि पाता,  
 बोध प्राप्त करने को उत्सुक, अपना शीश नमालो॥527॥  
 एकाग्र चित्तता होने से, चित्त निरोध है करता,  
 विकल्प शून्य हो करके वह, मन चंचलता हरता,  
 शुभ का अवलम्बन लेने का, अपना ध्येय बनालो॥528॥  
 संयम को धारण करने से, प्राणी को क्या मिलता,  
 मन-वच-काया के नियमन से, कैसा जीवन खिलता,  
 बोध प्राप्त करने को उत्सुक, अपना शीश नमालो॥529॥  
 संयम से नूतन कर्मों का, आना है रुक जाता,  
 आश्रव द्वार बंद हो जाते, यतना धर्म निभाता,  
 मन-वच-काया की विरति से, हिंसा को तज डालो॥530॥  
 तप के आराधन से भंते! प्राणी क्या है पाता,  
 देह और आत्म दमन से, किस शुद्धि को पाता,  
 बोध प्राप्त करने को उत्सुक, अपना शीश नमालो॥531॥  
 तप से होती कर्म निर्जरा, तप मुक्ति का साधन,  
 संचित कर्म खपाने हेतु, करो तप आराधन,  
 अन्तर्मन की शुद्धि करने, तपोधर्म अपनालो॥532॥

व्यवदान से जीव यहाँ, किस गुण को है पाता,  
 आत्म विशुद्धि हो जाने से, किसका अंत कराता,  
 बोध प्राप्त करने को उत्सुक, अपना शीश नमालो॥533॥  
 व्यवदान से जीव यहाँ, क्रिया रहितता पाता,  
 आत्म विशुद्धि हो जाने पर, सिद्ध-बुद्ध हो जाता,  
 करलो अन्त सभी दुःखों का, परम शांति को पालो॥534॥  
 सुखशात से है भगवन्, कहो जीव क्या पाता,  
 विषय सुखों की अनासक्ति से, कैसा कर्म मिटाता,  
 बोध प्राप्त करने को उत्सुक, अपना शीश नमालो॥535॥  
 विषय सुखों की अनासक्ति से, अनुकम्पा से भरता,  
 शोक मुक्त होकर के साधक, मोह कर्म क्षय करता,  
 निस्पृह होकर विषय सुखों से, शोक नष्ट कर डालो॥536॥  
 अप्रतिबद्ध भाव से भंते! जीव यहाँ क्या पाता,  
 मन की अनासक्ति से कैसी, तन्मयता को पाता,  
 बोध प्राप्त करने को उत्सुक, अपना शीश नमालो॥537॥  
 अप्रतिबद्ध भाव से साधक, निःसंगता को पाता,  
 आत्मनिष्ठ बन करके वह, एक चित्त हो जाता,  
 बन्ध रहित विचरण करने को, ममता भाव छुड़ालो॥538॥

(क्रमशः)

संकलनकर्ता- नवरत्न डागा, पूर्व महामंत्री, अ.भा.श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ,  
 'लक्ष्य' 76, नेहरुपार्क, बख्रतसागर स्कीम, जोधपुर-342003 (राज)

## सूचना

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल द्वारा 'बनें आगम अध्येता' प्रतियोगिता के अन्तर्गत खुली पुस्तक परीक्षाओं में 70 तथा इससे अधिक के प्राप्तांक प्राप्त करने वाले विजेता प्रतिभागियों की पुरस्कार राशि उनके बैंक खाते में नेफ्ट द्वारा हस्तान्तरित की जायेगी।

अतः प्रतिभागी अपना नाम, स्थान का उल्लेख करने के साथ निम्न जानकारी भिजवाने का श्रम करावे:- Name of Bank, Name of Account holder, Bank Account Number, Bank Place, Bank IFS code, Micr Code, Mobile No.

## Ahimsa and Samayika (2)

Sh. Tejraj P. (M.A. (Jaino&Pkt), M.A. (Pkt-Ext), B.E.(E&C), D.Pharm.)

Whatever the philosophies of various believers, whatever they claim, one thing is for certain, none of those original philosophies would have advocated killing of another being for the express purpose of pleasing a deity. Almost every religion preaches unconditional non-violence. According to the Jews and Christians, 'Thou shalt not kill.' Is a Testament- simple and direct orders to the faithful. Believers of The Day of Judgment' the world over, (though not very specific of Non-violence) very clearly state "Love thy neighbor as thyself." The Holy Quran preaches love, brotherhood and kindness. Every one of it's 114 chapters starts with the phrase - In the name of Allah, the compassionate, the merciful. It teaches that "what thou createth not, thou shalt not kill" - what you cannot create, you shall not destroy and that God will not be affectionate to those who are not affectionate to God's creatures. That 'God' cannot be a god if he or she is pleased by the killing of a sacrificial animal or human. Gods or Devas by definition and by nature, strive for the spiritual and mundane welfare of others and therefore they are Deva! - they are the Giver; Deva is not a receiver, nor God is poor and cruel. Some, socially better placed, at some point in their history, abandoned sacrificing animals in God's name, instead, adopted healthier rituals of nonviolence. Hindu sages and seers openly denounced the killing of animals. Lord Buddha a contemporary of Tirthankara Mahavira, taught desirable acts that included those that abstained from stealing, from lechery and from taking any life.

These and many such questions have remained a mystery for centuries, even to the people who were blindly following those heinous rituals in the name of *Yajñas* or *Havanas*. What we confront today, in Dr. Radhakrishnan's words, is, 'a crisis of Character'. Nothing less

than a complete transformation of human psyche, can reverse the dangerous drift. Himsā is too deep rooted and complex a phenomenon to be dispensed with by ordinary efforts.

Then, in protest, or so it appears, stepped out a 30 years old prince, an Ocean of Kindness and Pity, endowed with congenial treasure of Mati, Shruta and Avadhi Jñāna of the Right (Samyak) type, in search of the truth. He knew that those killings were a major source of sin, unethical, illogical and waste of valuable life. A life is not different from any other living being's life - *Ege Aya* - the Soul is One. For more than 12 years, having given up all worldly belongings, with only himself for company, Mahavir roamed relentlessly as a true Shramana, shedding away the *Ghāti karmas*. The Truth eluded him, his *Ghāti karmas* hindering dawn of truth, the Inherent truth. He would not allow himself the slightest luxury which would hamper his great toil of shedding away the knowledge deluding and other bound *Ghāti karmas*.

This remarkable relentless toil, finally bore fruit on the 10th day of *Vaishakhashukla*, 557B.C., engrossed in Soul-examination in the *Goduhika* posture in the early hours of the evening, on the bank of river Rujukula (Jrimbhika village in Bihar).

Lack of the true knowledge and understanding of the real nature and purpose of religion, is the single most important reason for growth of fundamentalism and intolerant view. Acarya Haribhadrasuri in *Sambodha Prakarna* (1.1) clearly remarks that people speak about the path or the religion with out knowing what it is in its true sense. In *Kartikeyanupreksha* (478) Kumar Kartikeya Swamy explains Dharma (religion) as the real nature of things. In *Bhagavati Sutra* (1.9)- Mahavir is quoted as saying that the nature and ultimate end of the soul is equanimity. Lord Mahavira has given another definition of religion in *Acaranga Sutra* (1.8.4) as, 'worthy people preach that the religion is mental equanimity.' Equanimity is the core or essence of religion, because it is the real nature or essence of all living beings,

including humans. Equanimity is the state in which consciousness is completely free from constant flickering, excitements and emotional disorders, the mind becoming pacific (fixed or firm). Haribhadrāsuri in *Sambodha Prakarna* (1.2), further remarks that - a person may belong to Shvetāmbara, Digāmbara or the Bhuddhism, or to any other religion what-so-ever, attains equanimity of mind, will attain the Liberation. Attainment as equanimity or relaxation from tensions is the essence of all religions, with the social or behavioral aspect of the religion being observation of Non-violence.

Use of his expertise in non-confrontational dialogue-Anekantavada, explain to partners-in-peace that non-violence begins with training and self-discipline of one's own mind. Message of the Omniscient is loud and clear that greed, lust, ego, pride, etc., are the major causes of these maladies; weak human mind is the source of all these violent emotions. Other faiths too have similar concepts and it is not difficult for an average man to understand his short-comings. A genuine seeker of peace would readily blend these concepts and grasp the importance of training his mind and get full control over his emotions instead of being controlled by the emotions.

Ahiṃsā Paramo Dharmāḥ - ( Non-violence is the highest religious duty), is a phrase which world-over Jainas regard along with the motto- 'All living beings must help each other' as encapsulating, what their religion stands for; without which all religious conduct however accurate, is still worthless.

Non-violence may not have been an exclusive concept of the Jainas, but, the humane urge to realize that all souls are like the Self; in that they too suffer the same distress that one does when inflicted; all cling to their lives and do not wish to get destroyed - was a unique message that shaped and defined the Jaina Ascetic culture.

Ahimsa - 'non-intention to kill' if taken as a negative expression, is also interpreted within Jaina tradition in strongly positive terms as

involving such qualities as (i) *maitri sarva bhutesu* -Friendship, (ii) *sarva hitesu* -good will and (iii) *shanti* -peace, etc., which manifest themselves through gentleness and total abandon of passions. In fact, Jainism clearly lays down that an assurance to fellow beings that - 'they need not fear my presence from any aspect, for now I am bound by the vow of Non-hurting-praṇātipāta virmana vrata, and therefore shall strive to protect, within my control and ability, all forms of life from all forms of hurts' - is the perfect form of religious performance.

The first vow in fact enjoins the Sadhaka , the vow-performer, to abstain from destruction of living creatures, which is much more than a mere ritual of non-killing. Jainism sees truly as violent only occurs when accompanied with *pramada*-Lack of Care. Violence, as 'removal of life' (disturbing any of the 4 to 10 *Balaprānas* respectively) takes place through a careless action of mind, body or speech. Any propensity towards carelessness must therefore be controlled by Observation of the Self and by the exercise of restraint. The directive principle of living is- living with others and living for others. Since co-operation and co-existence are the essential nature of living beings, it is imperative; we accept that religious tolerance and fellowship of faiths are such principles which are to be followed from the bottom of our hearts.

The soul of the very perpetrator of a violent action is negatively affected in the same way as the life-form which is being destroyed; if one does not wish to destroy the self then one should not destroy living creatures. If one were to review the sacrificial actions of the ancient in the light of this fact, umpteen questions do arise on their wisdom. Was it worth accumulating a mountain-load of sin for a few moments' culinary pleasure? Is the one abetting such a sin not accumulating similar sin if not more? Then what becomes of those who propound that killing innocent beings to appease the powers, would fetch happiness? Further-more, what is the fate of those in whose name such

sin is perpetrated? Even if a person does not actually kill, he becomes a killer if he bears an intention to kill, get someone to kill or abets a killing. From the real point of view, i.e., nishcaya naya, it is the evil intention that is violence, whether or not it materializes into an actual act of injuring; there can be violence even when it is not committed.

Protecting one-self from the severe consequences of resulting karmas requires a wise protection from *Karmas*. Protection from *Karmas* can be achieved only through *Samvara*. This much needed protection can be gained through a controlled and a well-informed stance towards the surrounding world. Care in all actions, harmonization of personality traits and forbearance in the face of inevitable difficulties in daily life play a major role in this respect. A general curbing of the three modalities of mind, body and speech (kāyavānmanaḥ-karmayogah and their gupti), so that they are not employed for frivolous or spiritually irrelevant purposes is essential. The careful actions (samiti) provide a form of etiquette according to which one can conduct himself in the world.

In addition, the development of positive moral qualities, reflection upon the nature of the situation of human beings in this world of transmigrations- *Anuprekshas*, conquest of the endurances- *paree-shaha* (disagreeable social, psychological and physical factors in an oft hostile environment), and the maintenance of pure and correct behavior; to sum up, all bring about restraint and therefore, protection from *Karmas* - a state of equanimity called *Samayika*, sometimes *Samata*. What method can be better than a mental state of equanimity called *Samayika*, sometimes *Samata*, for the purpose of eradication of wanton violence globally?

Equal regard to different faiths and religions should be the base of religious harmony and fellowship of faiths. Acarya Siddhasena Diwakara remarks 'just as emerald and other gems of rare qualities and of excellent kind do not acquire the designation of a Necklace of Jewels

and rest on the chest of humans, so too, the different religions & faiths. Whatever excellent qualities and virtues they possess, unless those are all casemated in the common string of fellowship and have equal regard to each other, they cannot find place in human hearts, and scattered and un-united would rather become cause for hostility and hatred in mankind.' Till we carry the conviction that 'my' faith is superior to all others or that the other faiths are inferior to mine, real harmony will not be possible. If a global-understanding is expected Equanimity, i.e., equal regard to all the faiths and religions has to be persisted upon. Every religion or mode of worship has its origination in a particular social and cultural background and has its utility and truth-value in accordingly.

The term Samayika, originally seems have meant 'Correct Behavior'; Acarya Vattakera describes this equanimity as a quasi-meditative state of mind, consciously achieved in a motionless standing position for a short period of time -kayotsarga, traditionally for 48 minutes, in which the passions and negative mental traits are suppressed and a sense of goodwill to all beings is developed. Samayika is that state in which a performer is the same towards himself and another, to his mother and to all other women, to pleasant and unpleasant things and to honour and disrespect. In fact, the entire ascetic life is regarded as an act of Samayika so that it's ritual performance is merely a temporary actualization of it. 'Karemi, Bhante! Samayiyam saavajjam jogam..... jaavvajivaae....' proclaims the enrolling student- at the time of ascetic initiation - 'I perform, Sir! the rite of equanimity - Samayika, I abandon all hurtful activities for the course of all my life, three fold by three fold, in mind, body and speech. I will not perform nor cause anybody to perform nor approve anybody performing a wrong action, I repent of it, Sir! I censure, reject and abandon myself' and binds himself for all his life- javvajivaae, promising a life totally free of all kinds of violence - Real Ahimsa results from this Equanimity i.e., from a lifelong Samayika. In Acaranga Sutra(1.4.1)

the lord propounds, 'the worthy men of the past, present and future, will say thus, speak thus, declare thus, explain thus, all breathing, existing, living & sentient creatures should not be slain, nor be treated with violence, nor abused, nor tormented'- this is the eternal and unchangeable law or the tenet or religion.

Acarya Haribhadrasuri maintains that performance of rituals is the external form of religion, in its real sense religion means the eradication of passions & lust for material enjoyments as well as the realization of one's own Real Nature - Svabhaava. Be it Jaina or be it a follower of any other religion, the true nature and purpose of religion is to attain equanimity and peace as individual, as well as in society. Whatsoever disturbs equanimity & social peace, propagates hostilities and violence is not a true form of religion. It is the Devil in disguise. Followers of the Jina already know and do follow the path of Nonviolence, but confined to the borders of India, they have so far kept this path to themselves. The very following of the Jina's teaching is epitomized in the performance of Samayika Vrata. One in Samayika, be it of the short-duration form or be it of the life-long duration, is truly and factually engrossed absolutely in total Ahimsa, for the very prerequisite of a pure performance of Samayika demands absolute abandonment of violence of all forms and all modes. When bound by the vow of Samayika, one is therefore, estopped from all actions and in the absence of actions no *asrava* can enter the soul region, giving raise to true *samvara*.

By working proactively in co-operation with the main stream of religions, this SamayikaVrata performance in it's true spirit, is the perfect and practical form of Ahimsa. The nectar of Ahimsa, is the only remedy for all severely afflicting maladies that are pushing (and punishing) the mankind to the brink of Doom; with the only hope for survival lying in the Testamaent - *Khamantu Me Savve Jivaa - Savve Jivaa Khamantu Me* - I forgive all beings - All Beings forgive Me!

Live! And Let Live! - is the Jain Gospel, the only hope for the survival of the people and the planet itself. Ahimsa is a Humane

religion, a Universal Religion , the concept of one and all to not to hurt another, what-ever be the caste-creed-faith one may belong to. The urgent requirement of the day is Universalisation of Samayika and its inclusion in all human Religions and Faiths of the whole Universe as a basic code of conduct. With Ahimsa at the helm of action, the Child of to-morrow has a better chance of survival and prosperity, armed with the ultimate weapon of 'Live! And Let Live!' In the form of Universal-Samayika instead of weapons of War and Destruction.

**Reference Books:-**

- 1 Reality, (Eng. Translation of Shrimadpujyapada's sarvarths-iddhi.), Trs.by: Prof. S.A. Jain, Publisher: Jwalamalini Trust, Madras-600053. 2<sup>nd</sup> Edn. 1992.
- 2 SamayikaVrata (hindi)Editor & Publisher: Balacand Shrishrimal., Shree Jain jawahara Mitra Mandali, Byawara, (Raj.), first edn.1947.
- 3 SamayikaDharma :Ek Poorna Yoga.Author: Shreemadvijayaklaa-purnasoorijee, Publisher: Prakrit Bharti Academy, Jayapur ( Raj.), First Edn. 1987.
- 4 Jain Dharmakkondu Kaipidi - Compendium of Jainism. Author: Justice T.K.Tukol, Published by: : Justice T.K.Tukol Educational & Charitable Trust, Bangaluru. First Publication - 2012.
- 5 Preface of Brhat Saamaayika Paatha - amukha- Swastishree Bhattarak Carukeerti Mahaswamy of Moodabidre. Publisher: Shri Mahaveera Jyoti Granthamala, Davanagere. First- Edn. 1986.
- 6 Jinavani (Hindi Masika Patrika) ISBN recognized.R.N.I.no.3653/57. Visheshanka(Special Issues)
  - a. Shravaka Dharma, Jan-Feb-March 1970, Editor. Dr.Narendra Bhanawat,
  - b. Pratikramana, Nov.2006, Editor: Dr.Dharmichand Jain.
  - c. Guru Garima evam Shramana-Jeevana, Editor: Dr.Dharmichand Jain. Publisher: Samyaginana Pracaraka Mandala, Jaipur, (Raj.)
- 7 Samayika Dharma: Ek Purna Yoga. Author.: Shreemadvijayakala-purnasoorijee, Publisher: Prakrit Bharti Academy , Jaipur, Raj.,First Edn.1987.

-Sr. Research Fellow & Resource Person,

National Institute of Prakrit Studies and Research, S'belgola.

Res.Kh2 10, AshokaRoad, Mysuru-570001.(mob:+919448055702)

तत्त्वज्ञान प्रश्नोत्तरी (क्रमशः 97)

## आओ मिलकर ज्ञान बढ़ाएँ

श्री धर्मचन्द जैन

(पाणत्ता)

जिज्ञासा- 'णाणत्ता' किसे कहते हैं?

समाधान- 'णाणत्ता' प्राकृत भाषा का शब्द है, जिसका हिन्दी रूपान्तर होता है- नानात्व। अर्थात् भिन्नता होना, अन्तर होना। सामान्य शब्दों में ऐसा कहा जा सकता है कि जीव को जो-जो बोल उस-उस भव में मिलने चाहिए, वे बोल उतने रूप में नहीं मिलना, कम मात्रा में मिलना 'णाणत्ता' कहलाता है।

जिज्ञासा- किन-किन बोलों में णाणत्ता पड़ता है?

समाधान- जीवों की ऋद्धि के 20 बोल भगवती सूत्र के 24वें शतक में बतलाये गये हैं, उनमें से 9 बोलों में ही णाणत्ता पड़ता है। इनसे सम्बन्धित गाथा एवं उनके नाम इस प्रकार हैं-

उच्यत्तमेव लैस्सा दिद्धी, नाण-जोग-समुग्धाओ।

आउ अज्झवसाणाणुबन्धो, नव ठाणा णाणत्ता होई।।

अर्थात् 1. अवगाहना, 2. लेश्या, 3. दृष्टि, 4. ज्ञान-अज्ञान, 5. योग, 6. समुद्घात, 7. आयु, 8. अध्यवसाय और 9. अनुबन्ध- इन नौ स्थानों में, बोलों में णाणत्ता (अन्तर) होते हैं।

जिज्ञासा- 9 गमों में से किन-किन गमों में णाणत्ता होते हैं?

समाधान- औधिक के तीनों गमों में णाणत्ता नहीं पड़ते हैं। जघन्य गमे से आने वाले जीवों में तथा उत्कृष्ट गमों से आने वाले जीवों में णाणत्ता पड़ते हैं। अर्थात् जघन्य के तीन गमे (जघन्य से औधिक, जघन्य से जघन्य, जघन्य से उत्कृष्ट) में तथा उत्कृष्ट के तीन गमे (उत्कृष्ट से औधिक, उत्कृष्ट से जघन्य, उत्कृष्ट से उत्कृष्ट) से इस प्रकार कुल 6 गमों से आने वाले जीवों में णाणत्ता पड़ते हैं।

जिज्ञासा- औधिक के गमों से णाणत्ता क्यों नहीं पड़ते हैं?

समाधान- औधिक का तात्पर्य जिसमें जघन्य, मध्यम तथा उत्कृष्ट तीनों प्रकार की

स्थितियाँ आदि मिल सकती हों। अर्थात् णाणत्ता के 9 बोलों की सभी प्रकार की स्थितियाँ औघिक गमों में मिल जाती हैं, इस कारण से औघिक के तीनों गमों (औघिक से औघिक, औघिक से जघन्य, औघिक से उत्कृष्ट) से आने वाले जीवों में णाणत्ता नहीं पड़ते हैं।

**जिज्ञासा-** णाणत्ता में क्या विशेष बात ध्यान रखनी चाहिए?

**समाधान-** णाणत्ता में निम्नांकित विशेष बातें ध्यान रखनी चाहिए-

(अ) णाणत्ता निकालते समय यह ध्यान रखना चाहिए कि णाणत्ता वर्तमान भव के आधार पर होते हैं। अर्थात् वर्तमान में वह जीव जहाँ पर रहा हुआ है, वहाँ के मिलने योग्य 9 बोलों में से किन-किन बोलों में अन्तर पड़ रहा है, जिन बोलों में अन्तर पता लगे, उन बोलों में णाणत्ता जानना चाहिए।

(ब) जघन्य गमा अर्थात् जघन्य स्थिति वाला जीव समझना है। उत्कृष्ट गमा अर्थात् उत्कृष्ट स्थिति वाला जीव समझना है।

(स) स्थिति जीवन भर की मानी जाती है अर्थात् उनकी जघन्य अथवा उत्कृष्ट जो भी स्थिति (आयु) है, उन जीवों में 9 बोलों में से कितने-कितने बोल, किस-किस मात्रा में मिलते हैं, यह जानकर उन जीवों की सामान्य ऋद्धि (योग्यता) से तुलना करनी चाहिए।

**जिज्ञासा-** असंज्ञी तिर्यच पंचेन्द्रिय जब मरकर वैक्रिय के 12 घरों में आता है तब कितने-कितने णाणत्ता पड़ते हैं?

**समाधान-** असंज्ञी तिर्यच पंचेन्द्रिय जब वैक्रिय के 12 घरों में (पहली नारकी, 10 भवनपति, वाणव्यन्तर देव) आकर उत्पन्न होते हैं तब एक-एक घरों में 5-5 णाणत्ता पड़ते हैं। जघन्य गमे में णाणत्ता पड़े तीन-तीन। उत्कृष्ट गमे में णाणत्ता पड़े दो-दो। इस प्रकार 1 घर में 5 णाणत्ता पड़ते हैं तो 12 घरों में कुल  $12 \times 5 = 60$  णाणत्ता पड़ते हैं।

**जिज्ञासा-** असंज्ञी तिर्यच पंचेन्द्रिय जब जघन्य के गमों से वैक्रिय के 12 घरों में आकर उत्पन्न होता है तब किन-किन बोलों में णाणत्ता पड़ता है?

**समाधान-** णाणत्ता पड़ने योग्य 9 बोलों में से किनमें णाणत्ता पड़ता है और किनमें नहीं पड़ता, इस बात की जानकारी करते हैं।

1. **अवगाहना-** जो असंज्ञी तिर्यच पंचेन्द्रिय जघन्य गमों से वैक्रिय के 12 घरों में आता है, उस असंज्ञी तिर्यच पंचेन्द्रिय की वर्तमान भव में स्थिति

अन्तर्मुहूर्त समझनी चाहिए। जैसाकि पूर्व में लिखा जा चुका है कि जघन्य गमे वाले जीवों की जघन्य स्थिति समझना चाहिए। अन्तर्मुहूर्त की स्थिति वाले पर्याप्त असंज्ञी तिर्यच पंचेन्द्रिय की अवगाहना जघन्य अंगुल के असंख्यातवें भाग से लेकर एक हजार योजन तक की हो सकती है। इतनी ही अवगाहना औधिक रूप से (सामान्य रूप से) असंज्ञी तिर्यच पंचेन्द्रिय जीवों की समुच्चय रूप से होती है। अर्थात् सभी प्रकार की अवगाहना जघन्य गमे वाले असंज्ञी तिर्यच पंचेन्द्रिय में मिल जाने के कारण अवगाहना का णाणत्ता नहीं पड़ता है।

यह नियम है कि वैक्रिय के घरों में पर्याप्त जीव ही आते हैं तथा वैक्रिय के घरों से औदारिक के घरों में आने वाले जीव भी पर्याप्तक अवश्य बनते हैं। अर्थात् अपर्याप्त अवस्था में काल करने वाले जीव वैक्रिय के घरों में, युगलिकों में जन्म नहीं ले पाते हैं तथा वैक्रिय के घरों से आने वाले भी मनुष्य तिर्यच में अपर्याप्त अवस्था में काल नहीं करते हैं, अवश्य ही पर्याप्त बनते हैं। इसीलिए अवगाहना वाले बोल में जघन्य गमे में पर्याप्त असंज्ञी तिर्यच पंचेन्द्रिय जीवों की अवगाहना ली जाती है।

2. **लेश्या**— जघन्य गमे से आने वाले असंज्ञी तिर्यच पंचेन्द्रिय में कृष्ण, नील, कापोत ये तीन लेश्या मिलती हैं। औधिक लब्धि के रूप में भी असंज्ञी तिर्यच पंचेन्द्रिय में उपर्युक्त तीन ही लेश्या पाई जाती हैं। दोनों में समानता होने के कारण लेश्या का णाणत्ता नहीं पड़ता है।
3. **दृष्टि**— जघन्य गमे से वैक्रिय के घरों में आने वाले असंज्ञी तिर्यच पंचेन्द्रिय में एक मिथ्यादृष्टि ही पाई जाती है। यद्यपि औधिक (सामान्य) रूप से देखें तो असंज्ञी तिर्यच पंचेन्द्रिय के अपर्याप्त में किन्हीं-किन्हीं जीवों में सास्वादन समकित भी मानी जाती है, मिथ्यादृष्टि तो मिलती ही है। अतः दो दृष्टि होती हैं। यहाँ जघन्य गमे वाले असंज्ञी तिर्यच में एक मिथ्यादृष्टि मिलती है, फिर भी दृष्टि का णाणत्ता नहीं माना गया है, ऐसा क्यों?

प्रत्युत्तर में हम जान सकते हैं कि जिन असंज्ञी तिर्यच पंचेन्द्रिय जीवों में अपर्याप्त अवस्था में सास्वादन समकित होती है, ऐसे जीव मरकर वैक्रिय के 12 घरों में जघन्य गमे से जाकर उत्पन्न ही नहीं होते हैं।

अर्थात् ऐसे असंज्ञी तिर्यच पंचेन्द्रिय जो तिर्यच के अपने वर्तमान भव में उत्पत्ति से लेकर मरण अवस्था तक मिथ्यादृष्टि ही होते हैं, ऐसे जीव ही जघन्य गमे से वैक्रिय के 12 घरों में आकर उत्पन्न होते हैं, अतः ऐसे जीवों में औघिक व वर्तमान दोनों अपेक्षा से एक ही मिथ्यादृष्टि होने के कारण दृष्टि का णाणत्ता नहीं माना जाता है। (क्रमशः)

-रजिस्ट्रार, अ.भा.श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, जोधपुर (राज.)

## शुभ चिंतन रहे सदा मन में, मैं यही प्रार्थना करता हूँ

श्री मोहन कोठारी 'विनर'

शुभ चिंतन रहे सदा मन में, मैं यही प्रार्थना करता हूँ,  
विनय रहे जीवन में मेरे, मैं यही अर्चना करता हूँ।

शुभ चिंतन रहे सदा मन में.....॥टेर॥

पहले तौलूँ, फिर मैं बोलूँ, बोलूँ सबसे मीठा बोलूँ,  
नहीं दुःखाऊँ दिल मैं किसी का, नहीं नफरत का घोल मैं घोलूँ।  
महापुरुषों की हितकर वाणी, सदा हृदय में धरता हूँ,

शुभ चिंतन रहे सदा मन में.....॥1॥

करूँ नहीं मैं कभी बुराई, सोचूँ सबकी सदा भलाई,  
साता उपजे सबके मन में, जीवन बने सदा सुखदाई।  
मधुर रहे व्यवहार सभी से, यही प्रयास मैं करता हूँ।

शुभ चिंतन रहे सदा मन में.....॥2॥

निर्मल रहे भावना मेरी, सद्भावना नित्य रहे,  
सेवक बन कर जीवन जीऊँ, अन्तर में मधु स्रोत बहे।  
जिनवाणी जीवन में उतरे, यही लक्ष्य मैं रखता हूँ।

शुभ चिंतन रहे सदा मन में.....॥3॥

दुश्चिंतन से दूर रहूँ मैं, शुभ चिंतन से भरा रहूँ,  
क्रोध, कषायों की ज्वाला को, क्षमा नीर से शांत करूँ।  
मैत्री भाव रखूँ जीवों से, पापों से मैं डरता हूँ।

शुभ चिंतन रहे सदा मन में.....॥4॥

-जनता साड़ी सेण्टर, स्टेशन रोड, दुर्ग-491001 (छत्तीसगढ़)

श्री महावीराय नमः

जय गुरु हीरा

श्री कुशलरत्नगजेन्द्रगणिभ्यो नमः

जय गुरु मान

# जैन भागवती दीक्षा-महोत्सव

आदरणीय धर्मप्रेमी बन्धुवर,

सादर जय जिनेन्द्र !

आपको सूचित करते हुए परम प्रसन्नता है कि जिनशासन गौरव आगमज्ञ, प्रवचन-प्रभाकर, व्यसन-मुक्ति के प्रबल प्रेरक, परमश्रद्धेय आचार्यप्रवर पूज्य श्री 1008 श्री हीराचन्द्रजी म.सा. के मुखारविन्द से, आत्मार्थी शान्त-दान्त-गम्भीर, प्रबल पुरुषार्थी, परमश्रद्धेय उपाध्याय प्रवर पं. रत्न श्री मानचन्द्र जी म.सा. के शुभाशीर्वाद से दूदू(जिला-जयपुर) में

बिरक्ता श्रीमती सज्जनकंवरजी मेहता

बिरक्ता सुश्री नेहाजी खिंबसरा, बिरक्ता सुश्री रुचिताजी खिंबसरा

बिरक्ता सुश्री खुशबूजी जैन

की जैन भागवती दीक्षा

दि.सं. 2072 माघ शुक्ला तृतीया, गुरुवार, दिनांक 11 फरवरी, 2016 को अग्रांकित कार्यक्रमानुसार सम्पन्न होने जा रही है। परमश्रद्धेय आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा., महान् अध्यवसायी सरस व्याख्यानी श्रद्धेय श्री महेन्द्रमुनिजी म.सा., तत्त्वचिन्तक श्रद्धेय श्री प्रमोदमुनिजी म.सा. आदि ठाणा एवं व्याख्यात्री महासती श्री सुशीलाकंवरजी म.सा., श्री सोहनकंवर जी म.सा., श्री सरलेशप्रभा जी म.सा., श्री विमलेशप्रभा जी म.सा., श्री पुष्पलता जी म.सा., श्री रुचिता जी म.सा. आदि ठाणा के पावन सान्निध्य में आयोजित दीक्षा-महोत्सव कार्यक्रम में व्रत-नियमयुक्त श्रद्धा समर्पित कर दीक्षा की अनुमोदना का लाभ प्राप्त करें।

## विनीत

मोफतराज मुणोत

संयोजक-संरक्षक मण्डल

रतनलाल बाफना

संयोजक-शासनसेवा समिति

पी. शिखरमल सुराणा

राष्ट्रीय अध्यक्ष

आनन्द चौपड़ा

राष्ट्रीय कार्याध्यक्ष

डॉ. अशोक कवाड़

राष्ट्रीय कार्याध्यक्ष

पूरणराज अबानी

राष्ट्रीय महामंत्री

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ

## आयोजक

विनोदकुमार मेहता ज्ञानचन्द नाहर माणकचन्द कोठारी महावीर प्रसाद कोठारी गौतमसिंह चीपड़

अध्यक्ष

उपाध्यक्ष

मंत्री

सह मंत्री

कोषाध्यक्ष

श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, दूदू

श्री भीकमचन्दजी, यशवन्तकुमारजी, मनोजकुमारजी, कमलेशजी मेहता, जोधपुर श्री उत्तमचन्द जी, गोकुलचन्दजी, महेन्द्रजी, विजयकुमारजी, कांतिलालजी खिंबसरा, मांडल श्री इन्दरचन्दजी, भागचन्दजी, सुनीलजी, अशोकजी, सुरेन्द्रजी, प्रितेशजी खिंबसरा, मांडल श्री लखमीचन्दजी, सुशीलकुमारजी, कमलेशजी, अंकितजी, सचिनजी, नसिया गंगापुरसिटी

निवेदक-



## विश्वता श्रीमती सज्जनकंवरजी मेहता

जन्मतिथि- वर्ष-1945, मार्गशीर्ष कृष्णा तृतीया

जन्मस्थान- जोधपुर (राज.)

मूल निवास- जोधपुर (राज.)

व्यावहारिक शिक्षा- मैट्रिक

### पारिवारिक परिचय

- पिता-माता : स्व. श्री दुलेहराजजी-श्रीमती सौभाग्यवतीजी सिंघवी, पाली
- ससुर-सास : स्व. श्री हस्तीमलजी-स्व.श्रीमती पातुदेवीजी वैदमुथा, किटनौद (बालोतरा)
- जेठ-जेठानी : स्व. श्री चम्पालालजी-श्रीमती पुष्पाजी वैदमुथा, जोधपुर
- पति : श्री भीकमचन्दजी वैदमुथा, जोधपुर
- ननद-ननदोई : स्व. श्रीमती जम्मुदेवीजी-स्व. श्री चुन्नीलालजी बागरेचा-सिवाना (गदग)
- पुत्र-पुत्रवधू : श्री यशवन्तकुमारजी-श्रीमती पूनमजी वैदमूथा, श्री मनोजकुमारजी-श्रीमती मधुजी वैदमुथा, श्री कमलेशजी-श्रीमती लताजी वैदमुथा, जोधपुर
- पुत्री-दामाद : श्रीमती केसरजी-श्री धर्मवीरजी कोचर मेहता, जोधपुर
- पौत्र-पौत्री : सुश्री अविनि, श्री हितांश, सुश्री जयति वैदमुथा
- दौहित्री : सुश्री कुशांगी, सुश्री लब्धि कोचर मेहता
- जेठ पुत्र-पुत्रवधू: श्री हरीशजी-श्रीमती प्रमोदाजी, श्री महेन्द्रजी-श्रीमती रेणुजी, श्री ललितजी-श्रीमती किरणजी, श्री पंकजजी-श्रीमती पूजा जी वैदमुथा, जोधपुर
- जेठ पुत्री-दामाद: श्रीमती भाग्यवंतीजी-श्री कानराज जी मोहनोत, श्रीमती सरिताजी-श्री राजेन्द्र जी गांग, श्रीमती कंचन जी-श्री रतन जी पारख, जोधपुर
- भाई-भाभी : श्री रिखबराजजी-श्रीमती पुष्पाजी सिंघवी, पाली  
श्री अशोककुमारजी-श्रीमती ललितानी सिंघवी, पाली
- बहिन-बहनोई : स्व. श्रीमती सूरजकंवरजी-श्री मुकनराजजी लुंकड़, जोधपुर

परिवार में दीक्षित पिता- रत्नसंघ में दीक्षित दिवंगत श्रद्धेय श्री दयामुनिजी म.सा.

### धार्मिक अध्ययन

- आगम कण्ठस्थ : उत्तराध्ययनसूत्र 1 से 9वां अध्ययन, दशवैकालिकसूत्र 1 से 4 व 9वां अध्ययन, सुखविपाकसूत्र
- सूत्र वाचनी : उत्तराध्ययनसूत्र, दशवैकालिकसूत्र, नन्दीसूत्र, अनुत्तरोववाइयसूत्र
- स्तोक कण्ठस्थ : 25 बोल, 67 बोल, कर्मप्रकृति, लघुदण्डक, पाँच समिति तीन गुमि, जीवधड़ा, गुणस्थान द्वार, गति-आगति, 33 बोल, 24 तीर्थकरों का लेखा, 20 विहरमान का लेखा, 11 गणधर का लेखा, 9 बोल का लेखा, ज्ञान का थोकड़ा आदि।
- स्तोत्र कण्ठस्थ : भक्तामर, पुच्छिंस्सु णं
- भाषा ज्ञान : हिन्दी, राजस्थानी धार्मिक परीक्षा: आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, जोधपुर, कक्षा 1-8
- वैराग्यावधि : 3 वर्ष पर्युषण सेवा : 7 वर्ष



## विश्वता सुश्री नेहाजी खिंवसरा

जन्मतिथि- 20 जनवरी 1989

जन्मस्थान- धुलिया (महा.)

मूल निवास-माण्डल, जिला-जलगांव (महा.)

व्यावहारिक शिक्षा- बी.ई.,आई.टी.

### पारिवारिक परिचय

- दादा-दादी : स्व. श्री चन्द्रभानजी-श्रीमती पानकंवरजी खिंवसरा  
 बड़े दादा-दादी : स्व. श्री फकीरचन्दजी-श्रीमती सदाबाईजी खिंवसरा  
 छोटे दादा-दादी : श्री उत्तमचन्दजी-सौ. सुरेखाजी खिंवसरा  
 ताऊजी-ताईजी : श्री गोकुलचन्दजी-सौ. मीनाजी, श्री महेन्द्रजी-सौ. हीराबाईजी खिंवसरा  
 पिता-माता : श्री विजयजी-श्रीमती किरणजी खिंवसरा  
 चाचा-चाची : श्री कांतिलालजी-सौ. शोभाजी, श्री भरतजी-सौ. छायाजी, श्री अभयकुमार  
 जी-सौ. दीपालीजी, श्री अनिलकुमारजी-सौ. मोनिकाजी, श्री अतुलजी, श्री  
 अजीतजी, श्री श्रीपालजी खिंवसरा  
 भाई-भाभी : श्री पुनीतकुमारजी-सौ. वैशालीजी, श्री जितेन्द्रकुमारजी-सौ. प्रीतिजी, श्री  
 हार्दिक जी खिंवसरा  
 बहिन-बहनोंई : सौ. श्रद्धाजी-श्री मनोजजी लूंकड़-शेगांव, सौ. राजुलजी-श्री किशोरजी  
 संकलेचा-धुलिया  
 भुआ-भूडोसा : श्रीमती कलावतीजी-श्री इन्द्रनाथजी बोथरा-डहाणु  
 नाना-नानी : स्व. श्री मूलचन्दजी-स्व. श्रीमती चमकूबाईजी चोरडिया-पारोला  
 मामा-मामी : डॉ. सुरेशकुमारजी-सौ. चन्द्रकलाजी, श्री विजयजी-सौ. आशाबाईजी, श्री  
 प्रदीपजी-सौ. नेहाजी, श्री प्रमोदजी-सौ. सरोजबाईजी चोरडिया-पारोला  
 मौसी-मौसा : सौ. कंचनजी-श्री नेमीचन्दजी बागेरेचा-नासिक  
 भतीजा-भतीजी : श्री खुशजी, श्री जिनेशजी, तितिक्षाजी, विधिजी, जिनिशाजी, हृदयजी खिंवसरा  
 भानजा-भानजी : सुश्री स्तुतिजी, जिनलजी, कल्पेशजी, सौम्याजी

परिवार से दीक्षित बहन: रत्नसंघ में दीक्षित महासती श्री पदमप्रभाजी म.सा.

### धार्मिक अध्ययन

- आगम कण्ठस्थ : उत्तराध्ययनसूत्र, दशवैकालिकसूत्र, व्यवहारसूत्र, आचारांग सूत्र प्रथम श्रुतस्कन्ध,  
 सुखविपाक सूत्र, अनुत्तरोववाई, वृहत्कल्प, दशाश्रुतस्कन्ध, नन्दीसूत्र, आवश्यकसूत्र,  
 तत्त्वार्थसूत्र  
 सूत्र वाचनी : अन्तगडदशासूत्र, उपासकदशांगसूत्र, निशीथसूत्र।  
 स्तोत्र कण्ठस्थ : 25 एवं 67 बोल, गति-आगति, लघुदण्डक, कर्मप्रकृति, समिति-गुप्ति, गमा, 33 बोल,  
 98 बोल, 32 बोल, 102 बोल का बासठिया, गुणस्थानस्वरूप, 50 बोल, 47 बोल,  
 800 बोल की बंधी, कायस्थिति, जीवधडा, छोटी गतागत, द्रव्येन्द्रिय, ज्ञानलब्धि, जीव  
 पज्जवा, अजीव पज्जवा, सिंज्जणा, पन्नवणा के कुछ थोकड़े, कर्म ग्रन्थ 1 से 6 आदि।  
 स्तोत्र कण्ठस्थ : भक्तामर, कल्याणमंदिर, पुच्छिंस्सु णं  
 भाषा ज्ञान : हिन्दी, मराठी, राजस्थानी  
 धार्मिक परीक्षा : ज्ञानार्थी परीक्षा- 1 से 3

वैराग्यावधि : 3 वर्ष 6 माह



## विश्वता सुश्री रुचिताजी खिंवसरा

जन्मतिथि- 12 फरवरी 1993

जन्मस्थान- बोदवड़ (महा.)

मूल निवास- माण्डल (महा.)

व्यावहारिक शिक्षा- बी.सी.ए. (प्रथम वर्ष)

### पारिवारिक परिचय

बड़े दादा-दादी : श्री इन्द्रचन्द जी-सौ. चन्द्रकला जी खिंवसरा

दादा-दादी : श्री भागचन्दजी-सौ. सायरबाईजी खिंवसरा

छोटे दादा-दादी: स्व. श्री रमेशचन्दजी-श्रीमती आशाबाई जी खिंवसरा

बड़े पिता-माता: श्री सुनीलकुमारजी-सौ. शोभाबाईजी खिंवसरा

पिता-माता : श्री अशोककुमारजी-सौ. सुशीलाजी खिंवसरा

चाचा-चाची : श्री सुरेन्द्रकुमारजी-सौ. अनिताजी खिंवसरा

भाई-भाभी : श्री सुमितजी-सौ. सोनालीजी खिंवसरा

भाई-बहन : श्री अमितजी, श्रेणिकजी, ऋषभजी, सिद्धेशजी, अक्षय जी, सिद्धार्थजी, सुश्री रश्मिजी, पूजाजी

बहिन-बहनोई : सौ. चेतालीजी-श्री पियूषजी-नरडाणा, सौ. अंकिताजी-श्री पुनीतजी मूथा-पूना, सौ. खुशबूजी-श्री सुदीपजी बाफना-नगर

भतीजा : श्री नित्यजी भानजा-भानजी : साचीजी, एषणाजी

भुआ-भूडोसा : सौ. अनिताजी-श्री अनंतजी साबद्रा-नासिक, सौ.ममताजी-श्री राजेन्द्रजी रांका-सटाणा

नाना-नानी : श्री कांतिलालजी-स्व. श्रीमती शांताबाईजी गेलड़ा-औरंगाबाद

मामा-मामी : श्री प्रकाशचन्दजी-सौ. मधुजी गेलड़ा-नागपुर, स्व.श्री अनिलकुमारजी-श्रीमती अनिताजी गेलड़ा, श्री सुनीलकुमारजी-सौ. वनिताजी गेलड़ा-जलगांव

मासी-मासोसा : सौ. योगिताजी-श्री संदीपजी तातेड़-यवतमाल

परिवार से दीक्षित बहन : रत्नसंघ में दीक्षित महासती श्री पद्मप्रभाजी म.सा.

### धार्मिक अध्ययन

आगम कण्ठस्थ : आचारांग-प्रथम श्रुतस्कन्ध, अनुत्तरोववाईसूत्र, सुखविपाकसूत्र, उत्तराध्ययनसूत्र, दशवैकालिक सूत्र, नन्दीसूत्र, वहत्कल्पसूत्र, व्यवहारसूत्र, दशाश्रुतस्कन्ध, पुच्छिंस्सुणं, तत्त्वार्थसूत्र, आवश्यक सूत्र।

सूत्र वाचनी : उत्तराध्ययनसूत्र, दशवैकालिकसूत्र, नन्दीसूत्र, अनुत्तरोववाइयसूत्र आदि।

स्तोक कण्ठस्थ : 25, 67, 33 बोल, गति-आगति, लघुदण्डक, कर्म प्रकृति, समिति-गुमि, गमा, 32 बोल, 98 बोल, 102 बोल का बासठिया, गुणस्थानस्वरूप, कायस्थिति, ज्ञानलब्धि, द्रव्येन्द्रिय, सिंजझणा, कर्मग्रन्थ 1 से 6 पन्नवणा के कुछ थोकड़े आदि।

स्तोत्र कण्ठस्थ : भक्तामर, कल्याणमन्दिर

भाषा ज्ञान : हिन्दी, मराठी वैराग्यावधि : 4 वर्ष धार्मिक परीक्षा : ज्ञानार्थी परीक्षा- 1 से 3



## विश्वता सुश्री खुशबूजी जैन

जन्मतिथि- 24 जून 1999

जन्मस्थान- खेरली, जिला-अलवर (राज.)

मूल निवासी- गंगापुरसिटी (राज.)

व्यावहारिक शिक्षा- सीनियर हायर सैकण्डरी

### पारिवारिक परिचय

- दादा-दादी : स्व. श्री ज्ञानचन्दजी-श्रीमती सरोजजी जैन 'समूची वाले', खेरली
- बड़े पिता-माता: श्री लखमीचन्दजी-श्रीमती उर्मिलाजी जैन
- पिता-माता : श्री सुशीलकुमारजी-श्रीमती मायाजी जैन
- चाचा-चाची : श्री कमलेशजी-श्रीमती सीमाजी जैन
- भुआ-भूड़ोसा : श्रीमती हेमलताजी-श्री दीपचन्दजी जैन  
श्रीमती अनिताजी-श्री चन्द्रप्रकाशजी जैन
- भाई-बहन : श्री अंकितजी, श्री सचिनजी जैन, श्री राकेशजी, श्री पंकजजी, श्री ऋषभजी,  
सुश्री रश्मिजी जैन
- नाना-नानी : स्व. श्री नेमीचन्दजी-स्व. श्रीमती पिस्तादेवीजी जैन
- मामा-मामी : श्री अशोककुमारजी-श्रीमती विमलाजी जैन
- मासी-मासोसा : श्रीमती राकेशदेवीजी-श्री कमलकिशोरजी जैन,  
श्रीमती सुनिताजी-श्री सुमतजी जैन

### धार्मिक अध्ययन

- आगम कण्ठस्थ : दशवैकालिकसूत्र, सुखविपाकसूत्र, उत्तराध्ययनसूत्र 1 से 4 अध्ययन, पुच्छिंस्सु णं।
- सूत्र वाचनी : अन्तगड्दशासूत्र
- स्तोक कण्ठस्थ : 25, 67, 33 बोल, जीवधड़ा, लघुदण्डक, पाँच समिति-तीन गुमि, आहार-संयम सुख, कर्मप्रकृति, पाँच देव, विरहद्वार, गति-आगति, योनि, रूपी-अरूपी, 32 बोल का बासठिया, संसार सचिदृण, सुपञ्चक्खाण, दुपञ्चक्खाण, चौदह गुणस्थान का बासठिया, श्वासोच्छ्वास, संज्ञा, उपयोग का थोकड़ा, रत्नाकर पच्चीसी, मेरी भावना।
- भाषा ज्ञान : हिन्दी, अंग्रेजी।
- धार्मिक परीक्षा : आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, जोधपुर, कक्षा 1 से 8, जैनागम स्तोक वारिधि भाग-1, ज्ञानार्थी परीक्षा-1
- वैराग्यावधि : 6 माह

### दीक्षा महोत्सव-कार्यक्रम

#### शोभा यात्रा

वि. सं. 2072 माघ शुक्ला द्वितीया, बुधवार, 10 फरवरी, 2016

शोभायात्रा प्रातः 9 बजे ओसवाल कॉलोनी, दूदू से प्रारम्भ होकर विभिन्न मार्गों से होते हुए महावीर भवन, ओसवाल कॉलोनी, दूदू में परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा. आदि प्रभृति संत-सतीवृन्द की श्रीचरणों में पहुँचकर मांगलिक श्रवण करेंगी।

**अभिनन्दन समारोह**

(वीर परिवार एवं दीक्षार्थियों का)

**समय- 10 फरवरी, 2016 दोपहर 1 बजे****स्थान- एन.बी. गार्डन, मौजमाबाद रोड, दूदू****अध्यक्षता-**

माननीय श्री पी. शिखरमल जी सुराणा

राष्ट्रीय अध्यक्ष-अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ

**मुख्य अतिथि-**

माननीय श्री नरपतमल जी लोढा

महाधिवक्ता-राजस्थान सरकार

**विशिष्ट अतिथि-**

माननीय डॉ. प्रेमचन्द जी बैरवा

विधायक - दूदू विधानसभा क्षेत्र

**वि. सं. 2072 माघ शुक्ला तृतीया, गुरुवार, 11 फरवरी, 2016****अभिनित्क्रमण यात्रा**

प्रातः 9 बजे वीर परिवारों के अस्थायी निवास स्थान से प्रस्थान कर दीक्षा-स्थल पहुँचेगी, जहाँ परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर पूज्य श्री हीराचन्द्रजी म.सा. महान् अध्यक्षवसायी सरस व्याख्यानी श्रद्धेय श्री महेन्द्रमुनिजी म.सा. आदि संत-सतीमण्डल के पावन सान्निध्य में दीक्षा-महोत्सव कार्यक्रम प्रारम्भ होगा।

**दीक्षा विधि शुभारम्भ**

दोपहर 12 बजे लगभग परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा. के मुखारविन्द से

**दीक्षा स्थल****एन.बी. गार्डन**

मौजमाबाद रोड, दूदू, जिला-जयपुर (राज.)

**सम्पर्क सूत्र**

1. श्री पूरणराजजी अबानी-राष्ट्रीय महामंत्री, अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, जोधपुर-93147-10985
2. श्री कैलाशमलजी भण्डारी-राष्ट्रीय संयुक्त महामंत्री, अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, जोधपुर-99291-06314
3. श्रीमती पूर्णिमाजी लोढा, अध्यक्ष-9829019396, श्रीमती बीनाजी मेहता, महासचिव-97727-93625, अखिल भारतीय श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल, जोधपुर (राज.)
4. श्री राजकुमार जी गोलेच्छा, अध्यक्ष-9829020742, श्री मनीष जी लोढा, महासचिव-94144-17817, अखिल भारतीय श्री जैन रत्न युवक परिषद्, जोधपुर (राज.)
5. श्री अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, घोड़ों का चौक, जोधपुर (राज.), फोन : 0291-2636763, 2641445

**दीक्षा समिति**

1. श्री महेन्द्रजी कटारिया-नागपुर, उपाध्यक्ष, अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ-94224-59676
2. श्री धर्मेशजी चौपड़ा-बालोतरा, मंत्री, अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ-94141-08191

**शोभा यात्रा समिति-** 1. श्री मीठालालजी मेहता, 2. श्री ताराचन्दजी नाहर, 3. श्री शौभागसिंहजी बरडिया, 4. श्री ज्ञानचन्दजी नाहर, 5. श्री महावीरप्रसादजी मेहता, 6. श्री गोरधनलालजी कोठारी, 7. श्री सरदारसिंहजी नाहर, 8. श्री धर्मचन्दजी मेहता, 9. श्री भंवरसिंहजी चीपड़, 10. श्री उम्मेदमलजी खींचा, 11. श्री लादूलालजी कोठारी, 12. श्री रितिकजी चीपड़।

**दीक्षा आयोजन समिति-** 1. श्री विनोदकुमारजी मेहता, संयोजक-दीक्षा समिति-98292-70400, 2. श्री माणकचन्दजी कोठारी, संयोजक-दीक्षा समिति-96671-48102, 3. श्री सुरेन्द्रकुमारजी नाहर, सह-संयोजक-दीक्षा समिति-98290-87049, 4. श्री राजेन्द्रप्रसादजी कोठारी, सह-संयोजक-दीक्षा समिति-94132-36502

**दीक्षा समिति स्तम्भ-** 1. श्री गोरधनलालजी कोठारी, 2. श्री महावीर प्रसादजी मेहता, 3. श्री सरदारसिंहजी नाहर, 4. श्री विनोदकुमार जी मेहता, 5. श्री गौतमचन्दजी डोसी, 6. श्री धर्मचन्दजी मेहता, 7. श्री महावीरप्रसादजी कोठारी

**भोजन व्यवस्था समिति-** 1. श्री सुरेन्द्रकुमारजी नाहर, संयोजक-98290-87049, 2. श्री गौतमसिंहजी चीपड़, संयोजक-94607-65636, 3. श्री राजेशजी नाहर, सह-संयोजक-98872-63909, 4. श्री नाथूलालजी नाहर, सह-संयोजक-94143-23826

**वाहन व्यवस्था समिति-** 1. श्री देवेन्द्रकुमारजी मेहता, संयोजक-99280-84822, 2. श्री सुनीलजी कोठारी, संयोजक-92522-06731, 3. श्री गजेन्द्र जी बरडिया, सह-संयोजक-99294-89782, 4. श्री राकेशजी नाहर, सह-संयोजक-91360-06465

**आवास-निवास समिति-** 1. श्री राजेन्द्र जी कोठारी, संयोजक-94132-36502, 2. श्री विमलजी कोठारी, संयोजक-98293-72345, 3. श्री सुनीलजी खींचा, सह-संयोजक-96604-30951, 4. श्री विरेन्द्र जी पोखरणा, सह-संयोजक-99294-16906

**प्रचार-प्रसार समिति-** 1. श्री पारसजी कोठारी, संयोजक-98292-70455, 2. श्री आकाशजी डोसी, संयोजक-96721-22103, 3. श्री हितेश जी कोठारी, सह-संयोजक-88755-88887, 4. श्री महावीरजी मेहता, सह-संयोजक-92516-31225

**आहार-विहार समिति-** 1. श्रीमती चन्द्रलताजी मेहता, संयोजक-97999-37804, 2. श्री हितेशजी मेहता, संयोजक-88900-70400, 3. श्रीमती प्रमिलाजी मेहता, सह-संयोजक-96679-13614, 4. श्री राजेन्द्रजी मेहता, सह-संयोजक-94607-65691

**स्वास्थ्य सेवा समिति-** 1. श्री जीवराजजी डोसी, संयोजक-94605-55046, 2. श्रीमती नीलमजी चीपड़, संयोजक-94607-65637, 3. श्री संजयजी मेहता, सह-संयोजक-92528-42421, 4. श्री अमितजी चीपड़, सह-संयोजक-96949-87230, 5. श्री मनीषजी पोखरणा, सह-संयोजक-92146-97909, 6. श्री टीकमचन्दजी संखलेचा, सह-संयोजक-

**स्वागत समिति-** श्री धर्मचन्द कमलकुमारजी मेहता, श्री विनोदकुमार हितेशजी मेहता, श्री माणकचन्द सचिनजी कोठारी, श्री गोरधनलाल राजेन्द्र निर्मलजी कोठारी, श्री ज्ञानचन्द राजेशजी नाहर, श्री गौतमचन्द आकाशजी डोसी, श्री भंवरसिंह आशीषजी चीपड़, श्री गौतमसिंहजी चीपड़, श्री उम्मेदमल सुनीलजी खींचा, श्री तिलोकचन्द मनीषजी पोखरणा, श्री कैलाशचन्द दीपकजी मेहता, श्री सरदारसिंह सुरेन्द्रजी नाहर, श्री मानसिंह अंकितजी चीपड़, श्री जीवराजजी डोसी, श्री अमरचन्द

महावीरजी मेहता, श्री नरेन्द्रकुमार विरेन्द्रजी पोखरणा, श्री शोभागसिंह विमल धर्मचन्दजी बरडिया, श्री रितिकजी चीपड़, श्री मीठालाल राजेन्द्रजी मेहता, श्री लादूलाल विमल कमलजी कोठारी, श्री पारसमल आशीषजी कोठारी, श्री ताराचन्द नाथूलालजी नाहर, श्री महावीरप्रसाद संदीप, सुनीलजी मेहता, श्री महावीरप्रसाद सुनील जी कोठारी, श्री टीकमचन्दजी संखलेचा, श्री नरेशकुमार अभयजी कोठारी, श्री गौतमचन्द मोहितजी बरडिया, श्री अशोककुमार देवेन्द्रजी मेहता, श्री महेन्द्रकुमार मुकेशजी नाहर, श्री घेवरचन्द विकासजी पोखरणा, श्री राकेशकुमार अर्णवजी नाहर।

### -: वीर परिवार (अस्थायी निवास, स्थायी निवास एवं सम्पर्क सूत्र):-

1. अस्थायी निवास- ओसवाल कॉलोनी, दूदू, सम्पर्क सूत्र- 1. यशवन्त मेहता-94146-71783, 2. मनोज मेहता-94147-02041, कमलेश मेहता-94142-67824, 4. केसर मेहता-98290-36186, स्थायी निवास- लोढ़ा हाउस, कटला की बारी, मेहता मार्केट के पास, जोधपुर
2. अस्थायी निवास- ओसवाल कॉलोनी, दूदू, सम्पर्क सूत्र- 1. विजय खिंवसरा-94050-53397, 2. कांतिलाल खिंवसरा-9420727675, 3. जितेन्द्र खिंवसरा-94225-91499, 4. पुनीत खिंवसरा-94225-91477 स्थायी निवास- पो. मांडल, ता. अमलनेर, जिला-जलगांव (महा.)
3. अस्थायी निवास- ओसवाल कॉलोनी, दूदू, सम्पर्क सूत्र- 1. राजेन्द्र रांका-94231-77409, 2. सुरेन्द्र खिंवसरा-94203-50400, 3. पियुष खिंवसरा-91581-80173 4. सुमित खिंवसरा-94239-50701, स्थायी निवास- पो. मांडल, ता. अमलनेर, जिला-जलगांव (महा.)
4. अस्थायी निवास- ओसवाल कॉलोनी, दूदू, सम्पर्क सूत्र- 1. लक्ष्मीचन्द जैन-94143-04546, 2. सुशील जैन-98875-92057, अंकित जैन-96420-43820, 4. सचिन जैन-98877-49655 स्थायी निवास- पो. गंगापुरसिटी, जिला-सवाईमाधोपुर (राज.)

### आवश्यक निवेदन

1. दीक्षा-महोत्सव की जानकारी आपके संघ एवं क्षेत्र में रहने वाले श्रावक-श्राविकाओं तक पहुँचाने का लक्ष्य रखें।
2. दीक्षा-महोत्सव पर पधारने वाले श्रीसंघों एवं श्रद्धालुओं को परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर पूज्य श्री हीराचन्द्रजी म.सा., महान् अध्यक्षसायी सरस व्याख्यानी श्रद्धेय श्री महेन्द्रमुनिजी म.सा. आदि मुनि मण्डल एवं व्याख्यात्री महासती श्री सुशीलाकंवरजी म.सा., श्री सोहनकंवरजी म.सा., श्री सरलेशप्रभाजी म.सा., श्री विमलेशप्रभाजी म.सा., श्री पुष्पलताजी म.सा., श्री रुचिताजी म.सा. आदि महासतीवृन्द के दर्शन-वन्दन, प्रवचन-श्रवण एवं सत्संग-सेवा का लाभ प्राप्त होगा।
3. आवागमन सम्बन्धी जानकारी सम्पर्क सूत्रों पर एवं दीक्षा स्थल पर पूछताछ कार्यालय से की जा सकती है।
4. आवागमन के साधन- नजदीक का रेलवे स्टेशन किशनगढ़, जयपुर, अजमेर हैं। दूदू जयपुर से 65 कि.मी., अजमेर से 65 कि.मी. एवं किशनगढ़ से 40 कि.मी. हैं।
5. दीक्षा-महोत्सव प्रसंग पर मुनिमण्डल के महावीर भवन, ओसवाल कॉलोनी विराजने की संभावना है।
6. दीक्षा-महोत्सव पश्चात् भोजन व्यवस्था दीक्षा स्थल पर रखी गई है।

## लग्न की वेला (16)

आचार्य श्री उमेशमुनि जी 'अणु'

### पिता-पुत्र का संघर्ष

सागरचन्द्र ने विचार किया कि बिना किसी कार्य में फँसाये अरुण को वश में रखना सम्भव नहीं है। इसलिए उन्होंने अरुण को कार्यों में ऐसा उलझाया कि कई दिनों तक वह आचार्यश्री के दर्शन ही नहीं कर पाया। उसे कार्य के लिए जनपद में भेज दिया गया। वह छोटे ग्रामों में घूम रहा था। उसे सारे दिन और कभी-कभी अर्धरात्रि तक श्रम करना पड़ता था। वह न तो समय पर सो सकता था और न समय पर उठ ही सकता था, अतः कई बार तो वह सामायिक भी नहीं कर पाया था, परन्तु देवाराधन, गुरुवन्दना और धर्मध्यान रूप तत्त्वत्रयी की आराधना तथा नमस्कार महामंत्र के जाप को उसने किसी भी अवस्था में नहीं छोड़ा। भोजन-व्यवस्था भी ठीक नहीं थी। उसे कई बार सायंकालीन भोजन छोड़ना पड़ता था, क्योंकि उसे संध्या को समय पर भोजन ही नहीं मिलता था, परन्तु वह दृढ़ता से रात्रिभोजन के त्याग का निर्वाह कर रहा था। कभी-कभी तो वह सूर्यास्त के पहले जल-पान भी नहीं कर पाता था। वह रातभर प्यासा रहता, परन्तु सूर्योदय से पहले वह कदापि जल नहीं पीता। उसकी पूरी कसौटी हो रही थी। जीवन में यह ऐसा पहली बार ही अनुभव हो रहा था। पर वह घबराया नहीं। उसने सोचा- 'आग में ही स्वर्ण का मैल भस्म होता है। ऐसे ही कष्ट की अग्नि में ही मानव के व्यक्तित्व का मैल नष्ट होता है-अन्तराय समाप्त होते हैं।'

जब वह कार्य से निवृत्त होता उसे यत्किंचित् समय मिलता तब उसका चिन्तन चलने लगता- 'जिनेश्वरदेव की वाणी सही है कि धर्म-आराधना सभी जीवों के लिये सुलभ नहीं है। कितने-कितने आवरण हैं- कर्मों के! अतः अनेकानेक विघ्न बाधाएँ खड़ी होती रहती हैं। पिताजी तो निमित्त मात्र हैं। उन्हें दोष देना व्यर्थ है। मेरे ही अशुभ कर्म का उदय है। क्या मैं इन बाधाओं से हार जाऊँ?.....' उसे मुस्कान भरी मुद्रा में गुरु भगवान दिखायी देते। वे पूछ रहे हैं- 'अरुण! बहुत दिनों में आये। इतने दिन कहाँ थे? तुम कई दिनों से दर्शन भी नहीं कर सके!' अरुण कल्पना में उत्तर दे रहा है- 'क्या करूँ, भन्ते! कर्म नाच रहे हैं?.....चिन्तन में अचानक दृश्य पलट जाता है। एकदम परीक्षण सभा का दृश्य उभर आता है.... 'शिवसुन्दर और गंगेश दोनों बैठे हैं। दोनों के आकर्षक मुखड़े भले लग रहे हैं। उनके भाल पर कुंकुम के लाल-लाल तिलक शोभित हो रहे हैं, जिन पर लगे हैं-श्वेत अक्षत के

दाने। वे मुख की शोभा को द्विगुणित कर रहे हैं। कितने मनोहर! कैसा शीलसौजन्य! जन-जन के आकर्षण के केन्द्र हो रहे हैं.....मधुर हैं उनके वचन! उनसे वार्तालाप करूँ! उनका परिचय करूँ। उनका संग उत्तम रहेगा।” फिर कभी उसे अकेला शिवसुन्दर दृष्टिगत होता मैत्री का हाथ बढ़ाता हुआ तो कभी- ‘सखे! किस ध्यान में हो’-कहता हुआ और चुहल करता हुआ गंगेश आ खड़ा होता। फिर अचानक गुरुदेव के कोई प्रशिष्य मुनि ही स्मृति में साकार हो जाते तो कभी गुरुदेव स्वयं कृपा-वृष्टि करते हुए प्रतीत होते। कभी माँ सिद्धिदेवी को तो कभी भाभी को अपनी-अपनी मुद्राओं में देखता हुआ और कभी पिता से विवाद करता हुआ स्वयं ही कल्पना में रम जाता। फिर ध्यान आता, और वह चौंक पड़ता- ‘कहाँ हैं ये सब! कैसा है यह मन! मानो यह ब्रह्मा ही है। न जाने कितनी बड़ी और कितनी विचित्र सृष्टि खड़ी कर लेता है। गुरुदेव भी क्या सोचते होंगे। सदा-सदा के लिये चरणों में बसने की भावना वाला अब दर्शन से ही दूर पड़ गया है।’ वह थक हुआ तो होता ही। उसे निद्रादेवी दुलार से अपनी गोद में लुढ़का लेती। फिर प्रातःकाल उठकर अपने दैनिक नित्यक्रिया से निवृत्त होता और कार्य में लग जाता।

इस प्रकार भूख, श्रम और चिन्ता ने उसके कोमल शरीर पर प्रभाव डाला। उसका शरीर कृश प्रतीत होने लगा। मुख सूखा-सूखा और फीका दिखाई देने लगा। गौरवर्ण में झाँकती हुई लाली अल्प हो गयी, जिससे उसके वर्ण में विशेष श्वेतता आ गयी। कार्य पूरा होने पर वह घर लौटा। सागरचन्द्र को उसने प्रणाम किया। उसके दुर्बल शरीर और फीके मुख को देखकर वे चौंके। पर “वहाँ आनन्द में रहे”- बस इसके सिवाय उन्होंने कुछ नहीं पूछा। फिर वह माता के पास आया। उसे प्रणाम किया। उसने उसके दुर्बल शरीर को देखकर पूछा- “वत्स! तुम्हारा स्वास्थ्य कैसा है?” अरुण ने उदास स्वर से कहा- “अच्छा ही है! ऐसी कोई बात नहीं है।” उसके पिता ने उसका समर्थन करते हुआ कहा- “हाँ! ऐसी कोई बात नहीं है”- मानो वे अपने को ही आश्वासन दे रहे हों, इस प्रकार बोले- “लगता है कि यात्रा और कार्य अधिकता से श्रमित हो गया है। विश्राम से सब कुछ ठीक हो जायेगा” यह कहकर वे वहाँ से खिसक गये।

सिद्धिदेवी यह तो जानती थी कि पिता-पुत्र में कुछ तनाव-सा चल रहा है। परन्तु उसे यह पता नहीं था कि यह तनाव किस बात को लेकर है और स्थिति कहाँ तक पहुँच गयी है। बड़ी बहू ने एक बार उससे अवश्य कहा था- “अम्ब! छोटे भैया पर तात न जाने क्यों अप्रसन्न हो रहे थे।” अरुण पर किसी का अप्रसन्न होना एक अनहोनी बात है, इस प्रकार उसने वह बात कही थी, पर वह यह सोचकर कि ‘अरुण अभी नया-नया है- व्यापार कार्य

में, अतः उससे कुछ त्रुटि हो गयी तो वे उसे समझा रहे होंगे’ - बहू की बात पर ध्यान नहीं दिया, परन्तु आज स्वामी की बात सुनकर उसे लगा कि वे कुछ अति कर गये हैं और इसका उन्हें अपराध-बोध हुआ है। तभी वे अरुण से अच्छी तरह से बात नहीं कर सके और यहाँ से खिसक गये। उसने देखा कि अरुण इतने दिन से आया है। फिर भी गुरुदेव के दर्शन करने नहीं गया। तब उसने उससे पूछ ही लिया- “वत्स! गुरुदेव के दर्शन करके नहीं आया।”

“अम्ब! जब सौभाग्य होगा, तब दर्शन हो जायेंगे!”

इस वक्रोक्ति से सिद्धिदेवी सशंक हो गयी। अरुण माता की ओर नहीं देख रहा था। उसकी दृष्टि नीचे झुकी हुई थी। सिद्धिदेवी उसके समीप आयी। उसकी तुड़डी को छूकर, उसके मुँह को ऊपर करती हुई वह बोली- “ऐसा क्यों बोल रहे हो, वत्स!” अरुण की आँखें डबडबा गयी थी। वह बड़ी कठिनाई से रुद्ध कण्ठ से बोला- “क्या कहूँ, अम्ब! अपने कर्म का ही दोष है।”

सिद्धिदेवी समझ गयी कि कोई मर्म को छूने वाली बात हो गयी है, जिसे अरुण छिपा रहा है। उसने भेद खुलवाने के लिये पूछा- “मैं कुछ समझ नहीं पायी! ऐसी क्या बात हो गयी है।” अरुण ने अपने पर नियन्त्रण पा लिया। वह संयत स्वर से बोला- “अम्ब! कितने ही दिन हो गये हैं, मैं गुरुदेव के दर्शन नहीं कर पाया।”

“इतने दिन से बाहर थे, वत्स! दर्शन कैसे करते?”

“नहीं, अम्ब! दर्शन करना पहले से ही बन्द है। जिस दिन से कलायतन जाना बंद हुआ उसी दिन से।”

“तब्र तो बहुत दिन हो गये, वत्स! तुम तो नित्य दर्शन-लाभ लेने वाले हो। तभी गुरुदेव ने पूछा था- “अरुण दर्शन करने नहीं आया?’ उस समय तुम जनपद में थे, इसलिए मैंने कह दिया कि बाहर गया है। परन्तु तुम उससे पहले से ही नहीं जा रहे हो, यह बात तो आज ही जानी। किसने तुम्हें ऐसे कौनसे कार्य में लगा दिया है या तुम पर प्रतिबन्ध लगा दिया है जो तुम गुरुदेव के दर्शन करने नहीं जा पाये?” सिद्धिदेवी असली कारण का पता लगाना चाह रही थी।

अरुण ने अपने मुँह से भेद खोलना उचित नहीं समझा। इसलिए वह वहाँ से उठता हुआ बोला- “कर्मों ने! और कौन प्रतिबन्ध लगायेगा, अम्ब!” यह कहकर वह झटके से भीतर चला गया। सिद्धिदेवी को लगा कि मैंने कारण का पता लगाने में विलम्ब कर दिया है। इसीलिये यह अप्रसन्न है। बड़ी बहू ने मुझे अरुण पर स्वामी के रुष्ट होने का संकेत किया था। हो न हो, स्वामी ने ही इसके उपाश्रय जाने पर प्रतिबन्ध लगा दिया है।”

अरुण स्नान आदि से निवृत्त हुआ। आज उसने पेट भरकर भोजन किया। उसके पश्चात् कुछ विश्राम किया। विश्राम करते हुए उसे विचार आए- “मैं कैसा हो गया हूँ? क्या मैं धर्म का अधिकारी पात्र हूँ? पिताजी ने मुझे जरा-सी आँख दिखायी और मैं बैठ गया, दुबक गया। मुझमें सामर्थ्य का अभाव है। धर्म का भार वहन करने की शक्ति मुझमें नहीं है। इसीलिए गुरुदेव ने कहा होगा- ‘अपने मन के भीतर झाँकों! मेरा मन ही दुर्बल है-संकल्प ही कच्चा है।’ इस विचार से उसके हृदय में स्फूर्ति आ गयी। जब मन को अपनी दुर्बलता वास्तविक रूप से दृष्टिगत हो जाती है, तब वह उसे निकाल फेंकने के लिये तत्पर हो जाता है।

सागरचन्द्र प्रसन्न थे कि अरुण कार्य में लग गया है। उस पर अल्प प्रयत्न से ही पूर्णतः प्रभाव हो गया है। उन्हें अपनी सफलता के नशे में यह बोध ही नहीं हुआ कि ज्वालामुखी भीतर ही भीतर धुँधूआ रहा है और पता नहीं कब विस्फोट हो जायेगा? उन्होंने आज अरुण से कार्य का विवरण लिया, जिससे उनके मन में विशेष संतोष हुआ। श्रेष्ठी कुछ सोच ही रहे थे कि उन्होंने अरुण को कहीं जाने के लिए उद्यत देखा। बस उन्हें शंका हो गयी। उन्होंने उसे टोका- “अरुण! कहाँ जा रहे हो?”

उसने मुड़कर कहा- “जा रहा हूँ अपने ठिकाने।” फिर उसने पूछा- “कुछ काम हो तो बताइये?” सागरचन्द्र अपने ठिकाने शब्दों को सुनकर विचार में पड़ गये- ‘कैसा लड़का है? घर इसका ठिकाना नहीं है। मानो यहाँ यह भृत्य है।’ परन्तु प्रकट रूप से यही कहा- ‘काम तो यह करना ही पड़ा है।’

उसने झट से उत्तर दिया- “अभी इस कार्य की जल्दी नहीं है। फिर हो जायेगा।” यद्यपि वे समझ चुके थे कि वह कहाँ जा रहा है, फिर भी उसके हृदय में भय पैदा करने के लिए उन्होंने पूछा- “पर, जा कहाँ रहे हो?” इस प्रश्न से न तो उसे भय ही हुआ और न संकोच ही। उसने तुरन्त स्पष्ट रूप से कहा- “सामायिक करने जा रहा हूँ।”

“अच्छा, तो यों कहीं न स्थानक जा रहे हो। गुरुजी से मिलने।”

“हाँ, यही तो कह रहा हूँ। वहीं जा रहा हूँ। सामायिक करने वहीं तो जाऊँगा और गुरुदेव के दर्शन तो करूँगा ही।”

सागरचन्द्र ने देखा कि इतने दिन का किया हुआ श्रम धूल में मिलने जा रहा है। वे तड़प उठे। अतः आवेश में बोले- “धर्म करने के लिये जिन्दगी पड़ी है। अभी अर्थ-उपार्जन की आयु है। घर में काम तो पड़ा रहे और आप सामायिक करने भागे।”

अरुण में आज न जाने कहाँ से इतना साहस आ गया। वह शिष्टाचार भंग करना तो नहीं चाहता था, परन्तु पिता की अति से वह त्रस्त था। अतः स्पष्ट कहे बिना रह भी नहीं

सकता था। फिर भी उसने अपने स्वर को बहुत ही संयत रखते हुए कहा—“तात! आप अप्रसन्न क्यों हो रहे हैं? मुझे समझ में नहीं आ रहा है कि इस प्रकार रोक लगाने से क्या होगा? और मैं ऐसा कौनसा बुरा कार्य करने जा रहा हूँ, जो मुझ पर प्रतिबन्ध लगाया जाय? आपने ही तो संतों के पास जाना सिखाया। फिर मेरे गुरु और आपके गुरु अलग-अलग नहीं हैं। मैं आपसे पूछ रहा हूँ कि मेरे कार्य नहीं करने से गृह-व्यवहार में कौनसी बाधा उत्पन्न होती है? फिर भी मैं कामचोर नहीं हूँ। मेरे योग्य कार्य मैं करता ही हूँ। इतने दिनों से मैं कार्य में ही तो उलझा रहा।

अरुण की ये बातें सुनकर सागरचन्द्र आश्चर्य-चकित थे। जो कभी उनकी बात का उत्तर देने में ही घबराता था, वही अरुण आज बिना किसी हिचक के, डटकर उनका प्रतिवाद कर रहा है। उन्होंने अपने आवेश पर नियन्त्रण किया और शान्त रूप से कहा—“मैंने तुम्हारा भाषण सुना। मैं धर्म करने का कहाँ मना कर रहा हूँ। परन्तु सब काम समय पर होने चाहिये। अभी कहाँ ऐसे वृद्ध हो गये हो कि जो परलोक बनाने की चिन्ता लग गयी।”

चाहे कलह हो या कुछ भी हो—अरुण आज दबना नहीं चाहता था। वह दृढ़ता से बोला—“तात! वही तो कर रहा हूँ। काम के समय काम और धर्म के समय धर्म। इन दिनों मैंने आराधना को कितना पीछे धकेल दिया? आज कई दिनों में गुरुदेव के दर्शन करने जा रहा हूँ और धर्म से मात्र परलोक ही बनता है ऐसा नहीं है। तात! पहले इहलोक बनता है। काल का क्या भरोसा? वृद्धावस्था आयेगी भी या नहीं?”

सागरचन्द्र को पुत्र के उत्तर से अति निराशा हुई। परन्तु वे यह अच्छी तरह से समझते थे कि जिसमें ताड़ना-तर्जना काम करती है, उस वय से अरुण पार हो गया है। अब उसकी वय मित्रवत् आचरण करने की है। अतः सागरचन्द्र उसके पास गये और बड़े प्यार से उसके कंधे पर हाथ रखकर बोले—“वत्स! रुष्ट मत होओ। मैं यह जानता हूँ कि तुम कुमार्ग पर नहीं जा रहे हो। कोई असत् कार्य नहीं कर रहे हो और कुल के गौरव में दाग लगे—ऐसा भी कुछ नहीं कर रहे हो। परन्तु अब तुम युवा हो गये हो। पिता का कर्तव्य होता है कि बचपन में संतान को लाड़-प्यार दे, कुमारवय में अध्ययन करवाये और युवावय में गृहकार्य में दक्ष करके विवाह कर दे। मैं तुम्हारा पिता हूँ। मैंने तुम्हारे प्रति दो कार्य कर दिये हैं। अब तीसरा कार्य करना शेष है। अतः तुम्हें विवाह के पावन सामाजिक बन्धन में बाँधकर गृहकार्य में लगा दूँ और तुम्हें सुख से गृह-संसार चलाते देख लूँ तो अपने कर्तव्य से मुक्त हो जाऊँ।”

अरुण पिता की प्रेममयी बातें सुनकर अवाक् रह गया। उसे यह आशा नहीं थी कि वे अपना पक्ष इस प्रकार प्रस्तुत करेंगे। उसका हृदय धड़कने लगा। उसकी दृष्टि नीची हो गयी। वह अभी लन के विषय में चर्चा करना नहीं चाहता था। अभी उसकी मनःस्थिति भी

अव्यवस्थित थी। इस समय तो वह मात्र धर्म-आराधना के लिये ही स्वतन्त्रता चाहता था। उसने मिठास को मिठास से ही काटना उचित समझा। अतः वह बोला- “आपका मुझ पर इतना प्रेम है, तात! इतनी कृपादृष्टि है और आपका वरदहस्त मेरे सिर पर है तो फिर मुझे चिन्ता किस बात की? अभी विवाह की व्यर्थ चिन्ता क्यों? आचार्य गुरुदेव वृद्ध हैं। उनका मुझ पर अपूर्व वात्सल्य है। वे मुझे प्रेम से ज्ञान प्रदान करते हैं तो इस स्वर्ण-अवसर का लाभ उठा लूँ। यह स्वर्ण अवसर यों ही न चला जाय इस समय यही अच्छा है।”

सागरचन्द्र पुत्र की चतुराई भरी बात सुन रहे थे। उन्हें लगा कि पुत्र अभी अपने मन का भेद नहीं दे रहा है। अन्तरंग में वैराग्य की परिणति कितनी है? क्या यह सचमुच में साधु बनना चाहता है? उनका हृदय कह रहा था कि उनकी शंका बिल्कुल निर्मूल नहीं है। अरुण अभी उनसे वाक्-छल कर रहा है। अतः उन्होंने उसके भावों की थाह लेने के लिये कहा- “चिरंजीव! आचार्यप्रवर तो साधु हैं और हम गृहस्थ हैं। साधु तो राव से लगाकर रंक तक सभी को साधु बनाना चाहते हैं। अतः उनका सत्संग परिमित ही अच्छा। हमें धार्मिक ज्ञान भी होना चाहिये- यह सही है, पर मर्यादित ही ठीक है। गृहस्थ को गृहस्थाश्रम का ज्ञान और उसके निर्वाह का अभ्यास होना चाहिये।”

अरुण चाहता तो इस समय अपना निर्णय पिता को बता सकता था, परन्तु वह इस क्षण का लाभ नहीं उठा सका और बात को टालते हुए बोला- “तात! मैंने कलायतन में लौकिक कलाओं का ज्ञान सम्पादन कर ही लिया है। अब थोड़ा धार्मिक ज्ञान उपार्जन भी कर लूँ तो हानि क्या है? समय बहुत हो गया है। अब मैं जाने की आज्ञा चाहता हूँ।”

उसने पिता के उत्तर की प्रतीक्षा किये बिना ही वहाँ से प्रस्थान कर दिया। सागरचन्द्र देखते ही रह गये। उन्हें एक आघात लगा, क्योंकि आज पुत्र ने पिता के गौरव को ठेस पहुँचायी थी।

सिद्धिदेवी ने आज पिता-पुत्र की बातें पूरी सुनीं। उसने अभी पति को कुछ कहना उचित नहीं समझा। उसे पति के द्वारा हो रही अति अच्छी नहीं लगी। अरुण ने अभी तक अपने वैराग्य की बात ही अपने को नहीं कही तो उस पर नियन्त्रण रखने से क्या लाभ?

(क्रमशः)

### धोवन पानी हेतु निःशुल्क राख उपलब्ध

सम्पूर्ण भारत में कहीं भी धोवन पानी हेतु राख कोरियर/डाक द्वारा निःशुल्क भेजी जाती है। राख मंगवाने के लिए अपना नाम, डाक का पता, पिनकोड सहित मोबाइल नं. 077427-31886 या 094797-05060 (अक्षय जैन) पर सम्पर्क करें।

## अहिंसा और समाज

प्रोफेसर प्रेम सुमन जैन

भारतीय विचारकों, विभिन्न दर्शनों और विश्व के चिन्तकों में विश्व-संरचना (सृष्टि) और ईश्वर की अवधारणा पर विभिन्न मत प्राप्त हैं। किन्तु विश्व का कोई भी धर्म अहिंसा के आचरण को नकारता नहीं है। सबने मनुष्य के सदाचरण की कसौटी अहिंसा, करुणा, अनुकम्पा और सेवा को माना है। यह निर्विवाद सत्य है कि किसी भी धर्म की नींव में हिंसा नहीं है, अहिंसा है।

वैदिक धर्म में यज्ञ का अर्थ आदान-प्रदान भी किया गया है, अर्थात् प्रकृति से हम जो कुछ लेते हैं, उसे हम अहिंसा के रूप में लौटाते हैं। हमारे जीवन की आवश्यकता से जो अधिक अर्जन है, उसे उच्छिष्ट, प्रसाद के रूप में बाँटना अहिंसा है। प्रकृति बचेगी तो हम सुरक्षित रहेंगे। महाभारत के अनुशासन पर्व में अहिंसा को परम धर्म और सकल धर्म कहा गया है। हिन्दू पुराणों में अहिंसा को धर्म का द्वार माना गया है। कूर्म पुराण और अग्नि पुराण में अहिंसा की विशद व्याख्या प्राप्त होती है। अहिंसा का सकारात्मक रूप परोपकार और सेवा है। पुराणों में अहिंसा के कार्यों को 'पूर्त' कहा गया है। अर्थात् सभी प्राणियों को जल और भोजन प्राप्त करने का अवसर देना पूर्त धर्म है, अहिंसा है। बौद्ध धर्म के ग्रन्थ धम्मपद एवं सुत्तनिपात आदि में अहिंसा, मैत्री और करुणा के संदेश हैं।

'आत्मनः प्रतिकूलानि परेषां न समाचरेत्' सिद्धान्त को महाभारत में अहिंसा का आदर्श-माना गया है। श्रमण परम्परा में तीर्थंकरों की वाणी में भी उद्घोष हुआ है कि सभी जीव जीना चाहते हैं, किसी को दुःख प्रिय नहीं है, अतः उन्हें अपने समान मानकर उनके जीवन की रक्षा की जाय। आचारांगसूत्र में वनस्पति (प्रकृति) और मनुष्य में कई समानताएँ बतायी गई हैं, जिसका तात्पर्य है कि प्रकृति की रक्षा से, मनुष्य की रक्षा होगी। अतः अहिंसक जीवन का अर्थ है प्रकृति से संगत जीवन जीना। अर्थात् सादगी का जीवन, धर्म और अहिंसा एक ही सिक्के के दो पहलू हैं। जैन आचार्य कार्तिकेय कहते हैं कि वस्तु का स्वभाव धर्म है, क्षमा, सरलता, कोमलता आदि गुण धर्म हैं। सच्ची श्रद्धा, ज्ञान और सदाचरण धर्म हैं तथा जीवों का रक्षण धर्म है। अतः जैन परम्परा के अनुसार सर्वकल्याण का आधार अहिंसा है, यही सर्वोदय का आधार है।

ईसाई धर्म में सकारात्मक अहिंसा की व्याख्या है। वहाँ सेवा और प्रेम के माध्यम से

मानव जीवन को सुखी बनाने का प्रयत्न है। इस्लाम धर्म में तो इस्लाम शब्द का अर्थ ही है-शान्ति, जो पड़ोसियों की रक्षा से सम्भव है। यहूदी धर्म में अहिंसा को केन्द्र में रखा गया है। वहाँ पर जो 10 कमान्डमेन्ट हैं, उनमें पाँच तो पंचशील या पाँच अणुव्रत ही हैं। अतः अहिंसा के पालन में सभी धर्मों की स्वीकृति है।

ईसाई धर्म की प्रचारक मद्र टेरेसा का जीवन शान्ति और अहिंसा के प्रचार में ही बीता। वे कथन में नहीं, क्रिया में विश्वास रखती थीं। उनसे एक बार किसी पत्रकार ने पूछा कि शान्ति और अहिंसा की स्थापना के लिये क्या किया जाय? मद्र टेरेसा का सीधा जवाब था कि तुम अपने घर जाकर बच्चों और बूढ़ों को प्यार करो, उनकी सेवा करो, अपनी पत्नी की सेवा तो तुम करते ही होंगे। इस कथन का अर्थ यह है कि हमारे आस-पास कोई व्यक्ति अवाञ्छित और उपेक्षित न हो। प्रत्येक से हम जुड़ें, उनको सहयोग दें, यहीं अहिंसा है।

अहिंसा-पालन और उसके प्रयोगकर्ताओं के हजारों उदाहरण भारतीय साहित्य में, समाज में मिलते हैं। तीर्थंकरों, महापुरुषों के जीवन अहिंसा के महत्त्व की प्रेरणा देते हैं। यथा-

1. जैन परम्परा में तीर्थंकर अरिष्टनेमि (नेमिनाथ) और राजुल का जीवन अहिंसा, प्राणिरक्षा का अनुपम उदाहरण है। नेमिनाथ ने पशुओं की रक्षा के लिए अपने गृहस्थ जीवन के सुख त्याग दिये। राजुल ने अहिंसा के पालन के लिए पति का अनुगमन किया।
2. विश्व में पहला उदाहरण है चक्रवर्ती भरत और सम्राट् बाहुबली का, जिन्होंने संहारक युद्ध को अहिंसक प्रतिस्पर्धा में बदल दिया। उन्होंने दृष्टियुद्ध, मल्लयुद्ध और जलयुद्ध द्वारा करोड़ों लोगों के जीवन की रक्षा की।
3. महात्मा गाँधी ने अहिंसक प्रयोगों से समाज और राजनीति को बदल दिया है। गांधी का सारा जीवन अहिंसा और अपरिग्रह के प्रयोग का उदाहरण है। इसका अनुकरण पूर्व राष्ट्रपति वैज्ञानिक डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम ने अपने जीवन में किया।
4. गाँधी जी के सहयोगी जे.सी. कुमारप्पा ने अहिंसक अर्थव्यवस्था की सम्पूर्ण व्याख्या की है। अपरिग्रह और अहिंसा, कृषि और अहिंसा, चिकित्सा और अहिंसा पर अनेक विचारकों ने कार्य किया है। उनके प्रयोगों के प्रचार की आवश्यकता है।
5. राजस्थान में हम लोग इस युग की अहिंसा-साधिका साध्वी यश कुंवर के कार्यों से परिचित हैं। उन्होंने अपने प्रयत्नों से जोगणिया माता की हिंसाभूमि को सेवा में बदल दिया है। उनकी प्रेरणा से 1975 में पशु-बलि बन्द विधेयक सरकार ने पास किया है, जिसका पालन आज भी किया जाता है। आचार्य हस्तीमल जी ने कोटा के निकट

आनन्तपुरा एवं अन्य स्थानों पर पशुबलि बन्द करवायी। विश्नोई सम्प्रदाय के सन्त जांभोजी के प्रयत्नों से उनके इलाके में हरिण के शिकार पर प्रतिबन्ध लगा। देश में, समाज में ऐसे अनेक अहिंसा के साधक हुए हैं। उनसे प्रेरणा लेने की आवश्यकता है।

आचार्य तुलसी ने व्यक्ति और समाज में अहिंसापूर्ण आचरण के लिए अणुव्रत आन्दोलन का सफल आयोजन चलाया है। आचार्य महाप्रज्ञ की पूरे देश में अहिंसा-यात्रा संचालित हुई है। आचार्य नानेश की सत्प्रेरणा से रतलाम जिले और मालवा में समाज से उपेक्षित व्यक्तियों के जीवन में शाकाहार और अहिंसक वृत्ति का प्रचार वीरवाल भाइयों में किया गया है। सराकोद्वारक दिगम्बर आचार्य ज्ञानसागर जी महाराज ने उड़ीसा और झारखण्ड के जंगलों में विहार कर वहाँ के भीलों और जनजातियों को शाकाहारी और अहिंसक बनाया है। वे सराक जाति के लोग हैं, जो अब श्रावक बनने की दिशा में आगे बढ़ रहे हैं।

अहिंसक जीवन शैली व्यावहारिक है, किन्तु उसके लिए भावनात्मक आत्मबल की जरूरत है। आज भी विश्व में अनेक ऐसे समुदाय हैं जो आधुनिक हिंसक विकास से दूर रहकर सादगी का जीवन-यापन करते हैं। अमेरिका, कनाडा, मलेशिया, तंजानिया, फिलीपींस आदि के दूरदराज के इलाकों में अमिश, बटेक, बिरहोर, बुएद, फीपा आदि ग्रुप हैं जो सादगी का अहिंसक जीवन जीते हैं, उनके यहाँ पुलिस थाने, फैंक्ट्री, कोर्ट-कचहरी आदि नहीं हैं। वे कृषि और प्रकृति पर निर्भर हैं, आनन्दित हैं।

समाज में अहिंसा के विकास के लिए आवश्यक है कि हमारी आवश्यकताएँ सीमित की जायँ और अर्जन को विसर्जन के साथ जोड़ा जाय।

1. अहिंसा का नैतिक पक्ष प्रामाणिकता और सत्य से उजागर होगा।
2. अहिंसा का आर्थिक पक्ष अपरिग्रह (संचय के अल्पीकरण) से मजबूत होगा।
3. अहिंसा का सामाजिक पक्ष उपार्जन के साथ विसर्जन, दान, सेवा, सदाचार से दृढ़ होगा।
4. अहिंसा का पर्यावरणीय पक्ष अभय (जीव-संरक्षण) से मजबूत होगा।

अहिंसामय जीवन अध्यात्म से भी जुड़ा हुआ है, क्योंकि निर्मल आत्मा का ध्यान सभी रागात्मक प्रवृत्तियों से विराम के लिये है। राग-द्वेष के भावों की क्षीणता ही अहिंसा है।

समाज में अहिंसामय जीवन के प्रचार-प्रसार के लिए व्यक्तिगत, सामाजिक एवं धार्मिक आयोजनों में अति प्रदर्शन की प्रवृत्तियों पर रोक लगाना आवश्यक है। दैनिक जीवन के कार्यों में, विचारों में, आजीविका के उपार्जन में हिंसात्मक वृत्तियों का अल्पीकरण करना होगा। साधारण जन समुदाय अल्प हिंसा और अधिक अहिंसा के कार्यों

को करें, ब्रती, संयमी, श्रावक जन अल्पतर हिंसा एवं अधिकतर अहिंसा के कार्यों में संलग्न हों और गृहत्यागी साधुजन अल्पतम हिंसा का त्याग एवं अधिकतम अहिंसा का पालन मन-वचन-काय से करें तो समाज में अहिंसा और अध्यात्म का उजाला फैल सकता है।

जैन परम्परा में हिंसा से विरत होने के लिए और अहिंसा के परिपालन हेतु यत्नाचार के अनूठे प्रयोग की व्याख्या ग्रन्थों में की गयी है, जिसका अर्थ है जीवन की हर प्रवृत्ति में सावधानी रखना, भावों को शुद्ध रखना। अल्पीकरण की ओर अभिमुख होना। सन्त कबीर का यह कथन कि दास कबीर जतन कर ओढ़ी ज्यों की त्यों धर दीनी चदरिया-जैन धर्म के यत्नाचार का ही विकास है।

-29, उत्तरी सुन्दरवास, उदयपुर (राज.)

## निश्चित ही सुख तुम पाओगे

(तर्ज- जय बोलो महावीर स्वामी की...)

(स्वधनी पोषण व जीव रक्षार्थ सहायता कोष के अन्तर्गत बच्चे-बच्चियों के लिए रचित गीतिका)

गर आकर हाथ बंटाओगे, निश्चित ही सुख तुम पाओगे।।टेर।।  
 जो खाता है, वह खोता है, देने वाला तो बोता है।  
 बोलने से पुण्य बढ़ाओगे, गर आकर.....।  
 जीवों की रक्षा हो जावे, स्वधर्मी भी पोषण पावे।  
 मन ही मन आनन्द पाओगे, गर आकर.....।  
 जितनी इच्छा उतना डाले, अपना कर्तव्य नहीं टाले।  
 कभी भूल न इसे विसराओगे, गर आकर.....।  
 कितने जग में भूखे रहते, पर मुख से कुछ भी नहीं कहते।  
 गर भूख जो उनकी बुझाओगे, गर आकर.....।  
 देने से ही तो बढ़ता है, सागर से नीर न घटता है।  
 इस बात को दिल में धराओगे, गर आकर.....।  
 पेटी युवकों ने सबको दी, बच्चों को सुन्दर शिक्षा दी।  
 औदार्य गुण अपनाओगे, गर आकर.....।  
 बन जाओगे एक दिन दानी, और साथ-साथ होंगे ज्ञानी।  
 फिर 'जीत' कर्म को जाओगे, गर आकर.....।

संकलनकर्ता- अशोक गोगड़, प्रतापनगर, जोधपुर (राज.)

## सहयोग के भाव का विस्तार

श्री रत्नलाल जैन

स्वाइत्जर ने अपनी पुस्तक Whom we say animals (हम जिन्हें जानवर कहते हैं) में अपना एक संस्मरण इस प्रकार लिखा है-

“मैं प्रतिदिन सन्ध्या से कुछ समय पूर्व एक जलाशय के किनारे भ्रमण के लिए जाता था। उसमें अनेक जंगली बत्तखें जलक्रीड़ा करती थीं। वे अंधकार होने से पूर्व उड़कर अन्यत्र सुरक्षार्थ चली जाती थीं। एक दिन माली ने एक छोटी बत्तख के पंख काट दिए। वे सभी उड़े, किन्तु वापिस लौट आए। वह उड़ नहीं सकी।” स्वाइत्जर ने इस दृश्य को देखा। पुनः वे पक्षी उड़े किन्तु दूर तक नहीं जा सके, पुनः लौट आए। कुतूहलवश स्वाइत्जर ने वहाँ निकट जाकर देखा तो पाया कि एक शिशु पक्षी के पंख कटे हुए हैं इसलिए वह उड़ नहीं पा रहा है। शेष पक्षी भी उसके साथ स्नेह की भावनात्मक डोर से बंधे हुए थे, इसलिए वे उड़े नहीं- वे अन्यत्र नहीं गए। जब तक उस शिशु पक्षी के पंख सही नहीं हो गए थे उसकी सेवा में जुटे रहे।

यह एक उदाहरण है- पक्षियों के समुदाय द्वारा अपने समुदाय के किसी पक्षी की सेवा व सहयोग के लिए तत्पर रहने का। यहाँ तक कि वे उस भयानक जंगल में अपनी प्राणहानि जानकर भी प्राणों की परवाह नहीं करते हुए अपने समाज के एक अंग की सेवा करने के लिए डटे रहे।

सेवा, सहयोग व सहकार की भावना मनुष्य की वह मूल प्रवृत्ति है, जो परस्पर लोगों के मनों को जोड़ती है- घृणा, विद्वेष व अलगाव की दीवार को तोड़ती है। इससे दिलों की दूरियां घटती हैं एवं मनुष्य के व्यवहार को व्यापक दायरा उपलब्ध होता है। इसलिए ज्ञानियों ने तो यहाँ तक कहा है कि परिचितों, मित्रों, परिजनों की अपेक्षा अनाश्रितों-असहाय जनों को सहयोग दो, उन्हें आश्रय देने के लिए सदा तत्पर रहो। परिजनों की सेवा में तो स्वार्थभावना रहती है। सच्ची-हार्दिक सेवा तो वह है, जहाँ स्वार्थ-भावना न हो। इसलिए सूफी साहित्य में तो एक दिल को हजारों कार्बों से बढ़कर माना गया है। वहाँ किसी का दिल, उसकी सहायता कर जीतने को कहा है। सैकड़ों बार हजयात्रा करने से बढ़कर है, एक अनाश्रित की सहायता करना।

सारी प्रकृति एक दूसरे के सहयोग पर ही आश्रित है। सृष्टि का छोटे से छोटा प्राणी भी बुद्धिमान माने जाने वाले व्यक्ति के लिए सहायक रहता है। तुच्छ प्राणी के महत्त्व को भी नहीं नकारा जा सकता। ‘परस्परपग्रहो जीवानाम्’ का भी यही सन्देश है कि इस दृष्टि के

सभी प्राणी भावनात्मक दृष्टि से एक दूसरे से जुड़े हुए हैं, अतः परस्पर सहयोग, अपने जीवन को सुखी बनाने के लिए आवश्यक है।

जब हम दूसरों की सहायता करते हैं, तो उन्हें दुःख पहुँचाकर उनका कल्याण कर वास्तव में हम स्वयं अपने सुखों में ही अभिवृद्धि करते हैं- अपनी मानसिक पीड़ा को न्यूनातिन्यून करते हैं। किसी को पीड़ा से कराहता हुआ देखकर कैसा भी पत्थर दिल व्यक्ति हो- पसीज उठता है। किसी की पीड़ा जानकर, देखकर या सुनकर व्यक्ति को एक विचित्र प्रकार की परेशानी अनुभव होती है। उसके कष्ट-निवारण के लिए वह शरीर से भले ही प्रवृत्ति न करे, लेकिन उसका मन व्यथित रहता है, क्योंकि दया, मनुष्य का सहज स्वभाव है। ऐसे समय में जब हम किसी प्राणी की सहायता करते हैं तो क्या वह हमारी मानसिक पीड़ा को- मन की व्यथा को कम करना नहीं है? इस प्रकार किसी की सेवा-सहायता करके हम वास्तव में अपने दिल का विस्तार ही करते हैं। इस प्रकार हमारा क्षेत्र बढ़ जाता है, हम उसकी सहायता करके प्रकारान्तर से स्वयं को सुखी बनाते हैं। दूसरों की सहायता करना अपने दुःखों को हल्का करना है।

असहायों, अनाश्रितों की सहायता करना अपने दुःखों को हल्का करना है, इसलिए किसी की सेवा करते समय- किसी को सहयोग प्रदान करते समय सेवा करने के उत्कृष्ट भाव का धारणकर्ता बनने के लिए आवश्यक है- 1. हम किसी भी प्राणी की अग्लान-भाव से सेवा करें। 2. सेवा-सहयोग पाने वाले व्यक्ति के आत्म-सम्मान की रक्षा करें। 3. सेवा करने के पश्चात् स्वयं को आनन्दानुभूति हो एवं 4. सेवा के पश्चात् प्रतिफल की आकांक्षा न हो।

आज सर्वत्र दुःखी पीड़ित, रोगी, निर्बल, अशक्त व्यक्ति मिल जायेंगे, जो सहयोग दिए जाने के पात्र हैं। उनकी सेवा करते समय मन में ग्लानि का अनुभव नहीं होना चाहिए। ठाणांग सूत्र में तो यहाँ तक कहा है कि ग्लानिरहित एवं बहुमानपूर्वक सेवा करने वाला महानिर्जरा करता है और आत्यन्तिक अन्तवाला होता है- उसका संसार परिमित हो जाता है। सेवा करते समय यदि ग्लानि का अभाव आ गया तो इससे सेवा का महत्त्व ही कम हो जायेगा। घृणा परस्पर की दूरी बढ़ाती है। जबकि सेवाभावना मन की कलुषता को धोकर परस्पर मेल-मिलाप कराती है। सेवापरायण व्यक्ति किसी से घृणा नहीं करता या घृणा करने वाला व्यक्ति किसी की सेवा नहीं कर सकता। अग्लान भाव से की गई सेवा व्यक्ति में परिवर्तन ला देती है।

एक बार कटक में जोरों का हैजा फैला। सेवा करने के लिए सुभाष बोस के नेतृत्व में एक सेवादल का गठन किया गया। सेवादल के सदस्य रोगियों के बीच जाते, सेवा करते

और पथ्य सामग्री देकर आते। एक मौहल्ले में हैदर खां नामक एक दुष्ट स्वभावी व्यक्ति भी था। वह सेवादल के कार्यकर्ताओं से लड़ाई-झगड़ा करता व उन्हें सताता-धमकाता भी था। एक बार उसका लड़का ही बीमार पड़ गया। वह सर्वत्र घूम आया, किन्तु कोई डॉक्टर नहीं मिला- सभी अन्यत्र सेवाकार्य में व्यस्त थे। थका-हारा वह घर लौटा तो देखा कि सेवादल के कार्यकर्ता उसके बेटे की सेवा कर रहे हैं तथा दवा दे रहे हैं। जब हैदर ने कहा कि आप मेरे घर क्यों आए? तो सेवादल के कार्यकर्ताओं ने कहा- “यह लड़का हमारा भाई है, इसकी सेवा करना हमारा कर्तव्य है। यदि इसकी सेवा नहीं करते तो वह दुनिया से चला जाता। हमारी शत्रुता आप से हो सकती है- इस लड़के से नहीं।” यह सुनकर उसका दिल भी पानी-पानी हो गया, पश्चात्ताप के आँसू बहने लगे व रो-रोकर सभी से क्षमा मांगी।

इस प्रकार सच्चे मन से की गई सेवा क्रूर से क्रूर व्यक्ति को भी विनम्र व सरल बना देती है।

यह तभी हो सकता है जब हम सामने वाले व्यक्ति के आत्म-सम्मान की भी रक्षा करें - उस पर एहसान न जताएं। ‘हम सेवा कर रहे हैं’ इस प्रकार का अभिमान हममें जाग्रत न हो। ‘नेकी कर और कुएं में डाल’ की कहावत को सही अर्थों में स्मरण रखना और आचरण में लाना आवश्यक है। सेवाकार्य को स्मरण रखने से व दूसरों के सामने उसका बखान करने से कर्ताभाव का अभिमान भी जागेगा और हमारी दृष्टि से उस पक्ष के प्रति हीनभावना भी घर कर जायेगी। सामूहिक दृष्टि से सभी एक दूसरे के पूरक हैं। कोई एक दृष्टि से महत्वपूर्ण है तो दूसरा दूसरी दृष्टि से। फिर किसी के भी प्रति उपेक्षाभाव क्यों?

सेवा-सहयोग करने का अन्तिम लक्ष्य है- उससे स्वयं को आनन्दानुभूति होना। जिसे सहयोग दिया जा रहा है उसकी पीड़ा व दुःख-दर्द तो कम होगा ही, साथ ही भावों में निस्वार्थता होने के कारण स्वयं को भी आनन्दानुभूति होगी। सेवा में त्याग-भाव की प्रधानता होती है। अहं का त्याग तो मुख्य रूप से करना होता है। ममत्व का विसर्जन भी उसमें आवश्यक है। अहं छूटने पर व्यक्ति लघुता-हलकापन महसूस करता है और इस प्रकार आनन्द-पथ की यात्रा प्रारंभ हो जाती है। ऐसा व्यक्ति प्रतिफल की भी आकांक्षा नहीं करता। वहाँ ग्रहण नहीं, त्याग होता है। ‘मैं किसी की इसलिए सहायता करूँ कि वह भी भविष्य में मेरी सेवा करेगा, इस प्रकार की सोच में सौदेबाजी है, शुद्ध रूप से स्वार्थ की भावना है। निरपेक्ष भाव से की गई सेवा भी एक साधना है, उससे सही रूप में समाधि प्राप्त होती है।’ ‘समाहिकारणं तमेव समाहिं पडिलब्धिं’ अर्थात् जो दूसरों को, प्रतिफल की आकांक्षा के बिना सुख प्रदान करता है, वह स्वयं भी सुख और कल्याण को प्राप्त करता है। (‘स्वाध्याय संदेश’ से साभार)

## ऐसी भी है आधुनिक नारी

श्रीमती निधि दिनेश लोढ़ा

वक्त बदला है और महिलाएँ भी बदली हैं। आज महिला आधुनिक होकर भी मर्यादित और विनम्र है। शिक्षित और आत्मविश्वास से भरपूर है। कुछ दशकों पूर्व वह पीहर और ससुराल भी अकेली जाने से कतराती थी, कोई उसे लेने आता था और कोई छोड़ने जाता था। आज महिला विश्व के किसी भी कोने में अकेले जाने से नहीं डरती।

महिलाओं ने समय के साथ अपने आपको अपडेट किया है। सूचना तकनीकी का पूरा उपयोग किया है। पहले जहाँ महिलाएँ भोजन में 20-25 व्यंजन बना पाती थीं, आज महिलाएँ दक्षिण भारतीय, चाइनीज, थाई आदि तरह-तरह के व्यंजन बनाने का प्रयास करती हैं और उसमें स्वास्थ्य परक तत्वों का प्रयोग करती हैं। स्वास्थ्य और स्वाद में जरा भी समझौता नहीं।

आज महिला अपनी जड़ों से जुड़ी परम्पराओं को संजोए हुए जिस तरह से आगे बढ़ी है, वह उल्लेखनीय है। मैंने ऐसी कई डॉक्टर एवं इंजीनियर माताएँ भी देखी हैं जो बच्चों को संस्कारवान बनाने के लिये और उनकी परवरिश का हिस्सा बनने के लिए अपनी ऊँची तनख्वाह वाले जॉब भी छोड़ देती हैं। आज नारी को रिश्तों को सहेजना बखूबी आता है। सबका खयाल रखती है, पर अपने आपकी भी कभी उपेक्षा नहीं करती। वह स्वयं के लिये, अपनी रुचि के लिये भी और मित्रों के लिये भी समय निकालती है। दिल खोलकर खिलखिलाती भी है।

आज की नारी घर की चारदिवारी में बंद नहीं रहती है। परिवार के लिये छुट्टियाँ मनाने की योजना बनाती और विश्व के खूबसूरत स्थानों का आनन्द लेती है। आधुनिक महिला धर्म में भी पीछे नहीं है। आगम, साहित्य स्वयं पढ़ती है, धार्मिक क्रियाएँ स्वयं करती है और परिवार को भी प्रेरणा देती है। बच्चों के प्रश्नों के लिये स्वयं को तैयार करती है। शोध करती है और उन्हें तार्किक और वैज्ञानिक उत्तर देती है, क्योंकि उसे ज्ञात है कि बच्चे ऐसे ही अनुसरण नहीं करते, वे हर बात पर सवाल करते हैं।

गृहस्थ जीवन को कुशलतापूर्वक हँसी-खुशी का माहौल बनाकर चलाना किसी संस्था को चलाने से कम नहीं। पहले महिलाएँ गलतियों से डरती थीं, पर अब वह असफल होने को भी सीखने का हिस्सा मानती है और दक्षता हासिल करने की कोशिश करती रहती है। आधुनिक महिला स्वास्थ्य के प्रति भी सजग है, स्वयं भी फिट रहती है और परिवार को भी व्यायाम, योग आदि में सम्मिलित करती है। आज की महिला धरती पर चलते हुए भी कल्पनाशील है। थोड़ी नखराली होकर भी आत्मविश्वासी है।

-कांदिवली (पूर्व), मुम्बई (मह.)

आचार्यपद रजतवर्ष

## जिनशासन के दीप्तिमान नक्षत्र : आचार्यश्री हीरा

महासती श्री सुयशप्रभाजी म.सा.

आचार्यश्री में सादगी और अपनापन झलकता है,  
संयम साधना की ज्योति से दिव्य ललाट चमकता है।  
गुरु हीरा का पूरा जीवन और हृदय इतना निर्मल है कि,  
उसमें जैसे करुणा का दरिया छलकता है।।

गुण ही मनुष्य की श्रेष्ठता के परिचायक होते हैं। गुणवान मनुष्य दूसरे में भी गुण देखते हैं। गुणों के आधार से ही महापुरुषों की महानता बढ़ी है। संत संत को देखकर प्रसन्न होता है। गुणज्ञ हृदय हजार बाधाओं को पार कर सैकड़ों कठिनाइयों को झेलकर भी गुण का ही आदर करता है। गुण और गुणज्ञ का घनिष्ठ सम्बन्ध होता है, चाहे कोई कितनी दूरी पर भी क्यों न हो, गुणों को गुणज्ञ अपनी और वैसे ही खींच लेता है, जैसे फूलों की सुगंध भ्रमर को खींच लेती है।

गुणों की गणना हो नहीं सकती, फिर भी मैंने पाया आचार्य भगवन्त के जीवन में सरलता, वाणी में शालीनता, व्यवहार में मधुरता, प्रभुता में निरभिमानता, नयनों में निर्मलता, हृदय में निश्छलता, प्रवचनों में प्रखरता, जप में तन्मयता-नियमितता, स्वाध्याय में तल्लीनता, चारित्र में अप्रमत्तता, मुख पर सौम्यता हमेशा दिखाई देती है। आचार्य भगवान् का एक मैनेटिक अट्रैक्शन ही है जो लोगों को धर्म से जोड़े रखता है।

तुम्हारी बढ़ौलत जीना है जाना, तुम्हारी महूर से है चमन सुहाना।

मेरी जिन्दगी के खिवैया तुम्हीं हो, चरण रज को चाहती हूँ पाना।।

आप आत्म-शत्रुओं के विजेता हैं तभी तो तृतीय पद के अधिकारी संघ नेता हैं। आचार्य पदारोहण की अर्द्धशताब्दी का प्रसंग हम सबके लिए शिक्षा की सौगात बने, यही मंगल भावना। आपके मंगलमय संयममय जीवन की शुभकामना।

सजाया है जीवन उपवन का हर कण,

सफल हो गया है जिसे पाकर जीवन का हर क्षण।

रजत वर्ष है आराध्य आचार्य देव का,

क्या करूँ कैसे करूँ भाव सुमन अर्पण।

युगों-युगों तक जिए गुरु हीरा भगवन्-21।

जिनके दर्शन मात्र से मन प्रीति से पुलक उठता है, जिनकी मधुर वाणी सुनकर हृदय गद्गद हो उठता है, जिनके व्यवहार में क्षण-क्षण निर्मलता के दर्शन होते हैं, ऐसे दया के

देवता मानवता के मसीहा आचार्यप्रवर के जीवन पर कैसे भावभिव्यक्ति की जाए।

सूरज दिन में अच्छा लगता है, चाँद रात में सुहाना लगता है।

इन सभी से सुहाना व अच्छा, हीरा गुरु का जीवन लगता है।।

धन्य है पीपाड़ की जन्मभूमि। धन्य है माता मोहिनी पिता मोती को, जिन्होंने हीरा जैसे प्रतापी पुत्र को जन्म दिया है, धन्य है बहने चंदा-सुशीला जिन्हें हीरा जैसे पुण्यशाली भाई मिले, धन्य है गुरु हस्ती को, जिन्हें हीरा जैसे सुयोग्य शिष्य मिले, निहाल है सब भक्तजन जिन्हें हीरा जैसे दुर्लभ गुरु मिले।

जिन्होंने मेरे घने अँधेरों को रोशनी में बदल दिया।

पतझड़ के मौसम को मधुमास में बदल दिया।।

नभ में दमकते तारों को सागर की तरंगों को, वर्षा के जलबिन्दु को, मन की विचार धारा को गिनना असंभव है वैसे ही आचार्य श्री की तप-वैराग्य प्रधान जीवन की समस्त गुणराशि अकथनीय है।

आचार्य भगवन्त की वाणी में अनुपम जादू है, चुम्बकीय आकर्षण है। हीरा गुरु की सन्निधि में एक बार आने पर ऐसा लगता है, हमेशा यह ही सुखद सन्निधि मिलती रहे। एक बार दर्शन करने पर बार-बार दर्शन करने की इच्छा होती रहती है। आचार्य भगवान् सागर वर गंधीरा हैं, गहरा इनका ज्ञान है। आचार्य देव मर्यादा की मूर्ति हैं, सुन्दर इनके अभियान हैं। आचार्य भगवन्त की कथनी-करनी एक है, वाणी में अनुपम ओज है। आचार्य भगवन्त स्वाध्याय में तल्लीन हैं, विचारों में निर्मलता है। विश्व मंगल के लिए समर्पित इस महामानव के जीवन का एक-एक क्षण विश्वहित के दीपक में स्नेह बनकर जल रहा है और प्रकाश बनकर जिनशासन को दीप्तिमान प्रकाश दे रहा है। जैसे सूर्य की प्रत्येक किरण तमोनाशक, जल की प्रत्येक बूँद प्यास बुझाने में सक्षम होती है वैसे आचार्यश्री के जीवन का एक-एक क्षण प्रकाश स्तम्भ है। शब्दों से गुरुवर के बहुआयामी व्यक्तित्व को नहीं नापा जा सकता।

## साहित्य प्रकाशन में सहयोग का अवसर

मोक्ष मार्ग के प्रमुख अंग ज्ञान की आराधना विभिन्न प्रकार से की जाती है। ज्ञान-सेवा से ज्ञानावरणीय कर्म का क्षय होता है। इस ज्ञान की सेवा में साहित्य प्रकाशन भी एक मुख्य कड़ी है। गत 41 वर्षों से सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल साहित्य प्रकाशन का कार्य अनवरत करता आ रहा है। लेकिन कतिपय अर्थसहयोगियों को छोड़कर अधिकतर लोग इस लाभ से वंचित रह जाते हैं। अतः सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल ने साहित्य प्रकाशन में रुपये न्यूनतम 3,100/ एवं उससे अधिक 5,100/- तथा 11,000/- आदि ऐसी राशि का अर्थसहयोग भी स्वीकार करने का निर्णय लिया है। इस राशि से प्रकाशित पुस्तक में अर्थसहयोगियों का नामोल्लेख किया जाएगा। आप सभी से अनुरोध है कि साहित्य प्रकाशन में स्वेच्छा से अर्थसहयोग प्रदान करावें और इस साहित्य (ज्ञान) सेवा का अंग बनें। -विनयचन्द डागा, मंत्री-सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जयपुर (राज.)

## स्वास्थ्य का अचूक उपाय : योग

प्रवर्तक श्री गणेशमुनि शास्त्री

प्रवर्तक श्री गणेशमुनिजी शास्त्री का स्वर्गवास हो गया। उन्होंने स्वर्गगमन से पूर्व जिज्वाणी में प्रकाशनार्थ यह आलेख प्रेषित किया था।-सम्पादक

योग में अनन्त शक्ति है। इसकी उपयोगिता असीम है, पर मानव की क्षमता सीमित है। मानव ने अपनी इस सीमित क्षमता के माध्यम से योग की इस अनन्त शक्ति को परखने और पहचानने का प्रयास किया है। विदेशी धरती पर यह योग बहुत पहले मात्र सौंदर्य-प्रसाधन का एक निमित्त था। मानव में इसको और अधिक गहराई से जानने-समझने की क्षमता बढ़ी तो यह चिकित्सा के क्षेत्र में स्वास्थ्य का मूलभूत आधार बना।

कुछ डॉक्टरों ने अपना अभिमत दिया कि रोगों के होने का अधिकांश कारण मात्र शारीरिक नहीं है, अपितु मानसिक अस्वास्थ्य, प्राण-असंतुलन व रहन-सहन की अव्यवस्था है, जिसे योग के द्वारा ठीक किया जा सकता है। प्राचीनकाल में अनेक बीमारियाँ योग से ठीक हुआ करती थीं। लोग योग क्रियाओं में पारंगत थे। उत्खनन में मिली भिन्न-भिन्न योग-मुद्राओं को देखकर पुरातत्त्व विभाग इस सत्य को स्वीकारता है कि हमारे पूर्वज योग में निष्णात थे। बीच में योग विलुप्त हुआ और एक सीमित क्षेत्र अर्थात् योग-विद्या में प्रशिक्षित वर्ग के लोगों में सिमट कर रह गया।

आज योग पुनः जन-जन का प्रिय विषय बनता जा रहा है। डॉक्टर, प्रशासक, शिक्षक, विद्यार्थी, रोगी, वैज्ञानिक, समाज-विज्ञानी राजनीतिज्ञ तथा सामान्य गृहस्थ अर्थात् प्रत्येक वर्ग की यह जुबान पर है। गाँव से लेकर नगरों-महानगरों तक के लोग इस योग के बारे में अधिक से अधिक जानने-समझने की जिज्ञासाएँ रख रहे हैं। वर्तमान युग में आम लोगों की धारणा बनती जा रही है कि तनाव और अशांति को रोकने या समाप्त करने का यदि कोई उत्तम उपाय या साधन है तो वह है 'योग'।

योग मानव-जीवन में आयी विकृतियों को संस्कारों में बदल सकने की अभूतपूर्व क्षमता रखता है। समाज में बढ़ते हुए अपराधों पर नियन्त्रण भी योग के द्वारा ही सम्भव है। यह योग अनेक दूषणों-प्रदूषणों से व्यक्ति को बचाता है। अमेरिका के डॉक्टर तो यहाँ तक कहने लगे हैं कि रोगोपचार की जितनी भी पद्धतियाँ हैं वे सब योग के बिना अपूर्ण हैं। इसी

आधार पर पाश्चात्य देशों में तो कार्यालयों, विद्यालयों आदि सभी क्षेत्रों में योग का प्रशिक्षण दिया जाने लगा है। वहाँ के लोगों में योग के प्रति रुझान बढ़ रहा है।

योग की महत्ता का विश्व परिप्रेक्ष्य में दृष्टिपात करें तो हाल ही में योग दिवस पर 177 देशों में भिन्न-भिन्न मुद्राओं में योग साधना की गई। जहाँ तक योग की मान्यता का प्रश्न है तो अमेरिका सहित 193 देश योग की अनिवार्यता को स्वीकार करते हैं। जून माह में योग दिवस पर संसद भवन के बाहर जो योग प्रशिक्षण शिविर आयोजित किया, उसमें एक साथ करीब 35 हजार भाई-बहिनों ने योग साधना करके विश्व कीर्तिमान स्थापित किया।

वर्तमान में योग के प्रति भारतीयों में जो जागरूकता दिखाई दे रही है, इससे लगता है कि हम अपनी मूलभूत सम्पदा का महत्त्व अच्छी तरह समझने लगे हैं। यह हमारा सही दिशा में एक सशक्त कदम है जो आने वाली पीढ़ी को योग का दिव्य-दर्शन करायेगा।

## योग में है समस्याओं का समाधान

डॉ. रीना बैद

11 दिसंबर 2014 को संयुक्त राष्ट्र संघ की आम सभा में भारत द्वारा पेश किए गए प्रस्ताव को स्वीकार करते हुए 21 जून को अंतरराष्ट्रीय योग दिवस के रूप में घोषित किया गया। संयुक्त राष्ट्र संघ ने योग की महत्ता को स्वीकारते हुए माना कि योग मानव स्वास्थ्य व कल्याण की दिशा में एक संपूर्ण नजरिया है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा 14 सितंबर 2014 को पहली बार पेश किया गया यह प्रस्ताव तीन महीने से भी कम समय में संयुक्त राष्ट्र संघ की महासभा में पास हो गया।

योग विज्ञान को उसके विशुद्ध रूप में प्रतिष्ठित करने का समय आ गया है। योग से मनुष्य न सिर्फ स्वस्थ और खुशहाल होगा, बल्कि इसे अपनाकर मनुष्य अधिक जागरूक, जिम्मेदार और कामयाब भी होगा। ऐसे मनुष्यों से ही विश्व को समस्त समस्याओं का समाधान मिल पाएगा।

एक प्रसंग है कि रामदासजी ने किसी योगी के पास जाकर पूछा- “योगीराज! योग क्या है?” योगी ने रामदासजी के पास में रखी एक कुर्सी पर बैठने को कहा, जिसके हत्थों में कुछ स्कू लगे हुए थे। रामदास कुर्सी पर बैठ गए। योगी ने रामदास से कहा- “इस स्कू को अपने हाथों से खोलो।” स्कू नहीं खुले। तब उन्होंने पास रखा एक पेचकस रामदास के हाथों में दिया और कहा- “स्कू इससे खोलो।” रामदास ने बड़े ही सहज ढंग से स्कू को हत्थों से बाहर निकालकर योगी की तरफ देखने लगे। योगी मुस्कराए और बोले ‘योग’ इस

पेचकस की तरह एक उपकरण है, एक तकनीक है, जिससे तुम जीवन के हर आयाम को खोल सकते हो। 'योग' एक विज्ञान है, आनंद की खान है, भारत का सम्मान है, इसे अपनाओ, जीवन बनाओ, खुशहाली लाओ और विश्व में फैलाओ।

योग किसी भी धर्म और संप्रदाय से नहीं जुड़ा है। योग प्रेम, अहिंसा, करुणा और सबको साथ लेकर चलने की बात करता है। योग धर्म, नस्ल, जाति, वर्ण, क्षेत्र या भाषा के आधार पर जन्मे भेदभाव से परे है, इसलिए इसमें पूरी दुनिया को एक परिवार के रूप में बाँधने की क्षमता है।

शारीरिक समस्याएँ, मानसिक तनाव और वैचारिक भिन्नता के युग में यौगिक अनुभव प्राप्त करना आवश्यक है। तनावग्रस्त मानव सुख, शान्ति और आनन्द की उपलब्धि तो चाहता है, किन्तु ज्ञानवत् आचरण का अभाव होने से मंजिल से दूर रहता है। जीवन के प्रति अपने नज़रिए में विस्तार लाने, व्यापकता लाने में ही मानव जाति की सभी समस्याओं का समाधान है।

-प्राकृत भारती अकादमी, जयपुर (राज.)

## वृद्धावस्था में आचार विचार सही रखें

श्री जशकरण डागा

कर्म सिद्धान्तानुसार सुख पराधीन है, कारण वह कर्माधीन है। किन्तु 'आनन्द' आत्मा की वस्तु होने से आत्माधीन है। इसका लाभ हम सभी प्रति समय कषायों की मंदता लाकर कर सकते हैं। आनन्दित रह सुखी जीवन के लिए, महानीतिकार चाणक्य के चार निम्न स्वर्ण सूत्रों को जीवन में धारण करें-

- (1) 'सदा प्रसन्नचित्त रहें।' (यह विचार कर कि सुख-दुःख कर्माधीन हैं, अस्थायी हैं, अतः सकारात्मक, रचनात्मक, क्रियाशील रहे)।
- (2) 'सदा प्रिय वचन बोले।' (कहा है- 'प्रियवाक्यप्रदानेन सर्व तुष्यंति जंतवो, वचने का दरिद्रता')।
- (3) 'शीलवान रह, सदा श्रेष्ठ आचरण का पालन कर।' (कहा है- चारित्र गया तो सब गया)।
- (4) 'स्वजनों के साथ सदा सखा भाव से व्यवहार करें।' (अन्य सभी जीवों के साथ भी अवैरवृत्ति वाला मैत्री भाव रखे)।

श्रावकगण इस प्रकार जीवनचर्या बनाकर इस अनमोल जीवन को सार्थक करें।

-डागा सदन, संघपुर, पो. टॉक-304001 (राज.)

## पर-निन्दा नहीं, स्वयं की आलोचना करें

श्री पदमचन्द गाँधी 'थांवला बाले'

मनीषियों ने पर-आलोचना के स्थान पर स्व-आलोचना को आत्म-विकास के लिए महत्वपूर्ण माना है। लेकिन सामान्य व्यक्ति के लिए यह आसान नहीं है, क्योंकि दुनियां में सबसे जटिल काम है स्वयं की आलोचना करना, जो हर व्यक्ति नहीं कर सकता। जैन धर्म में आवश्यक सूत्र के अनुसार अठारह पापों में 'पर-परिवाद' भी एक पाप है, जिसका अर्थ है, पर-निन्दा करना या पर-दोष दर्शन करना, दूसरे को हीन दृष्टि से देखना। इसे सर्वथा त्यागने योग्य बताया है। यह आलोचक का धर्म नहीं है, पुण्य नहीं है वरन् पाप है। आज व्यक्ति चाहे जब, दूसरों की आलोचना कर देता है, टीका-टिप्पणी कर देता है। वह अपनी कमजोरियों को छुपाने के लिए सच्चाई पर पर्दा डालकर असत्य को प्रकट करता है।

स्वयं की आलोचना करने का वास्तविक रूप है अपने आपको देखना, प्रेक्षा करना, अपनी अन्तर आत्मा में प्रविष्ट होकर भीतर की बुराइयों को त्याज्य समझना। स्वयं की आलोचना स्वस्थ मानसिकता का पर्याय हो सकती है जबकि पर-निन्दा दूसरों को गिराने, अपमानित करने एवं पल पल असहयोग करने का दुर्भाव लिए होती है, अतः वह अस्वस्थ मानसिकता का पर्याय होती है। आत्म-आलोचना मन को सुकून देती है और अच्छा करने के लिए प्रेरित करती है, परन्तु 'पर-निन्दा' कांटों जैसे चुभती है फिर भी हम इसे अपने जेहन में चिपकाए रहते हैं। पर-निन्दा या आलोचना करने वाले व्यक्ति के व्यक्तित्व में विकृति होती है जिसे आधुनिक मनोविज्ञान 'पर्सनैलिटी डिस ऑर्डर' माना गया है। ऐसे व्यक्ति कभी खुश नहीं रहते और उनसे औरों की खुशी देखी भी नहीं जाती। ऐसे व्यक्ति अपने नकारात्मक संसार का स्वयं निर्माण करते हैं, उनके व्यापक नकारात्मक मापदण्ड होते हैं, नकारात्मक सोच होती है उन्हीं के आधार पर वे नकारात्मक निर्णय लेते हैं। ऐसे व्यक्ति सदैव 'अपडेट' रहते हैं। पल पल की खबर रखते हैं, क्योंकि इसी आधार पर वे चुगली करते हैं तथा इसी को वे आनन्द मान लेते हैं।

जो व्यक्ति अपने आपको नहीं देखता, वह व्यक्ति प्रकाश सा उज्ज्वल जीवन नहीं जी सकता, उसके साथ अंधकार भी होता है। जो व्यक्ति अपने आपको नहीं देखता। वह सब कुछ होते हुए भी असन्तोषी रहता है, क्योंकि ऐसे व्यक्तियों का दृष्टिकोण गलत होता है। वे यथार्थ का मूल्यांकन नहीं करते, सच्चाई को नहीं पकड़ते, झूठी धारणाएँ बना लेते हैं,

ऐसी मिथ्या धारणाएं उनके जीवन में अंधकार के सिवाय कुछ नहीं दे पाती, क्योंकि ऐसे व्यक्तियों के जीवन में प्रकाश कम होता चला जाता है, अंधकार बढ़ता चला जाता है। व्यक्ति में माया, निदान और मिथ्यादर्शन— जब तक ये तीन बातें होती हैं, तब तक व्यक्ति अपने आपको देख नहीं पाता। जब तक आदमी अपने आपको नहीं देखेगा तब तक वह अपने भीतर माया को पालेगा, असन्तोष और आकांक्षा को पालेगा एवं मिथ्यादृष्टि कहलाएगा। यह बिल्कुल स्वभाविक बात है कि जो अपने आपको नहीं देखता वह कभी ऋजु या सरल नहीं हो सकता। वह तथ्यों को छिपाना शुरू कर देता है। जो स्वयं की आलोचना करता है, वह अपने भीतर होने वाले प्रकम्पनों को देखता है, अपने भीतर उठने वाले विकारों को देखता है, विकार की तरंगों को देखता है। अपने भीतर विद्यमान दोषों को देखना और उन्हें स्वीकार करना, यह आलोचना का पहला सिद्धान्त और पहली निष्पत्ति है। जो व्यक्ति आत्म-आलोचना करता है, उसके जीवन की प्रणाली बदल जाती है।

एक अन्य विघ्न है— निदान। आकांक्षा होना एक बात है, लेकिन किसी तप आदि कार्य के फल के निर्णय की चाहना रखकर प्रवृत्ति करना निदान रूप विघ्न है। यह अनन्त दुखों को जन्म देता है। इससे व्यक्ति ईमानदारी, सद्चरित्र को भूलकर बेईमानी के द्वारा तथा बुराई के द्वारा दूसरों को ठग कर धोखा देकर दूसरों की सम्पत्ति अर्जित करता है। आज व्यक्ति की सीमाएं निर्धारित नहीं हैं, मर्यादाएं नहीं हैं। आज दृष्टिकोण मिथ्या हो रहे हैं, असीम आकांक्षाएं बढ़ रही हैं, मायाचार बढ़ रहा है, जिनसे व्यक्ति शान्ति पूर्ण जीवन नहीं जी पाता। इन तीनों कांटों को आदमी आत्म-आलोचना द्वारा निकाल सकता है तथा शान्तिमय जीवन जी सकता है।

दूसरों की आलोचना करने वाला कभी भी औरों को विकसित होते नहीं देख सकता, उन्हें प्रसन्न नहीं देख सकता। वह खुद अपनी आन्तरिक पीड़ाओं की चुभन से पीड़ित रहता है और चाहता है कि दूसरे भी उसके जैसे पीड़ित रहें और यदि ऐसी स्थिति न हो सके तो निन्दक की म्यान से निन्दा की ऐसी धारदार तलवारें निकलती हैं, जो पलभर में महाभारत जैसे युद्ध को समाप्त करके ही दम लेती हैं। निन्दक सदैव निन्दा की दुनियां में रहते हैं, उनका संसार अलग प्रकार का होता है, जहाँ पर सज्जन एवं सद्चरित्र व्यक्ति को उनके संसार में उठने वाली दुर्गंध से घुटन सी होने लगती है। मनोविज्ञान के अनुसार पर-निन्दा एक वृत्ति है और यही वृत्ति निन्दक को घोर पतन की ओर धकेल देती है। यह ऐसा पतन है, जहां केवल पीड़ा का नरक है, जिससे उबर पाना कठिन है क्योंकि पर-निन्दा करते-करते व्यक्ति में वे दुर्गुण समाहित होने लगते हैं। केवल दूसरों की चुगली करने और दूसरों के नकारात्मक पक्ष को सोचते-विचारते और बात करते रहने के कारण व्यक्ति की सोच एवं विचार भी घोर

नकारात्मकता से भर जाते हैं।

वस्तुतः व्यक्ति 'परनिन्दा' इसलिए करता है, क्योंकि वह अपने आप में घोर असंतुष्ट है। उसके भीतर इच्छाओं एवं आकांक्षाओं का हाहाकार मचा रहता है उनकी पूर्ति नहीं हो पाती। ऐसी स्थिति में जिसे वह चाहता है और उसे नहीं कर पाता है, कोई दूसरा उसे करते हुए नजर आता है तो वह और भी हाहाकार करने लगता है। इसी अन्तर की पीड़ा को अभिव्यक्त करने के लिए वह उनकी निन्दा करना प्रारम्भ कर देता है। मनोवैज्ञानिक मानते हैं कि जब किसी के पास कोई विशेष रचनात्मक कार्य नहीं होता है, तो उसके पास अपने विचारों को दिशा देने के लिए भी कोई योजना नहीं होती है। ऐसे में उसे खाली समय मिल जाता है और उस स्थिति में नकारात्मक विचारों का झंझावात उठने लगता है और व्यक्ति फिर अपने जीवन के उद्देश्य को भुलाकर अपने बहुमूल्य समय को गंवा कर केवल चुगली और निन्दा की राह अपनाता है और इसकी जब आदत हो जाती है तो इस कार्य को किए बगैर उसे नींद नहीं आती, चैन नहीं आता है और अन्ततः वह निन्दा के चक्रव्यूह में फंस जाता है।

पर-निन्दा या आलोचना इसलिए भी त्याज्य है, क्योंकि जो जैसा सोचता है, और करता है वह वैसा ही बन जाता है। दूसरों की आलोचना करते-करते अच्छे व्यक्ति भी पतित हो जाते हैं। निन्दक किसी का नहीं हो सकता है, इसलिए उसका कोई विश्वास भी नहीं करता। यह ऐसा मानसिक व्यसन है, जिसे समाज के प्रतिष्ठित वर्ग से लेकर निम्न वर्ग तक के सभी लोगों में देखा जा सकता है। यह वहाँ नहीं होता जहाँ कर्मठता होती है, रचनात्मकता होती है, औरों की भूलों के बावजूद सदा स्नेह एवं सहयोग करने की मानसिकता होती है। ऋषि कहते हैं- जीवन क्षणभंगुर है, जीवन सदैव कर्म के जालों से घिरा रहता है। ऐसे में जब उसे अपने बारे में सोचने एवं बद्ध कर्मों को काटने के लिए पर्याप्त समय नहीं होता है तो भला वह कैसे औरों की कमजोरियों को झाँक सकेगा ?

जब स्वयं का अंतर कषाय-कल्मषों से इतना भरा है तो कैसे हम औरों की ओर दृष्टिपात करें। यही विवेकदृष्टि एवं संकल्पबल हमें पर-निन्दा रूपी पिशाचिनी से बचा सकती है। आत्म दृष्टि जितनी प्रबल होगी, पर-निन्दा उतनी ही कम होगी। यदि निन्दा करनी है तो अपने आपकी करें। पर-निन्दा करने से अविश्वास एवं कुंठा का भाव जाग्रत होता है और समाज में दुष्प्रवृत्तियों की अभिवृद्धि होती है, इससे व्यक्ति एवं समाज दोनों पतित होते हैं। आत्मलोचना एवं पर-निन्दा के भेद को समझें तथा इनका मूल्यांकन करें। आत्म आलोचना करने वाला अपने जीवन में आने वाले विघ्नों को टाल देता है और अपनी राह को सरल बना लेता है। जिस व्यक्ति ने स्वयं की आलोचना करना और अपने आपको

देखना सीख लिया है, उसकी एक अलग पहचान बन जाती है। अतः हमें निन्दक नहीं आत्मलोचना कर श्रेष्ठ मूल्यों का संवाहक बनना चाहिए।

25, बैंक कॉलोनी महेश नगर विस्तार (बी) गोपालपुरा, जयपुर (राज.)

## जीवन-बोध क्षणिकाएँ

श्रद्धेय श्री यशवन्तमुनिजी म. सा.

### पर-दोष

मत देख दूसरे की कमज़ोरी,  
यह भी है एक प्रकार की चोरी।

### साधना के बल

हे प्रभु! मेरी साधना को  
दे दो बल,  
हर लो मेरा छल,  
समस्या को कर दो हल॥

### खास-बात

हे जीव!

सुन ले एक बात खास,  
तू भले ही रह रहा  
काया के पास,  
पर मत बनना इसका दास।

### निजावलोकन

अच्छा है करना  
आगम-अवलोकन  
पर उससे श्रेष्ठ है करना  
निज-जीवन अवलोकन।

### प्रतिक्रिया

जो प्रतिक्रिया करने से डरे,  
वही स्वभाव में रमण करे।

### अपनी-गलती

अपनी गलती तो तुझे नहीं खलती,  
और दूसरे की निकालता है गलती।

### कृपा-किरण

हे प्रभु!

चाहिए आपकी कृपा-किरण,  
आपकी शरण, आपके चरण,  
करलो मेरे भावों का हरण,  
शीघ्र मिटा दो जन्म-मरण।

### दृष्टि

जिसकी दृष्टि आत्मा पर टिकी,  
उसे सारी दुनिया लगती है फिकी।

### स्वभाव

जितना घटेगा पुद्गल का लगाव,  
उतना ही प्रकटेगा चेतन का स्वभाव।

### श्रद्धा

पहले करिए प्रभु पर श्रद्धा,  
फिर कीजिए प्रभु पद पाने की स्पर्धा।

### श्रेय

समस्त ज्ञेय हेय है,  
ज्ञाता भाव में ही जीव का श्रेय है।

-संकलित

रिपोर्ट

## हिण्डौन चातुर्मास में 1008 वन्दना में हुई भक्ति की अभिव्यक्ति

श्री धीरज जैन

त्रिविध वन्दना शास्त्रों में अनेक स्थलों पर निरूपित हुई है। इन तीन प्रकारों में से हिण्डौन चातुर्मास में मध्यम-वन्दना को माध्यम बनाया गया। 1008 वन्दना की लड़ी चातुर्मास में प्रतिदिन चले, ऐसी भावना श्रद्धेय श्री मनीषमुनिजी म.सा. के अन्तर में 'वैर' ग्राम में उद्भूत हुई। शनैः शनैः उनकी यह भावना अन्तर में प्रबलता पाने लगी। वैर से विहार कर आचार्य भगवन्त श्री हीराचन्द्र जी म.सा. आदि ठाणा-6 का 13 जुलाई 2015 को वर्धमान नगर पदार्पण हुआ। मुनि श्री ने अपनी भावना जनसमुदाय के समक्ष प्रस्तुत की। चातुर्मास में अभी 17 दिन शेष थे, परन्तु मुनि श्री की प्रेरणा का जादू जनता पर ऐसा हुआ कि 13 जुलाई से ही 1008 वन्दना का अभ्यास बालक-बालिका एवं श्रावक-श्राविकाओं ने 108 वंदन के रूप में प्रारम्भ कर दिया। 13 जुलाई से 21 जुलाई तक आचार्य भगवन्त का मुनि-मण्डली सहित वर्धमान नगर विराजना हुआ।

22 जुलाई को सामायिक-स्वाध्याय भवन, हिण्डौन सिटी में प्रवेश के दिन से ही 1008 वंदन के लिए नाम लिखाने की होड़ युवक-युवतियों में लग गई और देखते ही देखते 29 जुलाई से चातुर्मास पूर्णाहुति के दिन तक के नाम लिखने में आने लगे। 1008 वंदना का क्रम चातुर्मास के प्रथम दिवस 30 जुलाई, 2015 से शुरू होना था, परन्तु मुनि श्री की प्रेरणा का असर था कि वर्ष में एक बार भारत आने वाले बहरीन निवासी भाई श्री भूपेश जी सुपुत्र श्री कपूरचंद जी जैन ने चातुर्मास प्रारम्भ के एक दिन पूर्व 29 जुलाई से वंदना की लड़ी का शुभारंभ कर दिया तथा 1008 वंदना करके बहरीन प्रस्थान किया। मुनि श्री की प्रेरणा से 29 जुलाई से 25 नवंबर तक 1008 सविधि वन्दन का अर्घ्य पूज्य आचार्य भगवन्त के श्री चरणों में अखण्ड रूप से दिया गया।

इस अद्वितीय कार्यक्रम को सफल बनाने के लिए हिण्डौन सिटी के गली-गली, घर-घर और बच्चे-बड़े-बूढ़े सभी सदस्यों का सकारात्मक सहयोग प्राप्त हुआ। चातुर्मास काल में पल्लीवाल, पोरवाल, दक्षिण भारत, पश्चिमी राजस्थान, मध्यप्रदेश, महाराष्ट्र, दिल्ली आदि क्षेत्रों के 55 ग्राम-नगरों ने वंदना महाभियान में सहयोग प्रदान किया तथा 1161 बार 1008 वंदना करने का कीर्तिमान स्थापित किया। क्षेत्रों के नाम इस प्रकार हैं-

पल्लीवाल क्षेत्र- हिण्डौन-663, गंगापुर-54, फाजिलाबाद- 39, खेडली-34,

बरगमा- 26, भरतपुर-24, नदबई-18, खौह-17, महा-16, कटकड़-8, ढहरा-6, शेरपुर-6, बौन-5, करौली-4, मण्डावर-4, हरसाना-4, अलवर-3, कटूमर-3, वयारदा खुर्द-3, गहनौली-2, महावीरजी-2, पटौदा-2, आगरा-1, वयारदा कलां-1, कामा-1, वैर-1, अटा-1, पोरवाल क्षेत्र-सवाईमाधोपुर-35, अलीगढ़-31, सुमेरगंजमण्डी-9, कोटा-7, उखलाणा-4, बजरिया-3, चौथ का बरवाडा-2, चौरू(टोंक)-1, अन्य राजस्थान क्षेत्र- जयपुर-29, जोधपुर-7, पाली-4, गोटन-4, पीपाड-3

दक्षिण भारत-चेन्नई-33, बैंगलुरू-6, बीजापुर-6, हैदराबाद-2, गजेन्द्रगढ़-1, मैसूर-1

महाराष्ट्र- जलगांव-10, अमरावती-3, नागपुर-1, धुलिया-1, पाढरकांवडा-1

मध्यप्रदेश- रतलाम-5, इन्दौर-2, दिल्ली-1, अचलपुर (बिहार)-1

यह मुनि श्री की प्रेरणा का परिणाम था कि सबसे कम उम्र के श्री नमनजी जैन सुपुत्र श्री सुमत जी जैन ने गुरुदेव को 1008 बार नमन किया, 74 वर्ष के श्री मगनचंद जी, फाजिलाबाद वाले गुरुवंदन में ऐसे मगन हुए कि बिना रुके एक साथ 1100 वंदन गुरुदेव को समर्पित किए। वहीं वरिष्ठ श्रावक श्री बृजमोहन जी जैन वर्धमान नगर ने 85 वर्ष की आयु में वज्र की तरह कठोर संकल्प लेकर 1008 वंदना पूर्ण करके अन्न-जल ग्रहण किया। अन्त में काजल जैन सुपुत्री श्री त्रिलोक जी जैन ने 1161 वें क्रमांक पर 6111 वंदना कर कीर्तिमान स्थापित करते हुए या यूं कहें काजल का टीका लगाते हुए भावना भाई कि मैं गुरु व इस वंदना महाभियान को किसी की नज़र ना लगे।

अन्य अधिक वन्दना करने वाले श्रावक-श्राविकाओं के नाम इस प्रकार हैं- श्री अमन जी जैन पुत्र श्री मनोज जी, वीआईपी कॉलोनी (2015), सुश्री ईशू जी जैन पुत्री श्री मनोज जी, वर्धमान नगर (1710) सुश्री शैफाली जी पुत्री श्री मनोज जी, वर्धमान नगर (1561) सुश्री दिव्या जी जैन पुत्री श्री महेन्द्र जी जैन, मोहन नगर (2222), श्री विवेक जी जैन पुत्र श्री महावीर जी जैन, बरगमा (2500), श्री रोबिन जी पुत्र श्री शिखर जी जैन, बरगमा (2206), श्री महेन्द्र जी जैन पुत्र श्री ज्ञानचंद जी जैन, मोहन नगर (3131), सुश्री पूर्वा जी पुत्री श्री ताराचंद जी जैन, जैन कॉलोनी (3636), श्री अभय जी पुत्र श्री राजेन्द्र जी जैन, मोहन नगर (3031), सुश्री काजल जी सुपुत्री श्री त्रिलोकजी जैन, वर्धमान नगर (3700), श्रीमती कांता देवी धर्मपत्नी श्री देवीलाल जी, वर्धमान नगर (1536), श्री राजेश जी सुपुत्र श्री हुकमचंद जी, जैन कॉलोनी (5100), श्री अमन जी सुपुत्र श्री मनोज जी जैन, वीआईपी कॉलोनी (2727), श्री हेमराज जी सुपुत्र श्री हजारीलाल जी, शिव कॉलोनी (3024), श्री मुरारी जी सुपुत्र श्री प्रकाश जी जैन, वर्धमान नगर (5353), श्री राजेश जी सुपुत्र श्री हुकमचंद जी जैन, जैन कॉलोनी (5656), सुश्री काजल जी सुपुत्री श्री त्रिलोक जी जैन, वर्धमान नगर (6111)।

- वन्दना प्रभारी, वर्धमान नगर, हिण्डौनसिटी (राज.)

## दृष्टिकोण में निहित है- विवाद और समाधान

श्री जसराज देवड़ा धोका

बाल-स्तम्भ के अन्तर्गत प्रकाशित इस रचना को पढ़कर अन्त में दिए गए प्रश्नों के उत्तर 20 वर्ष की आयु तक के पाठक 15 फरवरी 2016 तक जिनवाणी संपादकीय कार्यालय, सामायिक-स्वाध्याय भवन, कुम्हार छात्रावास के सामने, प्लॉट नं. 2, नेहरु पार्क, जोधपुर-342003(राज.) के पते पर प्रेषित करें। उत्तर के साथ अपनी आयु तथा पूर्ण पते का भी उल्लेख करें। श्रेष्ठ उत्तरदाताओं को श्री महावीरचन्द जी बाफना, जोधपुर द्वारा अपनी धर्मपत्नी एवं श्रीमती अरुणा जी, श्री मनोजकुमार जी, श्री कमलेश कुमार जी बाफना की माताश्री स्व. श्रीमती मोहिनीदेवी जी बाफना की पुण्य-स्मृति में पुरस्कृत किया जा रहा है। पुरस्कारों की राशि इस प्रकार है- प्रथम पुरस्कार-500 रुपये, द्वितीय पुरस्कार-300 रुपये, तृतीय पुरस्कार- 200 रुपये तथा 150 रुपये के पाँच सान्त्वना पुरस्कार। पुरस्कार राशि सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जयपुर द्वारा भिजवाई जाती है।

एक बार सभामण्डप में श्री कृष्ण के सम्मुख पाण्डव और कौरव बैठे थे। सबसे अच्छा और सबसे बुरा कौन होता है- इस पर चर्चा चल रही थी। तभी श्रीकृष्ण युधिष्ठिर से कहते हैं कि तुम नगर-भ्रमण कर सबसे अच्छे व्यक्ति की खोज कर उसे मेरे सामने प्रस्तुत करो। दुर्योधन को कहते हैं कि तुम सबसे बुरे व्यक्ति को मेरे समक्ष लाओ। सूर्य अस्ताचल की ओर बढ़ रहा था, वे दोनों लौटकर आए। युधिष्ठिर श्रीकृष्ण से निवेदन करता है कि पूरे नगर में मुझे कोई बुरा व्यक्ति नहीं मिला। दुर्योधन भी कहता है कि मुझे कोई सबसे अच्छा व्यक्ति नहीं मिला। श्रीकृष्ण ने यह सुनकर कहा- 'जैसी दृष्टि वैसी सृष्टि'। युधिष्ठिर गुणग्राही है, अतः उसे सभी में कुछ न कुछ गुण दिखाई पड़ते हैं, जबकि दुर्योधन की दृष्टि दुर्गुण की ओर रहती है, अतः उसे कोई सद्गुणी अच्छा व्यक्ति नज़र नहीं आता है।

युधिष्ठिर एवं दुर्योधन द्वारा किए गए अच्छे और बुरे व्यक्तियों के मूल्यांकन से उनकी दृष्टि का पता चलता है। कई बार हम देखते हैं दो परिवारों या व्यक्तियों के वैमनस्य एवं शत्रुता समाप्त करने में उनकी सोच आड़े आ जाती है, कोई काम के नहीं बनने में अथवा असफलता प्राप्त होने पर सीधे विपक्ष को जिम्मेदार ठहरा देते हैं, प्राकृतिक घटनाएँ घटित होने पर भी दूसरे पक्ष पर जादू-टोना कराने का आरोप मढ़ दिया जाता है। संघ-समाज में प्रायः विवाद अनसुलझे दिखते हैं, उसके पीछे मुख्य कारण खराब दृष्टिकोण का ही रहता है। कई बार हम प्रवचन सभा में सुन चुके हैं- मेरे से ज्यादा मेरे पड़ौसी का नुकसान हो,

फलस्वरूप पड़ोसी को काणा बनने के लिए खुद को अन्धा बनना पड़ सकता है। स्वामी रामकृष्ण परमहंस ने ठीक ही कहा है- अच्छे कांटे से बुरे को निकाल दीजिये, अंत में दोनों को फेंक दीजिये।

सरलता-सहजता का होना जीवन में नितान्त आवश्यक है। विरोध भावना व्यक्ति की अपनी आत्मा की ही उपज होती है। आज का अशांत मानव शांति की खोज में, राजनीति की मृग मरीचिका में, पद लिप्सा, आत्मप्रशंसा और परनिन्दा की चकाचौंध की भूल भूलैया में खो गया है, दूसरों को गिराना तो जैसा उसके लिए 'आचारः प्रथमो धर्मः' बन गया है। जैनशासन की अनेकांत दृष्टि में कई समन्वय-समाधान प्राप्त किये जा सकते हैं, महापुरुषों का यह कथन कि 'प्रत्येक मानव के भीतर अपार सम्पदा है', अक्षर-अक्षर सत्य है। सकारात्मक सोच की बानगी देखिये राहत इंदौरी ने एक शेर के माध्यम से कहा है- 'दोस्ती जब किसी से की जाय-दुश्मनों की भी राय ली जाय।' अकसर हम स्वयं को भूल जाते हैं। किसी कवि ने ठीक ही कहा है- "बुरा जो देखन मैं चला, बुरा न मिलिया कोय। जो घट खोजा आपणा मुझसे बुरा न कोय।" इसी बात को सुकरात इस तरह कहते हैं- "कौन अच्छा है और कौन बुरा है? यह खोज का विषय नहीं। इत्र और शराब अपने आपको कभी इत्र और शराब के रूप में प्रस्तुत नहीं करते, उनकी सुगंध और दुर्गंध ही उनका परिचय करा देती है।" डॉ. राधाकृष्णन ने कितना सटीक कहा है- "हर व्यक्ति अपने आचरण की गहरी समीक्षा करे, सुधार के लिए सचेत रहे, विनम्र बने और अपनी अपेक्षा दूसरों को श्रेष्ठ माने।"

जो जैसा करेगा वैसा भरेगा। इस सिद्धान्त को सदैव ध्यान में रखें तो द्वेष भाव से बचा जा सकता है। हम किसी का भला नहीं कर सकते हैं तो हमें उसका बुरा करने का क्या हक है? आप सदैव अच्छा सोचेंगे तो एक न एक दिन विरोधी पक्ष अवश्य अच्छा सोचेगा ही। संघ, संस्था और परिवार में कैंची नहीं हमें सुई (जोड़ने का) का कार्य करना चाहिये, अहंकार हथौड़े का काम करता है, जबकि चाबी रूपी विन्नमता से ताला खुलता है।

भगवान् महावीर ने कहा भी है- 'परस्परोपग्रहो जीवानाम्'। अर्थात् एक दूसरे जीव के सहयोग के बिना जीवन की कल्पना नहीं की जा सकती है। महान् संत तुलसीदासजी ने कितनी सरल भाषा में जनमानस को समझाया है- 'तुलसी इस संसार में भाँति-भाँति के लोग, सबसे हिल-मिल चालिये, नदी-नांव संजोग।' विश्व के सभी धर्मों में एकान्त का निषेध है, इसीलिए सुख शान्ति चाहने वालों को अपनी दृष्टि अनेकांतमय बनानी चाहिये।

## माँ

श्री प्रशान्त जैन

प्रेम की पयोधि होती है माँ,  
 वात्सल्य की मूर्ति होती है माँ।  
 बच्चे की प्रथम शिक्षक होती है माँ,  
 सरलता की मूर्ति होती है माँ।  
 बच्चे की दिल की धड़कन होती है माँ,  
 करुणा का सागर होती है माँ।  
 बच्चे के श्वासों का तार होती है माँ,  
 बच्चे की जान होती है माँ।  
 रोग में सहारा होती है माँ,  
 दुःख-दर्द में किनारा होती है माँ।  
 अच्छे संस्कार देने वाली होती है माँ,  
 संसार में हर जगह पूजी जाने वाली होती है माँ।  
 खुद गीले में सोती है, बच्चे को सुखे में सुलाती है माँ।  
 खुद रात-भर जगती है, लेकिन बच्चे को सुलाती है माँ।  
 बच्चे को लोरी सुनाती है माँ,  
 प्रेमपूर्वक बच्चे को दूध पिलाती है माँ।  
 घर के कार्य में भी अग्रणी होती है माँ,  
 बच्चों का ध्यान रखने में भी आगे होती है माँ।  
 खुद भूखी सोती है, लेकिन बच्चे को खिलाती है माँ।  
 बच्चे की परवरिश के लिए डाँट तक खाती है माँ।  
 नौ माह तक बच्चे को गर्भ में रखती है माँ।  
 खुद के दुःख-दर्द का खयाल नहीं रखती है माँ।  
 बच्चे को बचाने के लिए खुद की जान तक दे देती है माँ।  
 ऐसी ममता की पहचान होती है माँ।  
 गुरु जैसा ज्ञान देती है माँ।  
 सही-गलत कार्य की पहचान देती है माँ।  
 जीवन की सही राह बताती है माँ।  
 गलत संगति में नहीं पड़ने का निर्देश देती है माँ।

बच्चा रोता है उसे चुप कराती है माँ।  
 उसके खेलने के लिए साधन जुटाती है माँ।  
 बच्चे के दिल का टुकड़ा होती है माँ।  
 सहनशीलता, क्षमाभावना रखने वाली होती है माँ।  
 बच्चे को अपने पैरों पर खड़ा देखकर प्रसन्न दिखती है माँ।  
 बच्चे की शादी पर बहुत खुश होती है माँ।  
 बच्चे का पहला प्यार होती है माँ।  
 जीवन का आधार होती है माँ।  
 जीवन रूपी नैया की पतवार होती है माँ।  
 जीवन रूपी पतंग की डोर होती है माँ।  
 चाहे कहीं भी देखो, चहुँ ओर होती है माँ।  
 गुणों की खान होती है माँ।  
 रत्नों में हीरे समान होती है माँ।  
 अंधेरे रूपी जीवन में दीपक समान होती है माँ।  
 प्राण जाए तो जाए पर बच्चे की जान के लिए कुर्बान होती है माँ।  
 फूलों जैसे कोमल हृदय वाली होती है माँ।  
 पहाड़ जैसे विशाल दिल वाली होती है माँ।  
 बच्चे के लिए भगवान समान होती है माँ।  
 बच्चों के अपराधों को भी सहन करने वाली होती है माँ।  
 भय-संकट मिटाने वाली होती है माँ।  
 बच्चे की छत्र-छाया होती है माँ।  
 'प्रशान्त' करता यह कामना माँ को कभी दुःख मत देना।  
 जीवन को गुणशील बनाने वाली होती है माँ।।

-सुपुत्र श्री मुकेश जैन, ए-9, महावीर उद्यान पथ, बजाजनगर, जयपुर-302015 (राज)

प्रश्न:-

1. 'जैसी दृष्टि, वैसी सृष्टि' - का अभिप्राय समझाइये।
2. "बुरा जो देखन मैं चला, बुरा न मिलिया कोय। जो दिल खोज आपणा, मुझसे बुरा न कोय।" - कवि ने ऐसा क्यों कहा?
3. सुकरात की नज़र में अच्छा कौन है और बुरा कौन है?
4. 'नदी नाव संजोग' का अभिप्राय बताइए।
5. 'माँ' कविता का सार अपने शब्दों में लिखिए। (दस पंक्तियाँ)
6. अग्रांकित शब्दों के अर्थ बताइए- पयोधि, लोरी, पतवार।

## बाल-स्तम्भ [नवम्बर-2015] का परिणाम

जिनवाणी के नवम्बर-2015 के अंक में बाल-स्तम्भ के अंतर्गत 'एक दिवाली ऐसी भी थी!' के प्रश्नों के उत्तर 31 बालक-बालिकाओं से प्राप्त हुए। पूर्णांक 30 हैं।

पुरस्कार एवं राशि नाम		अंक
प्रथम पुरस्कार-500/-	यश मनोज बैद-भीनासर(राज.)	27
द्वितीय पुरस्कार-300/-	अंकिता चौपड़ा-जोधपुर(राज.)	26.5
तृतीय पुरस्कार- 200/-	केतन जैन- हिण्डौनसिटी(राज.)	25.5
सान्त्वना पुरस्कार- 150/-	अमीषा कोठारी-अजमेर (राज.)	24.5
	अनिकेतन दिलीप जैन-जयपुर (राज)	24.5
	अरिष्ट कोठारी-अजमेर (राज.)	24
	दीपेश महावीर प्रसाद जैन-जयपुर (राज.)	23.5
	सम्यक् तरुणकुमार कीमती-नीमच (म.प्र.)	23.5

### सूचना

प्रिय बच्चों! आप सभी बाल-स्तम्भ में सहभागिता निभाकर 'जिनवाणी' के सक्रिय पाठक बन रहे हैं। आपके द्वारा उत्तर भी बहुत अच्छे प्रेषित किये जा रहे हैं। कुछ बच्चों द्वारा उत्तर पोस्टकार्ड पर दिए जाते हैं, वे पठनीय नहीं होते हैं। अतः पोस्टकार्ड पर दिए गए उत्तर प्रतियोगिता में शामिल नहीं किए जायेंगे।-सम्पादक

## महावीर और मोक्ष-पथ

श्री राजेन्द्र चौधरी

महावीर आत्मा के विज्ञान के सफल अध्येता थे। एकदम नया प्रयोग उन्होंने आत्मदर्शन के क्षेत्र में किया। शरीर उनके लिए साधन था, जिसके जरिए वे आत्मा की मंजिल पर खुद तो पहुँचे ही, जन-जन को भी रास्ता दिखाया। उन्होंने बताया कि आत्मा स्वाधीन है, उस पार किसी बाहरी ताकत का नियंत्रण नहीं है। मन, वचन और कर्म की अनेक रासायनिक क्रियाओं से जड़ (पुद्गल) से जकड़ जाता है। यही कर्मबंध है। महावीर ने तपश्चर्या द्वारा इस कर्मबंध को काटने की प्रक्रिया बतायी, मोक्ष प्राप्ति का रास्ता बताया। उन्होंने समझाया कि हम हो रही सारी घटनाओं के दर्शक हैं। सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान और सम्यक् चारित्र की साधना से आत्मा के कर्मबंधन दूर होते हैं और चेतना की निर्मलता उदित होती है। महावीर का यह चिन्तन मनुष्य को स्वतंत्रता की एक नयी इबारत थी। यह कर्म-सिद्धान्त, ईश्वर नियंत्रण सत्ता को नकारता था और वीतरागता का यह नया फलसफा भेद विज्ञान और धर्म के वस्तु-स्वरूप को प्रशस्त करता था और जीव की मुक्ति का मार्ग बताता था।

-42, प्रेम नगर, खरेमे का कुआ, पाल रोड़, जोधपुर-342008 (राज.)

कृति की 2 प्रतियाँ अपेक्षित हैं



## नूतन साहित्य



डॉ. श्वेता जैन

**गर्भ-संस्कार बोध- सम्पादक-** पारसमल चण्डालिया, **प्रकाशक-** श्री अखिल भारतीय सुधर्म जैन संस्कृति रक्षक संघ-जोधपुर, शाखा- नेहरु गेट बाहर, ब्यावर, फोन- 01462-251216 **पृष्ठ-200, मूल्य- 25** रुपये मात्र, सन् 2015

प्रस्तुत पुस्तक 'सम्यग्दर्शन' मासिक पत्रिका में जनवरी 2013 से सितम्बर 2014 तक के अंकों में 'गर्भ संस्कार बोध' शीर्षक से प्रकाशित लेखों का संकलन है। 'संस्कार' शब्द प्रसंगानुसार अनेकार्थक है। यहाँ जीव में संस्कार-वपन कैसे हो, इस पर विचार हुआ है। गर्भकाल में माता अपने आचार और विचार शुद्धि से जीव को प्रभावित कर कैसे उसे संस्कारित कर सकती है, इसी पर समग्र लेखन हुआ है। 'आगमों में गर्भ विचारणा' और माता के स्वाध्याय हेतु बारह भावनाएँ, उत्तम भावनाएँ, दशवैकालिक के 4 अध्ययन, नमिपव्वज्जा, पुच्छिसु णं, महावीर स्तुति का संकलन किया गया है।

**भगवान महावीर और हम- लेखक-** पूनमचन्द लूंकड़, **प्रकाशक एवं प्राप्ति स्थान-** जैन पूनमचन्द लूंकड़, 12/7, रेजीडेन्सी रोड़, पुलिस कमिश्नर बंगले के पास, सिविल लाइन, रातानाडा, जोधपुर-342001 (राज.), फोन: 0291-2638440, **पृष्ठ-186+10, मूल्य-** 80 रुपये मात्र, सन् 2014

साधना का क्या स्वरूप हो, भगवान महावीर ने जैसा बताया था और हम कैसी साधना कर रहे हैं? इन दोनों तथ्यों का तुलनात्मक विवेचन करते हुए चिन्तनशील लेखक ने अपने मन्तव्यों को यहाँ प्रस्तुत किया है। वे कहते हैं कि जब तक हृदय में समभाव न हो, राग-द्वेष की परिणति कम न हो, तब तक उग्र तप एवं जप आदि की साधना कितनी ही क्यों न की जाए, वह आत्मशुद्धि कारक नहीं है। इस पुस्तक में पौषध क्यों करें, सामायिक-प्रतिक्रमण कैसे करें?, तपस्या का रूप, अपरिग्रह, ब्रह्मचर्य, पर्युषण महापर्व, मन को कैसे वश में करें? सबसे बड़ा धर्म जन सेवा, विवेक, मानव की चार वृत्तियाँ- इन विषयों पर लेखन हुआ है।

**संलेखना-संधारा-समाधि-एक मार्ग दर्शिका-** श्री उदयमुनिजी, **प्रकाशक एवं प्राप्ति स्थान-** श्री दिनेश कुमार जैन, धुलिया कटरा, चाँदनी चौक, दिल्ली-110006, फोन नं. 011-23919370, 09953723403, **पृष्ठ-386+14, लागत**

**मृत्यु-** 300 रुपये, **श्रुत सहयोग-** 100 रुपये, **सन्-** 2014

‘संलेखना-संधारा’ करना मृत्यु का स्वागत करने के सदृश है। मृत्यु से अधिक भयावह दुनिया में कोई नहीं है, मृत्यु से भयभीत न होना यह जीवन की परम साधना है। इस सम्बन्ध में प्रबुद्ध लेखक के चिन्तन की मंजूषा रूप यह पुस्तक एक मार्गदर्शिका है। इसकी विषय सामग्री छः प्रकाशों में विभाजित है। प्रथम प्रकाश में ‘संलेखना-संधारा: स्वरूप और विधि’, द्वितीय प्रकाश में ‘आलोचना-पश्चात्ताप-अनुचित’, तृतीय प्रकाश में ‘सप्त कुव्यसन : स्वरूप और पश्चात्ताप-अनुचितन, चतुर्थ प्रकाश में ‘अठारह पाप स्थान: स्वरूप और पश्चात्ताप-अनुचितन’, पंचम प्रकाश में ‘बारह भावनाओं का स्वरूप’ और षष्ठ प्रकाश में ‘स्वाध्याय’ विषयक चिन्तन प्रस्तुत हुआ है। अन्त में परिशिष्ट के अन्तर्गत संलेखना साधना का फल, स्वरविज्ञान से मरण का अनुमान, गीतिकाएँ, संधारा धारक महासाधक एवं महासाधिकाएँ शीर्षकों से एक संक्षिप्त परिचय को योजित किया है।

**मूकमाटी : चेतना के स्वर-** प्रोफेसर भागचन्द्र जैन, **प्रकाशक-** सन्मति प्राच्य शोध संस्थान, नागपुर, प्राप्ति स्थान- 1. कला प्रकाशन, बी 33/33 ए, ए-1, न्यू साकेत कॉलोनी, बी.एच. यू., वाराणसी-5 2. मोतीलाल बनारसीदास, चौक, वाराणसी, 3. वेस्टर्न बुक डिपो, सदर, नागपुर, **पृष्ठ-** 337+6, **मूल्य-** 250/-, द्वितीय संस्करण 2015

आचार्य विद्यासागर जी कृत हिन्दी महाकाव्य ‘मूकमाटी’ पर आधृत लेखक की यह कृति उन्हें तृतीय डी.लिट् उपाधि से अलंकृत कर रही है। यह महाकाव्य चार खण्डों में विभाजित है। इसमें माटी की उपादान शक्ति कुम्भकार आदि निमित्तों के बल से किस प्रकार शिखर पर सुशोभित होने वाले मंगलकलश तक की स्थिति में पहुँचती है, इस तथ्य को महाकवि ने प्रतीकात्मक ढंग से बड़ी कलात्मकता के साथ प्रस्तुत किया है। इस पर अनेक शोध-कार्य होने से यह कालजयी महाकाव्य बन गया है। प्रस्तुत शोध ग्रन्थ आठ परिवर्तों में निबद्ध है, यथा- 1. आचार्य श्री विद्यासागर : व्यक्तित्व और कृतित्व, 2. आधुनिक हिन्दी काव्य के परिप्रेक्ष्य में ‘मूकमाटी’, 3. कथ्य और तथ्य, 4. आध्यात्मिक चेतना, 5. दार्शनिक चेतना, 6. सांस्कृतिक और सामुदायिक चेतना, 7. अभिव्यञ्जना शिल्प चेतना, 8. कलात्मक सौन्दर्य चेतना। लेखक द्वारा उद्धृत कतिपय काव्य सौन्दर्य के उदाहरण इस प्रकार हैं- स्व की याद ही, स्व-दया है। राही बनना ही तो, हीरा बनना है। ‘कु’ यानी धरती, और ‘भ’ यानी भाग्य होता है- यहाँ धरती पर जो भाग्य-विधाता हो, कुम्भकार कहलाता है। लेखक ने ‘मूकमाटी’ का आध्यात्मिक, दार्शनिक, सांस्कृतिक, सामाजिक, काव्य शास्त्रीय, आदि अनेक दृष्टियों से आलोडन कर इसे पाठकों के लिए हृदयग्राह्य बना दिया है। शोधार्थी, समीक्षक, लेखक, पाठक इस ग्रन्थ से दिशा-बोध प्राप्त कर सकते हैं।

# समाचार विविधा

विचरण-विहार एवं विहार दिशाएँ : एक नज़र में

(31 दिसम्बर, 2015)

- जिनशासन-गौरव परमश्रद्धेय आचार्यप्रवर पूज्य श्री 1008 श्री हीराचन्द्र जी म.सा., महान् अध्यवसायी श्री महेन्द्रमुनिजी म.सा., सेवाभावी श्री नन्दीषेणमुनिजी म.सा. आदि ठाणा 10 लाल भवन, जयपुर में विराज रहे हैं।
- परमश्रद्धेय उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्र जी म.सा. आदि ठाणा 5 सी-133, शास्त्रीनगर, जोधपुर में विराज रहे हैं।
- तत्त्वचिन्तक श्री प्रमोदमुनिजी म.सा. आदि ठाणा 4 वीतराग ध्यान शिविर के पश्चात् महावीर भवन पधार गए हैं। अलवर से जयपुर की ओर विहार सम्भावित है।
- साध्वीप्रमुखा शासनप्रभाविका महासती श्री मैनासुन्दरी जी म.सा.आदि ठाणा 8 सामायिक-स्वाध्याय भवन, पावटा, जोधपुर में विराज रहे हैं।
- व्याख्यात्री महासती श्री तेजकंवरजी म.सा. आदि ठाणा 8 व्याख्यात्री महासती श्रीपुष्पलताजी म.सा. आदि ठाणा 3 सूरवाल में विराज रहे हैं।
- विदुषी महासती श्री सुशीलाकंवर जी म.सा. आदि ठाणा 5 एवं व्याख्यात्री महासती श्री सोहनकंवरजी म.सा. आदि ठाणा 7 एवं व्याख्यात्री महासती श्री रुचिताजी म.सा. आदि ठाणा 5 बारह गणगौर, जयपुर में विराज रहे हैं।
- विदुषी महासती श्री सौभाग्यवती जी म.सा. आदि ठाणा 5 मसूदा में विराज रहे हैं।
- व्याख्यात्री महासती श्री मनोहरकंवर जी म.सा. आदि ठाणा 3 नसीराबाद विराज रहे हैं।
- व्याख्यात्री महासती श्री सरलेशप्रभाजी म.सा. आदि ठाणा 3 शिवाजीनगर, किशनगढ़ विराज रहे हैं।
- व्याख्यात्री महासती श्री इन्दुबाला जी म.सा. आदि ठाणा 5 एवं व्याख्यात्री महासती श्री सुमतिप्रभाजी म.सा. आदि ठाणा 4 पालघर विराज रहे हैं। केलवा की ओर विहार सम्भावित है।
- व्याख्यात्री महासती श्री ज्ञानलता जी म.सा. आदि ठाणा 4 एवं व्याख्यात्री महासती श्री निष्ठाप्रभाजी म.सा. आदि ठाणा 5 गान्दवड़ विराज रहे हैं। खेरनूर होते हुए बीड़ की ओर विहार सम्भावित है।
- व्याख्यात्री महासती श्री चारित्रलता जी म.सा. आदि ठाणा 5 बीजापुर विराज रहे हैं।

- व्याख्यात्री महासती श्री निःशल्यवतीजी म.सा. आदि ठाणा 5 कागलगांव विराज रहे हैं। अग्रविहार गोंडल होते हुए बेलगांव की ओर संभावित है।
- व्याख्यात्री महासती श्री मुक्तिप्रभाजी म.सा. आदि ठाणा 4 नवीन शाहदरा-दिल्ली विराज रहे हैं।
- सेवाभावी महासती श्री विमलेशप्रभाजी म.सा. आदि ठाणा 4 बुटाटी विराज रहे हैं। अग्रविहार मेड़तासिटी की ओर संभावित है।
- व्याख्यात्री महासती श्री विनीतप्रभाजी म.सा. आदि ठाणा 3 भोपालगढ़ विराज रहे हैं।
- महासती श्री संगीताश्रीजी म.सा. आदि ठाणा 3 चौसाला विराज रहे हैं। अग्रविहार माडयरसूंभा होते हुए बीड़ की ओर संभावित है।

## आचार्यप्रवर का हिण्डौन से हुआ जयपुर पदार्पण

11 फरवरी 2015 को आयोज्य चार दीक्षाओं की स्वीकृति दूदू संघ को पल्लीवाल क्षेत्र में 1019 आजीवन शीलव्रती बने

आगमज्ञ, प्रवचन प्रभाकर, व्यसनमुक्ति, शीलव्रत एवं रात्रिभोजन-त्याग के प्रबल प्रेरक, जिनशासन गौरव, परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर पूज्य श्री 1008 श्री हीराचन्द्र जी म.सा., महान् अध्यवसायी सरसव्याख्यानी श्री महेन्द्रमुनिजी म.सा. आदि ठाणा 6 पल्लीवाल क्षेत्र के भक्ति-प्रधान हृदय-स्थल हिण्डौनसिटी में विक्रम संवत् 2072 का यशस्वी चातुर्मास पूर्ण कर 29 दिसम्बर 2015 को जयपुर पधार गये हैं। हिण्डौन में तप-त्याग-व्रत-प्रत्याख्यान की लड़ी प्रवाहमान रही, अठाई व मासक्षण की कड़ी चातुर्मास प्रवेश तिथि से समापन तिथि तक अनवरत बनी रही। 1008 बार वन्दन करने का क्रम भक्तिपूर्वक बना रहा तो शीलव्रत के खंध की शृंखला में इतिहास ही बन गया। यह सब संघनायक, संघ सुमेरु के अतिशय विशेष से संभव हुआ। ऐसे परमोपकारी पूज्य आचार्य भगवन्त के पावन पादयुग्म ज्योंहि 26 नवम्बर 2015 को वर्षावास पश्चात् विहार के लक्ष्य से आगे बढ़े, हर भक्त बोझिल मन व अश्रुमिश्रित नयनों से अपलक निहारते हुए विदाई दे रहा था। साथ ही निर्मिष पलकों से सौम्य-शांत-धवल वस्त्रधारी पूज्य गुरुदेव के दर्शन करते हुए आत्मतोष की अनुभूति कर रहा था।

रत्नसंघ के अष्टम पट्टधर, स्थानकवासी सम्प्रदाय की सौरभ, परमाराध्य परमश्रद्धेय, आचार्यप्रवर पूज्य श्री हीराचन्द्र जी म.सा.आदि ठाणा नवम्बर मासांत में 27 को वर्धमान नगर की पावन धरा पर पधारे। नसियाँ गंगापुर सिटी से पधारे श्री सुशील कुमारजी जैन ने अपनी सुपुत्री विरक्ता सुश्री खुशबूजी जैन को 11 फरवरी 2016 को दीक्षित किये जाने की सहमति पूज्य गुरुवर्य के पावन श्री चरणों में अभिव्यक्त की। इस पर पूज्य आचार्य भगवंत ने

11 फरवरी 2016 को कुल चार भागवती दीक्षा होने की स्वीकृति फरमाई।

28 नवम्बर को ज्योंहि वीर धरा फाजिलाबाद पर पूज्यश्री का पावन पर्दापण हुआ। प्रकृति के प्रभाव से बादल आच्छादित हो जाने से सूर्य अदृश्यमान रहा एवं मौसम से ठण्ड का आभास हुआ। 29 को डहरा व 30 को लपावली पधारने पर पूज्यश्री के हाथों के पंजों में झनझनाहट व शून्यता जैसे लक्षण प्रतीत हुए, पर विहार को विराम नहीं देते हुए 01 दिसम्बर को पेचला पधारे, विहार का अधिकतर मार्ग आज कंकरीला था। पूज्यवर आत्मबल से 2 दिसम्बर को नांगल, 3 को बालाघाट, 4 को माचड़ी पधार आये। यहाँ होलनांथा से युवक मण्डल विनति लेकर पावन श्री चरणों में उपस्थित हुआ। मदनगंज संघ व दूदू संघ दीक्षा-प्रसंग विषयक विनति लेकर पूज्य गुरुदेव की सेवा में आये। 5 दिसम्बर को टोडाभीम से पूर्व उपाधीक्षक कार्यालय, 6 दिसम्बर को भीम पैलेस टोडाभीम, 7 को मेहन्दीपुर बालाजी, 8 को लंगड़ा बालाजी पधारने पर खोह व हरसाना संघ अपने-अपने क्षेत्र की चातुर्मास की विनति करने पूज्यपाद की चरण सन्निधि में पधारे। 9 दिसम्बर को पीलोड़ी, 10 को धूलकोट, 11 को पूज्यश्री रायपुरा पधारे। यहाँ बीजापुर से महिला-मण्डल चातुर्मास प्रदाता के उपकारों पर कृतज्ञता के भाव प्रकट करने उपस्थित हुआ।

पूज्य आचार्य भगवंत ने दूदू संघ की भावना को दृष्टिगत रखते हुए 11 फरवरी 2016 को आयोजित होने जा रही चार भागवती दीक्षा के लिये दूदू संघ को स्वीकृति फरमाई। 12 को सिकन्दरा चौराहा होते गिरधरपुरा पधारे। 13 को यहाँ दुब्बी एवं भरतपुर से महिला मण्डल बासनगेट संघ की ओर से चातुर्मास की विनति लेकर व जयपुर से जवाहर नगर व महावीरनगर संघ क्षेत्र फरसने की विनति लेकर पावन श्री चरणों में उपस्थित हुआ। 14 को कालाखोह एवं 15 को भाण्डारेज मोड़ मित्रपुरा पदार्पण हुआ, जहाँ जयपुर का प्रतापनगर संघ क्षेत्र फरसने की विनति करने आया। 16 को छोंकरवाड़ा में रत्न स्वाध्याय भवन संघ, जयपुर की ओर से विनति पावन श्री चरणों में निवेदन की गई। 17 को पूज्य गुरुदेव का पावन पदार्पण दौसा शहर में हुआ। यहाँ निवास कर रहे ओसवाल परिवार जनों की पूर्वजों की भांति नित्य सामायिक करने की प्रेरणा की। फलस्वरूप श्री राजेन्द्र जी, श्री प्रदीपजी, श्री राहुलजी व श्री सतीशजी जैन ने सामायिक करने के नियम पूज्य गुरुदेव के पावन मुखारविन्द से लिये। पूज्य श्री यहाँ के श्रावकों की पुरजोर विनति को ध्यान में रख चार दिन विराजे। दोपहर समय वीतरागवाणी का वर्षण रोजाना बने रहने से यहाँ धर्म प्रभावना का सुन्दर प्रसंग रहा।

पूज्य आचार्य भगवन्त के कोटा से हुए विहार से लेकर हिण्डौनसिटी पहुँचने तक हिण्डौनसंघ से उत्साही व कर्मठ युवा कार्यकर्ता श्री राहुलजी जैन व श्री नरेन्द्र जी जैन की समूचे विहार में अहर्निश सेवाएँ रहीं। चातुर्मास पश्चात् भी हिण्डौन से दौसा तक कुल

मिलाकर 800 कि.मी. के लगभग की विहार यात्रा में 13 माह तक व्यवसाय से मोह तजकर, सेवा संभाल का जो अभूतपूर्व दायित्व उन्होंने निभाया है, वह अनुकरणीय एवं प्रेरणीय है। हिण्डौन के ही श्री प्रदीप जी जैन ने विचरण क्षेत्र में शीलव्रत के नियम अंगीकार करने के लिये दम्पतियों को प्रेरणा करने में प्रभावी भूमिका निभाई है, वह प्रमोदकारी व अनुमोदनीय है। 352 दम्पतियों द्वारा शीलव्रत के खंध करने में आपका योगदान रहा है। पल्लीवाल क्षेत्र में पूज्य गुरुदेव के पावन श्री मुख से 1019 शीलव्रत के खंधों का होना श्रेष्ठ उपलब्धि है।

19 दिसम्बर को बजरिया, सर्वाईमाधोपुर संघ चातुर्मासार्थ विनति करने दौसा में उपस्थित हुआ। 20 को सायं समय विहार फरमाकर पूज्यप्रवर प्रदीप विहार कॉलोनी एवं 21 को भण्डाणा पधारे। यहाँ सूरत संघ चातुर्मास प्रदान की विनति लेकर पावन श्री चरणों में उपस्थित हुआ। 22 को गोठड़ा में बापूनगर संघ क्षेत्र फरसने के लिये निवेदन करने आया। 23 को बांसखोह दूसरा फाटक पर रात्रि साधना कर, 24 को मोहनपुरा की धरा पर पूज्यश्री का पधारना हुआ। यहाँ नित्यानंद नगर संघ विनति करने उपस्थित हुआ। पूर्व न्यायाधिपति श्री जसराज जी चौपड़ा ने दर्शन लाभ लिया। लाल भवन संघ की ओर से भी विनति पूज्य प्रवर के पावन श्री चरणों में की गई। 25 को मानसर खेड़ी मोड़ पर पूनमिया श्रावक श्री पारसमल जी खटोड़ विजयनगर दर्शनार्थ पधारे। महारानी फार्म संघ ने भी क्षेत्र फरसने की विनति पावन श्री चरणों में रखी। मानसरोवर संघ पहले ही चातुर्मास की अर्जी लगाये हुए है। 26 को कानोता में शोरापुर से आंचलिया परिवार के सदस्य सेवा में दर्शनार्थ पधारे। संघ-संरक्षक मण्डल के संयोजक श्री मोफतराजजी मुणोत ने पूज्य गुरुदेव की चरण सन्निधि का लाभ लिया। 27 को मीना की पालड़ी से पूर्व बरसाना हाउस में पूज्य श्री विराजकर 28 को वृंदावन विहार कॉलोनी में पधारे। यहाँ हैदराबाद संघ चातुर्मास की भावना से पूज्य गुरु भगवन्त के चरणों में विनति करने आया। पूज्य आचार्य भगवंत का स्वास्थ्य यद्यपि पूर्ण समीचीन नहीं है, फिर भी दौसा से आगे के सभी विहार प्रायः शारीरिक क्षमता से अधिक दूरी के ही हुए। 29 को जयपुर महानगर के उपनगर जवाहर नगर में पूज्य आचार्य भगवंत का मंगलमय पावन पदार्पण जयकार के उद्घोष सहित भव्यता से हुआ।

अभी मार्ग में शीलव्रत की शृंखला में पत्थर वालों की धर्मशाला-1, वर्धमान नगर में-39, फाजिलाबाद में-29, डहरा में-32, लपावली में-21, पचेला में-17, नांगल शेरपुर में-6, बालघाट में-1, माचड़ी में-5, टोडाभीम में-27, दुब्बी में-2, कानोता में-1 व पालड़ी में-1 आजीवन शीलव्रत हुए। चरण सन्निधि में दर्शनार्थ पधारने वाले संघ एवं श्रावक-श्राविकाओं का अग्रांकित ग्राम-नगरों से आगमन हुआ- भरतपुर, गंगापुर, सर्वाईमाधोपुर, कटकड़, खोह, हरसाना, लक्ष्मणगढ़, मण्डावर, नदबई, पहरसर,

सिकराय, अलीपुर, खेड़ली, अलवर, जयपुर, जोधपुर, उदयपुर, पीपाड़, भीलवाड़ा, कोटा, देई, दूदू, मदनगंज-किशनगढ़, अजमेर, पीलोदा, नागौर, चेन्नई, बैंगलोर, मुम्बई, कोयम्बतूर, सूरत, धुले, जलगांव, लासूर स्टेशन, होलनांथा, शोरापुर, गोटन, मैसूर, बीजापुर, पालनपुर, हैदराबाद आदि।

दौसा से आगे जयपुर गुलाबी नगरी की ओर ज्यों-ज्यों पूज्य गुरुदेव के पावन श्री चरण बढ़े, विहार-यात्रा का लाभ लेने वालों की संख्या बढ़ती ही गई। विचरण विहार में श्री प्रमोदजी लोढ़ा, श्रीमती मंजूजी कोठारी आदि अनेक गुरुभक्तों की सेवाएँ उल्लेखनीय एवं प्रमोदकारी रही हैं। -जगदीश जी जैन

## उपाध्यायप्रवर का सरदारपुरा एवं शास्त्रीनगर में विचरण

शान्त-दान्त-गम्भीर पूज्य उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्र जी म.सा., मधुर व्याख्यानी श्री गौतममुनिजी म.सा. आदि ठाणा 6 के पावन सान्निध्य में चातुर्मास के पश्चात् भी सामायिक-स्वाध्याय भवन नेहरू पार्क में प्रवचन एवं धर्मारोधना का श्रावक-श्राविकाओं को लाभ मिला। उपाध्यायप्रवर के ऑपरेशन के पश्चात् कुछ स्वास्थ्य लाभ होने पर 14 दिसम्बर को संत-मण्डली सहित आपका विहार महावीर भवन, डी रोड़, सरदारपुरा हुआ। वहाँ से आप 16 दिसम्बर को अशोक जी मेहता के मकान पर तथा 22 दिसम्बर को भंसाली भवन, जलजोग चौराहा होते हुए 23 दिसम्बर को श्री रूपकुमारजी चौपड़ा के भाई के आवास पर पधारे। यहाँ धर्म-लाभ देकर 25 दिसम्बर को शास्त्रीनगर में सुमतिचन्द्रजी कोचर मेहता के आवास पर तथा वहाँ से 27 दिसम्बर को सी-133, शास्त्रीनगर पधारे हैं। श्रद्धालु भक्तों का दर्शन-वन्दन एवं प्रवचन श्रवण हेतु आवागमन बना हुआ है। उपाध्यायप्रवर के स्वास्थ्य में पूर्वापेक्षा सुधार चल रहा है। संतों के द्वारा सेवा का अच्छा लाभ लिया जा रहा है। दिन में वाचनी का क्रम निरन्तर बना हुआ है।

## महासती-मण्डल के चातुर्मासों में धर्मप्रभावना

**पावटा-जोधपुर-** साध्वीप्रमुखा, शासनप्रभाविका महासती श्री मैनासुन्दरीजी म.सा., व्याख्यात्री महासती श्री रतनकंवरजी म.सा. आदि ठाणा 8 के सान्निध्य में अष्टमी एवं चतुर्दशी को प्रवचन एवं विशेष साधना हो रही है। 21 दिसम्बर को मौन एकादशी के दिन तीर्थंकर के 150 कल्याणकों का उल्लेख किया गया तथा महासती रूपा के पुण्य स्मृति दिवस पर उनके गुणों का कथन किया गया। व्याख्यात्री महासती श्री शान्तिप्रभाजी, व्याख्यात्री महासती श्री चन्द्रकलाजी एवं साध्वीप्रमुखाजी ने मौन के गुणों का विवेचन किया। व्याख्यात्री महासती श्री रतनकंवरजी म.सा. के स्वास्थ्य में कुछ नरमाई है।

**दूद (जिला-जयपुर)**- व्याख्यात्री महासती श्री सरलेशप्रभाजी म.सा. आदि ठाणा 3 की सन्निधि में दूद का यह प्रथम चातुर्मास विशेष प्रेरणाप्रद रहा है। चातुर्मास के माध्यम से संघ के हर सदस्य को धार्मिक गतिविधि से जुड़ने, ज्ञानाराधन एवं तपाराधन करने तथा आत्मबल को बढ़ाने हेतु सुन्दर अवसर प्राप्त हुआ। 4 माह में जप, तप, उपवास, बेले, तेले, पचोले, 8,9,15,31 की तपस्याएँ सानन्द सम्पन्न हुईं। शरद पूर्णिमा पर प्रश्नोत्तरी का रोचक कार्यक्रम हुआ। प्रभु महावीर के निर्वाण कल्याणक पर पचोले एवं तेले की तपस्या तथा वीर स्तुति का पाठ हुआ। उत्तराध्ययन सूत्र का श्रवण करने हेतु महावीर भवन में जैन परिवार के छोटे-बड़े सभी सदस्य उपस्थित थे। सभी के मन में अपार हर्ष था। आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. के दीक्षा-दिवस पर एकाशन, उपवास, बेले, तेले, सिद्धि तप, चन्द्रकला तप आदि सम्पन्न हुए। प्रवचन में तीनों महासतीवर्या ने भावविभोर होकर गुरु हीरा के संयमी जीवन पर प्रकाश डाला। प्रवचन के पश्चात् 36 वंदना का कार्यक्रम चला। पोस्टकार्ड पर 'जय गुरु हीरा' लेखन की प्रतियोगिता आयोजित की गई। 15 नवम्बर को दूद श्रीसंघ ने आचार्यप्रवर की सेवा में हिण्डौन उपस्थित होकर दीक्षाओं की अनुमोदना का लाभ दूद संघ को मिलने हेतु विनति प्रस्तुत की, जिसकी स्वीकृति पाकर दूद संघ हर्षित है। 22 नवम्बर को बालिकाओं ने भिक्षु दया का लाभ लिया। इस चातुर्मास में 4 पीढ़ियों को धर्माराधन से जुड़ने का अवसर प्राप्त हुआ। पूज्य आचार्यप्रवर के दीक्षा-दिवस पर भागचन्दजी पाण्ड्या ने सजोड़े आजीवन शीलव्रत अंगीकार किया। कार्तिक पूर्णिमा के दिन लोकाशाह जयन्ती एवं चातुर्मासिक पर्व का कार्यक्रम दोपहर बाद तक चला, जिसमें त्याग एवं सेवा करने वालों को तथा विभिन्न प्रतियोगिताओं में विजेताओं को सम्मानित किया गया। सुश्राविका श्रीमती चन्द्रलता मेहता का एकान्तर तप एवं संवर, स्नान-त्याग आदि की साधना के कारण संघ द्वारा सम्मान किया गया। पूरे चातुर्मास में निरन्तर तेले की तपस्या चलती रही। अल्प जैन घरों की इस नगरी में धर्म का जो निरन्तर वातावरण बना है, उसी का परिणाम है कि यहाँ 11 फरवरी को 4 दीक्षाएँ सम्पन्न होने जा रही हैं। -*विन्दोद मेहत्त*

**सवाईमाधोपुर-** व्याख्यात्री महासती श्री तेजकंवरजी म.सा., व्याख्यात्री महासती श्री सुमनलताजी म.सा. आदि ठाणा 7 के पावन सान्निध्य में आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा. की 53 वीं दीक्षा तिथि तप, त्याग एवं सामायिक स्वाध्याय के साथ मनाई गई। इस अवसर पर 14 से 17 नवम्बर तक विशेष कार्यक्रम रखा गया। 14 नवम्बर को 250 भाई-बहनों ने आचार्यप्रवर को सविधि 108 वंदना की। 15 नवम्बर को एक घण्टे पुच्छिसुंण का सामूहिक स्वाध्याय किया गया। 16 नवम्बर को लोगस्स के ध्यान की प्रतियोगिता आयोजित हुई। 17 नवम्बर को महासती-मण्डल ने ओजस्वी अमृत वाणी से गुरुदेव का

गुणगान किया। 200 भाई-बहनों ने एकाशन तथा 5-5 सामायिक की साधना की। 21 तेले एवं 50 उपवास भी सम्पन्न हुए। 12 घण्टे नवकार मंत्र का जाप हुआ।-*मदनलाल जैन*  
**माधवनगर (महा.)**- व्याख्यात्री महासती श्री निःशल्यवतीजी म.सा. के चातुर्मास में पूरे चार माह प्रतिदिन एक-एक घण्टे का जाप हुआ। आयंबिल के चार मासक्षण हुए एवं एकाशन के 31 मासक्षण सम्पन्न हुए। तेले की लड़ी पूरे चार माह चली। उपवास एवं दया की एक नवरंगी तथा दो पचरंगी हुईं। आठ बार सामूहिक दयाव्रत की आराधना हुई। अनेक धार्मिक प्रतियोगिताओं का आयोजन होता रहा। पर्युषण के आठों दिन नवकार मंत्र का जाप हुआ। 50 व्यक्तियों ने आठों दिन एकाशन तप किया। पर्युषण में 70 तेले, 7 अठाई, 12 नौ एवं 1 ग्यारह की तपस्याएँ सम्पन्न हुईं। आयंबिल ओली 12 जनों ने की। छुटकर अनेक एकाशन आयंबिल, उपवास, बेले, चोले-पचोले की भी तपस्याएँ सम्पन्न हुईं। पर्युषण के पूर्व श्राविकाओं का पंचदिवसीय शिविर आयोजित हुआ, जिसमें 40 श्राविकाओं ने भाग लिया। उनका दूसरा शिविर 19 से 23 अक्टूबर तक आयोजित हुआ, जिसमें 35 महिलाओं ने भाग लिया। 12 से 16 नवम्बर तक बालक-बालिकाओं का धार्मिक शिविर सम्पन्न हुआ। 22-23 नवम्बर को आलोचना शिविर, 24 नवम्बर को ध्यान शिविर एवं पुनः 25 नवम्बर को आलोचना शिविर सम्पन्न हुआ, जिसमें सबने आनन्द का अनुभव किया। पूज्य आचार्यश्री हीराचन्द्र जी म.सा. के 53 वें दीक्षा-दिवस पर 53 जनों ने लगातार दो दिन सामूहिक एकाशन की साधना की। 3 से 11 सामायिक, दया-व्रत और तेले की तपस्या भी सम्पन्न हुईं। आचार्यप्रवर के दीक्षा-दिवस पर 4 आजीवन शीलव्रत हुए- 1. मंगलाजी-बिरदीचन्द जी वैदमुथा, 2. सुरेखा-रमणलालजी वैदमुथा, 3. सुशीलाबाई-स्व. श्री पोपटलालजी पारख, 4. सौ. शारदा पोपट यमगर। चातुर्मास के पश्चात् महासती मण्डल का विहार सांगली की ओर हुआ है।-*प्रवीण डी. रूणवाल*

**नित्यानन्द नगर (जयपुर)**- व्याख्यात्री महासती श्री सोहनकंवरजी म.सा., महासती श्री विमलावतीजी म.सा. आदि ठाणा 7 के सान्निध्य में तप-त्याग की निरन्तर आराधना हुई। श्रीमती निर्मलाजी मेहता ने मासक्षण तप किया तथा तीन 11 दिवसीय, 10 अठाई, 80 तेले, 11 एकाशन के मासक्षण, 10 सिद्धितप के साथ आयंबिल, उपवास, नीवी, एकाशन एवं तेले की लड़ी निरन्तर चली। सामूहिक एकाशन एवं सामूहिक दयाव्रत की साधना भी हुई। शरद पूर्णिमा पर 55 जनों ने 15-15 सामायिकों का लाभ लिया। दीपावली पर सामूहिक रूप से 108 पुच्छंसु णं का जाप रखा गया। लगभग 200 व्यक्तियों ने आतिशबाजी नहीं करने का नियम लिया। प्रत्येक रविवार को रोचक प्रतियोगिताएँ आयोजित हुईं। बाल-संस्कार शिविर हुआ एवं श्राविका मण्डल का गठन किया गया।

आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. के 53 वें दीक्षा-दिवस पर 53 उपवास एवं एकाशन के तले सम्पन्न हुए। उपवास के 30 एवं एकाशन के 23 तले हुए। श्री राजेन्द्र जी जैन, श्री टीकमचन्द्रजी जैन, श्री विजयराजजी वैद, श्री शांतिलालजी जैन, श्री हेमन्तजी जैन मेहता ने सजोड़े शीलव्रत का खंध अंगीकार किया। हस्ती-हीरा चालीसा की प्रतियोगिता आयोजित हुई, जिसमें श्री सुरेशचन्द्रजी जैन एवं श्री पूनमजी जैन विजेता रहे। श्रीमती लाडकंवरजी चौधरी को धर्म विजेता पदक प्राप्त हुआ। 32 बोल पर भी प्रतियोगिता में पुरस्कार दिए गए। दस भाई-बहनों ने प्रतिक्रमण याद किया तथा अनेक बालक-बालिकाओं ने सामायिक सूत्र एवं 25 बोल याद किए।

## रायचूर में श्रावक के 12 व्रतों एवं संथारा

### सेवा-सोपान पर विशेष कार्यक्रम

व्याख्यात्री महासती श्री ज्ञानलताजी म.सा. आदि ठाणा के सान्निध्य में 18 अक्टूबर 2015 को श्रावक के 12 व्रतों पर विशेष प्रेरक उद्बोधन हुआ, जिसका लगभग 350 श्रावक-श्राविकाओं ने प्रातः 8.30 से 12.30 बजे तक पाँच सामायिक कर लाभ लिया। महासतीवर्या ने 12 व्रतों के अर्थ, महत्त्व एवं उनकी आवश्यकता पर प्रकाश डालते हुए कहा कि 12 व्रतों को अंगीकार करने वाला ही सच्चा श्रावक कहलाता है। हिंसा, झूठ, चोरी, मैथुन एवं परिग्रह की मर्यादा का विशेष विश्लेषण किया। व्रतों को स्वीकार करने वाला प्रभु महावीर के शासन में तीर्थ का अधिकारी होता है। महासती भाग्यप्रभाजी ने फरमाया कि व्रतों को धारण करने से सागर जितना पाप, बिन्दु जितना रह जाता है एवं आत्मा ऊर्ध्वगामी बनती है। श्री संघ द्वारा दी गई 12 व्रतों की पुस्तक में 350 श्रद्धालुओं ने अपनी-अपनी योग्यताओं एवं मर्यादाओं के अनुसार व्रत अंगीकार किए। महासती प्रतिष्ठाप्रभाजी ने “भगवन् मुझे उपासक जिन धर्म का बनाना” गीतिका का मधुर गान किया।

25 अक्टूबर 2015 को संथारा सेवा-सोपान कार्यक्रम आयोजित हुआ, जिसमें चेन्नई, बैंगलुरु, मैसूर, बीजापुर, सिंधनूर, यादगीर, शोरापुर, बेलगांव, मुनीराबाद, गजेन्द्रगढ़, बल्लारी आदि कई नगरों से एवं स्थानीय श्रावक-श्राविकाओं ने लगभग 350 की संख्या में भाग लिया। महासती ज्ञानलताजी म.सा. ने संथारे के महत्त्व एवं लाभ को दर्शाते हुए कहा कि उत्तराध्ययन सूत्र के 29 वें अध्ययन में 73 बोल हैं, उन सभी की साधना संथारे में समाविष्ट हो जाती है। उववाई सूत्र के अनुसार लोक-अलोक का वर्णन करते हुए जीव-अजीव आदि का बोध देते हुए दो धर्मों की चर्चा की और कहा कि दोनों धर्मों का चरम लक्ष्य संथारा है। महासती श्री भाग्यप्रभाजी म.सा. ने संथारे की विशिष्टता, लाभ, मरण के प्रकार, संथारा क्यों?, तीन मनोरथ, कौन ले सकता है संथारा, कौन दे सकता है, कैसे

लिया जाता है? इसकी विधि, आज्ञा, वातावरण, पात्रता, सेवा वालों की महत्ता और लाभ, संथारा बनाम आत्महत्या आदि का सुन्दर विवेचन विशुद्ध हिन्दी में मधुर शैली में किया, जिसे सुनकर श्रोता गण आश्चर्य चकित रह गये। अंतिम सत्र में श्रावक-श्राविकाओं ने अपनी जिज्ञासाएँ व्यक्त की, जिनका समाधान भी म.सा. ने बड़े ही मधुरता के साथ किया। श्रावकों ने संथारे पर पुस्तक के प्रकाशन का परामर्श दिया।

## आचार्य श्री हीराचन्द्रजी म.सा. आचार्य पदारोहण रजत वर्ष-2015-2016 में संघ द्वारा निर्धारित कार्यक्रम

जिनशासनगौरव परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर 1008 श्री हीराचन्द्रजी म.सा. के आचार्य पदारोहण के रजत वर्ष में अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ द्वारा ज्ञानाराधन, तपाराधन व धर्मारोधन हेतु कतिपय कार्यक्रम निर्धारित किए गए हैं। सभी गुरुभ्राताओं से निवेदन है कि इस कार्यक्रम को आपके परिवार में, संघ में प्रचारित एवं प्रसारित करने के साथ अपनी श्रद्धानुसार ज्ञानाराधना-तपाराधना एवं धर्मारोधना से स्वयं जुड़ें तथा अपने सम्पर्क में आने वाले अन्य महानुभावों को जोड़कर रजत वर्ष के पावन प्रसंग पर गुरुदेव के प्रति सच्ची श्रद्धा की अभिव्यक्ति करें। आपके क्षेत्र में व्यक्तिगत अथवा संघ स्तर पर सम्पन्न कार्यक्रमों की रिपोर्ट संघ कार्यालय को प्रेषित करावें, ऐसा विनम्र अनुरोध है।

### (अ) ज्ञानाराधन-

**वर्ग-प्रथम-** 1. प्रतिक्रमण सूत्र विधि व अर्थ सहित, 2. हीराष्टक-हिन्दी पद्यानुवाद, 3. चयनित 25 थोकड़े, 4. वीर स्तुति-मूल एवं अर्थ, 5. उत्तराध्ययनसूत्र- प्रथम अध्ययन का सार।

**वर्ग-द्वितीय-** 1. दशवैकालिक अध्ययन 1 से 4 तक अर्थ सहित, 2. उत्तराध्ययन सूत्र-9 वां अध्ययन का सार, 3. आचार्य-उपाध्याय के गुण, 4. विनीत शिष्य के कर्तव्य, 5. आचार्य श्री हीरा एवं उपाध्याय श्री मान के जीवन की प्रमुख विशेषताएँ।

**नोट:-** आवश्यकतानुसार पाठ्य सामग्री जिनवाणी में आलेखों एवं साहित्य के माध्यम से उपलब्ध कराई जायेगी।

**(ब) तपाराधन-** 1. कम से कम 2500 व्यक्तियों को न्यूनतम एक वर्ष की अवधि के लिए सामूहिक रात्रि भोजन त्याग हेतु प्रेरित करना (एक वर्ष की समयावधि तक अभ्यास के साथ इसमें आगे बढ़ने हेतु विनम्र अनुरोध), 2. कम से कम 2500 व्यक्तियों को जमीकन्द त्याग हेतु प्रेरित करना, 3. कम से कम 250 वर्षीतप (एकान्तर/एकाशन) का लक्ष्य, 4. श्रावक-श्राविकाओं को इस वर्ष में कम से कम 25 आयंबिल/नीवी तप हेतु प्रेरित करना।

5. वर्ष पर्यन्त अथवा मासपर्यन्त कषायविजय हेतु अभ्यास।

(स) धर्माराधन- 1. कम से कम 25 प्रमुख क्षेत्रों में नियमित संवर-साधना हेतु श्रावक-श्राविकाओं को प्रेरित करना, 2. स्वाध्याय संघ का कार्य क्षेत्र देश के 25 प्रमुख प्रान्तों तक फैलाना, 3. कम से कम 125 दम्पतियों को शीलव्रत हेतु प्रेरित करना, 4. कम से कम 125 व्यक्तियों को चौविहार हेतु प्रेरित करना, 5. श्रावक-श्राविकाओं को वर्ष में कम से कम 25 पौषध करने हेतु प्रेरित करना।

(द) व्यसन -मुक्ति-

आचार्य श्री हीरा के सन्देश 'हीरा गुरु का यह आह्वान, व्यसनमुक्त हो हर इन्सान' को लेखों, कार्यशालाओं, संगोष्ठियों एवं प्रचार-यात्रा के माध्यम से देश के कोने-कोने में प्रचारित व प्रसारित करना।

आइए! आप-हम सभी त्याग-तप की आराधना के साथ लक्ष्य सिद्धि हेतु अग्रसर हों। संघनायक साधना सुमेरू महापुरुष के चरण सरोजों में यही हमारा विनम्र श्रद्धा समर्पण होगा। - पूरणराज अरबान्नी-राष्ट्रीय महामंत्री

## संघ-सेवा सोपान के अंतर्गत संघ एवं संघ से सम्बन्धित संस्थाओं के संचालन में निम्नानुसार सहयोग कर पुण्यार्जन करें

संघ-सेवा में योगदान

- |                                     |   |
|-------------------------------------|---|
| 1. गजेन्द्र निधि/फाउण्डेशन ट्रस्टी- | 1100000/- रुपये का अर्थ सहयोग।          |
| 2. संघ भूषण-                        | कम से कम तीन वर्ष तक प्रतिवर्ष 251000/- |
| 3. संघ प्रभावक-                     | कम से कम तीन वर्ष तक प्रतिवर्ष 100000/- |
| 4. संघ हितैषी-                      | कम से कम तीन वर्ष तक प्रतिवर्ष 51000/-  |
| 5. संघ पोषक-                        | कम से कम तीन वर्ष तक प्रतिवर्ष 21000/-  |
| 6. संघ सहयोगी-                      | कम से कम तीन वर्ष तक प्रतिवर्ष 11000/-  |
| 7. संघ प्रोत्साहक-                  | कम से कम तीन वर्ष तक प्रतिवर्ष 5000/-   |
| 8. अन्य सहयोग-                      | इच्छानुसार                              |

### सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल को सहयोग

- |                          |                    |
|--------------------------|--------------------|
| 1. साहित्य निधि संरक्षक- | 100000/- एक मुश्रत |
| 2. साहित्य निधि स्तम्भ-  | 51000/- एक मुश्रत  |
| 3. साहित्य निधि पोषक-    | 21000/- एक मुश्रत  |

- |                               |               |
|-------------------------------|---------------|
| 4. साहित्य प्रकाशन हेतु-      | इच्छानुसार    |
| 5. साहित्य सदस्यता-           | 4000/- रुपये  |
| 6. जिनवाणी स्तम्भ सदस्यता-    | 21000/- रुपये |
| 7. जिनवाणी संरक्षक सदस्यता-   | 11000/- रुपये |
| 8. जिनवाणी सदस्यता (20 वर्ष)- | 1000/ रुपये   |

### श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ को सहयोग

- |                            |                         |
|----------------------------|-------------------------|
| 1. स्वाध्याय निधि संरक्षक- | 100000/- रुपये एक मुश्त |
| 2. स्वाध्याय निधि स्तम्भ-  | 51000/- रुपये एक मुश्त  |
| 3. स्वाध्याय निधि पोषक-    | 21000/- रुपये एक मुश्त  |
| 4. वार्षिक सदस्यता-        | 2100/- रुपये            |
| 5. अन्य सहयोग-             | इच्छानुसार              |

### अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड हेतु

- |  |                         |
|--|-------------------------|
| 1. शिक्षा निधि संरक्षक-  | 100000/- रुपये एक मुश्त |
| 2. शिक्षा निधि स्तम्भ-   | 51000/- रुपये एक मुश्त  |
| 3. शिक्षा निधि पोषक-   | 21000/- रुपये एक मुश्त  |
| 4. पाठ्यक्रम पुस्तक प्रकाशन सहयोग                                |                         |
| 5. वरीयता सूची में स्थान प्राप्त करने वाले परीक्षार्थियों को पदक |                         |
| 6. परीक्षार्थी पुरस्कार हेतु सहयोग                               |                         |
| 7. विशिष्ट वार्षिक सहयोग-  | 10000/- रुपये           |
| 8. संस्कार केन्द्र संचालन हेतु सहयोग                             |                         |
| 9. संस्कार केन्द्र पुरस्कार हेतु सहयोग                           |                         |

### शारदचन्द्रिका मुणोत श्री जैन रत्न वात्सल्य निधि हेतु

- |                     |                         |
|---------------------|-------------------------|
| 1. सदस्यता-         | 100000/- रुपये एक मुश्त |
| 2. पारिवारिक सहयोग- | 12000/- रुपये           |
| 3. छात्रवृत्ति-     | 6000/- रुपये प्रतिछात्र |

### सामायिक-स्वाध्याय भवन योजना हेतु सहयोग

- |                 |  |
|-----------------|--|
| 1. बड़े स्थानक- | प्रति स्थानक- 1100000, 500000, 251000,<br>100000 रुपये प्रतिवर्ष |
| 2. छोटे स्थानक- | प्रति स्थानक- 251000, 100000, 51000,                             |

21000 प्रतिवर्ष

**आचार्य हस्ती मेधावी छात्रवृत्ति योजना हेतु**

छात्रवृत्ति-

12000/- रुपये प्रतिछात्र

-पूरणराज अबानी, राष्ट्रीय महामंत्री

**श्राविका मण्डल का कोटा-कोलकाता प्रवास****कार्यक्रम सम्पन्न**

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल की महासचिव श्रीमती बीनाजी मेहता-जोधपुर एवं श्री प्रकाशजी सालेचा-जोधपुर ने 04 दिसम्बर, 2015 को कोटा में स्थानीय शाखा पदाधिकारियों के साथ बैठक आयोजित कर संघ की गतिविधियों में सक्रिय रूप से अपनी सहभागिता देने का आह्वान किया। 11 दिसम्बर, 2015 को कोलकाता में श्राविका-मण्डल की परामर्शदाता श्रीमती मंजूजी भण्डारी-बैंगलुरु, अध्यक्ष श्रीमती पूर्णिमाजी लोढ़ा-जयपुर, महासचिव श्रीमती बीनाजी मेहता-जोधपुर, श्रीमती मंजूजी कोठारी, श्रीमती विमलाजी हीरावत-जयपुर, श्रीमती उषाजी धारीवाल-पाली आदि पदाधिकारियों द्वारा कोलकाता श्राविका मण्डल के सदस्यों के साथ संघ की गतिविधियों पर चर्चा की। आचार्य श्री पदारोहण दिवस को रजत वर्ष के रूप में मनाये जा रहे कार्यक्रम सम्बन्धी जानकारी प्राप्त की तथा संघ द्वारा आयोजित सभी गतिविधियों में भाग लेने की प्रेरणा की गई। सभी श्राविकाओं से निवेदन है कि 11 फरवरी 2016 को दूठू (जिला-जयपुर) में आयोज्य जैन भागवती दीक्षा महोत्सव में पधारकर दीक्षा अनुमोदना का लाभ प्राप्त करें। श्राविकाएँ दीक्षा महोत्सव कार्यक्रम में श्राविका-मण्डल द्वारा निर्धारित (ड्रेस कोड) लाल चून्दड़ी साड़ी पहनने का ध्यान रखें। -श्रीमती बीना मेहता-महासचिव

## **‘श्रावक सामायिक प्रतिक्रमण सूत्र’ खुली पुस्तक प्रतियोगिता परीक्षा का परिणाम**

आगमज्ञ, प्रवचन प्रभाकर, व्यसनमुक्ति, शीलव्रत एवं रात्रिभोजन-त्याग के प्रबल प्रेरक, जिनशासन गौरव परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर श्री 1008 श्री हीराचन्द्र जी म.सा. के 77 वें जन्मदिवस के उपलक्ष्य में श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल, जयपुर द्वारा ‘श्रावक सामायिक प्रतिक्रमण सूत्र’ खुली पुस्तक प्रतियोगिता परीक्षा का आयोजन किया गया, जिसका परिणाम इस प्रकार है-

**प्रथम पुरस्कार के संयुक्त विजेता (15500/- प्रत्येक)-1. सुश्री बबीता राजेन्द्रजी जैन-भरतपुर (473), 2. श्रीमती अंजू दीपकजी कोठारी-मदनगंज-किशनगढ़ (473)।**

**द्वितीय पुरस्कार के संयुक्त विजेता (10500/- प्रत्येक)**- 1. सुश्री साक्षी मुकेशचन्दजी जैन- खेरलीगंज, जिला-अलवर (470), 2. श्रीमती मनोरमा प्रसन्नकुमारजी सिंघवी-ब्यावर, जिला-अजमेर (470)।

**तृतीय पुरस्कार के संयुक्त विजेता (3350/- प्रत्येक)**- 1. श्रीमती विद्या अशोकजी सघंवी-बदनावर, जिला-धार (469), 2. श्रीमती संगीता राजेन्द्रजी बम्ब-आरणी, जिला-यवतमाल (469), 3. श्रीमती प्रतिभा विजयकुमारजी सुराणा-भोपाल (469)।

**दस प्रोत्साहन पुरस्कार (1000/- प्रत्येक)**- 1. श्रीमती किस्मत मनोजजी कुचेरिया-चेन्नई (467), 2. श्रीमती ज्योति केतनजी खिलोसिया-चौपडा, जिला-जलगांव (467), 3. श्री जगदीश गोपीलालजी जैन-सवाईमाधोपुर (467), 4. श्रीमती विमला सिरहमलजी चौपडा-जयपुर (467), 5. श्रीमती कंचन पारसमलजी लोढ़ा-द्वारका-नासिक (467), 6. श्रीमती राजुल रमेश जी कोठारी-धुलिया (466), 7. श्रीमती शीतल नीलेश जी छाजेड़-करही, जिला-खरगोन (466), 8. श्रीमती अनिता पंकजजी सुराणा-चौपडा, जिला-जलगांव (466), 9. सुश्री आस्था अजयकुमारजी जैन-हिण्डौनसिटी, जिला-करौली (466), 10. श्रीमती ममता चन्द्रकान्तजी सुराणा-बोलारम, जिला-सिकन्दराबाद (466)।

**दस सांत्वना पुरस्कार (500/- प्रत्येक)**- 1. सुश्री रुचिता अशोकजी सुराणा-गोठी, जिला-नासिक (465), 2. श्रीमती रेखा मनोजकुमारजी जैन-हिण्डौनसिटी, जिला-करौली (465), 3. सुश्री निकिता मनमोहनजी जैन-सवाईमाधोपुर (465), 4. श्री अनिल कुमार सूरजमलजी जैन-कोटा (465), 5. श्रीमती राखी पारसजी कोठारी-अहमदनगर (465), 6. श्रीमती सुनीता अरूणजी मेहता-जोधपुर (465), 7. सुश्री दीप्ति वीरेन्द्रराजजी सिंघवी-जोधपुर (465), 8. श्रीमती कुमकुम त्रिलोकचन्दजी जैन-सवाईमाधोपुर (465), 9. श्रीमती अनिता प्रदीपजी सुराणा-जयपुर (464), 10. श्रीमती कुसुम अशोककुमारजी फोफलिया-जयपुर (464)।-*कमला लोढ़ा, मंत्री*

## भगवान ऋषभदेव की जयंती पर जीव रक्षार्थ

### उपवास करने हेतु निवेदन

विगत वर्ष में करीब 134 लाख गाय-भैंसों का वध सिर्फ मांस निर्यात के लिए हुआ है। एतदर्थ भगवान ऋषभदेव की जयन्ती पर 01 अप्रैल 2016 को सभी साधु, संत, महात्मा व अहिंसाप्रेमी एकजुट होकर एक दिन का उपवास कर पूरे देश के समक्ष यह भावना प्रकट करे कि हमारे देश से मांस निर्यात उचित नहीं है एवं इसे तुरन्त रोका जाना चाहिए। उपर्युक्त

कार्यक्रम में जैनेतर संप्रदाय के साधु संतों एवं महात्माओं से भी आग्रह है कि अहिंसा के इस यज्ञ में वे भी सभी भारतवासियों को यह संदेश प्रेषित करें।

## लाडनूँ में जैन-बौद्ध दर्शन पर राष्ट्रीय संगोष्ठी

इण्डियन सोसायटी फॉर बुद्धिस्ट स्टडीज एवं जैन विश्व भारती संस्थान, लाडनूँ के संयुक्त तत्त्वावधान में 11 से 13 दिसम्बर 2015 को एक राष्ट्रीय संगोष्ठी आयोजित हुई, जिसमें प्रो. सागरमलजी जैन को जनरल प्रेसिडेंट बनाया गया। उद्घाटन सत्र में जैन विश्व भारती संस्थान की कुलपति श्रमणी चारित्रप्रज्ञाजी ने सम्बोधित किया। संगोष्ठी में देश के विभिन्न क्षेत्रों से विद्वानों ने उपस्थित होकर अपने शोधपत्र प्रस्तुत किए। डॉ. धर्मचन्द जैन, प्रधान सम्पादक-जिनवाणी मासिक पत्रिका ने 11 दिसम्बर को एक सत्र की सह-अध्यक्षता करते हुए जैन एवं बौद्ध दर्शन में नैतिक चिन्तन में रही समानता पर प्रकाश डाला। जिनवाणी की सह-सम्पादक डॉ. श्वेता जैन ने 'कच्चायन व्याकरण और पाणिनी व्याकरण के कारक प्रकरण का तुलनात्मक अध्ययन' और डॉ. हेमलता जैन ने 'हरिभद्रसूरि के शास्त्रवार्ता समुच्चय एवं स्याद्वादकल्पलता टीका के आलोक में 'अपोहवाद' सिद्धान्त पर अपने शोध पत्र प्रस्तुत किए।

## मुम्बई में 'जैनदर्शन और विज्ञान' विषय पर अन्तरराष्ट्रीय संगोष्ठी

भगवान महावीर अन्तरराष्ट्रीय अनुसंधान केन्द्र, जैन विश्वभारती विश्वविद्यालय, लाडनूँ द्वारा 'जैनदर्शन और विज्ञान' विषयक अन्तरराष्ट्रीय कान्फ्रेंस आई.आई.टी. मुम्बई में 8 से 10 जनवरी 2015 को आयोजित हो रही है। इस त्रिदिवसीय कार्यक्रम में 15 देशों से विद्वानों का समागम हो रहा है। विश्व प्रख्यात वैज्ञानिक स्टीफन होकिंग के सह वैज्ञानिक रोजन पेनरोज, अन्तरराष्ट्रीय जस्टिस दलवीर भण्डारी, आगम मनीषी मुनि श्री महेन्द्र कुमारजी, प्रसिद्ध वैज्ञानिक संत नंदीघोष सूरिजी आदि अनेक विद्वानों का मार्गदर्शन प्राप्त हो रहा है।

## सोनगढ़ में 23 वां जैन साहित्य समारोह

श्री महावीर जैन विद्यालय द्वारा श्री रूपमाणिक भंसाली चेरिटेबल ट्रस्ट के सौजन्य से 4 से 7 फरवरी 2015 को निम्न चार विषयों- 1. जैनागम विषयक साहित्य, 2. जैन तीर्थ साहित्य, 3. बारह भावना और चार पराभावना एवं 4. जैन सज्जाय पर राष्ट्रीय स्तरीय जैन साहित्य समारोह का आयोजन किया जा रहा है। शोध-निबन्ध प्रस्तुत करने और साहित्य समारोह में उपस्थित रहने हेतु रजिस्ट्रेशन फार्म भरकर श्री महावीर जैन विद्यालय, मुम्बई को

भिजवाए जा सकते हैं। **सम्पर्क सूत्र**— श्री महावीर जैन विद्यालय, द्वारा— श्री कच्छी विशा ओसवाल जैन महाजन वाड़ी, 99/101, केशवजी नाईक रोड़, दूसरा माला, चिचबंदर, मुम्बई-400009(महा.), फोन:- 022-23759179, Email-hosmjv@rediffmail.com

## चेन्नई बाढ़ पीड़ितों को जैन समाज द्वारा मदद

**चेन्नई**- बाढ़ ने चेन्नई में जहाँ लाखों जिन्दगियों को प्रभावित किया, वहीं लाखों हाथ मदद को भी उठे। पूरा चेन्नई विशेषतः जैन समाज बाढ़ पीड़ितों की मदद के लिये जी जान लगाकर हर संभव सहायता पहुँचाने की कोशिश कर रहा है। भोजन, पानी, कपड़े, दवाई आदि वितरण का कार्य हो या फिर उन्हें सुरक्षित स्थानों में पहुँचाने का— जैन समाज हर संभव मदद पहुँचाने की कोशिश कर रहा है। इसी पहल के अन्तर्गत विशेष मोबाइल केम्पों का आयोजन व बीमारियों की रोकथाम हेतु मुफ्त दवाइयों का वितरण भी किया जा रहा है। साथ ही युवाओं द्वारा विभिन्न जगहों पर घूम-घूम कर पशु-पक्षियों को दाना-पानी वितरित किया गया व चिकित्सा सहायता दी गई। समाज के विविध वर्गों सहित स्थानीय तमिल समुदाय ने भी आपदा की इस घड़ी में जैन समाज द्वारा किए गए अमूल्य सेवा कार्यों के लिए भूरी-भूरी प्रशंसा की है।

## संक्षिप्त-समाचार

**हैदराबाद**- ज्ञान पंचमी के अवसर पर उप-प्रवर्तक विनयमुनिजी म.सा., गौतममुनिजी म.सा. आदि ठाणा के सान्निध्य में 17 नवम्बर 2015 को श्री जैन स्वाध्यायी संघ का स्थापना दिवस मनाया गया। इस अवसर पर पर्युषण पर्व के दौरान सेवा देने वाले स्वाध्यायियों का अभिनन्दन किया गया।

**हैदराबाद**- आचार्यश्री रामलालजी म.सा. के मुखारविन्द से वैरागी शुभम पवनजी सुराणा, गंगाशहर-भीनासर की जैन भागवती दीक्षा सम्पन्न हुई।

**जोधपुर**- श्री वर्द्धमान जैन रिलीफ सोसायटी, जोधपुर द्वारा स्व. श्री पुखराजजी अबानी की 53 वीं पुण्यस्मृति में निःशुल्क शल्य चिकित्सा शिविर रविवार, 03 जनवरी, 2016 को आयोजित किया जा रहा है। शिविर में अनुभवी एवं ख्याति प्राप्त सर्जन डॉ. राम गोयल-एम.एस., डॉ. शैलेश लोढ़ा-एम.डी., डी.एम.-जयपुर (मधुमेह, थायरॉइड एवं हार्मोन रोग विशेषज्ञ), डॉ. प्रकाश चौधरी-एम.डी., डी.एम.-यूरोलोजिस्ट एवं डॉ. सौरभ गोयल- एम.एस., एम.सीएच (जोइन्ट रिप्लेसमेन्ट सर्जन-अहमदाबाद) द्वारा मरीजों की जाँच कर परामर्श दिया जायेगा। इसके अतिरिक्त वर्द्धमान अस्पताल में विशिष्ट चिकित्सकों की प्रतिदिन सेवाएँ उपलब्ध हैं। आगामी निःशुल्क शल्य चिकित्सा शिविर

डॉ. बिमलाजी भण्डारी की द्वितीय पुण्य स्मृति में मंगलवार 17 फरवरी, 2016 को आयोज्य है। इस शिविर में भी इन चिकित्सकों की सेवाएँ प्राप्त होंगी।

—पूरणराज अबाली, अध्यक्ष

**जयपुर-** जैन विद्वान् मनीषी महोपाध्याय श्री विनयसागरजी की प्रथम पुण्यतिथि पर भारतीय डाक विभाग द्वारा प्राकृत भारती अकादमी सभागार में एक 'विशेष आवरण' के लोकार्पण का आयोजन किया गया। इस समारोह के मुख्य अतिथि देवर्षि कलानाथ शास्त्री-जयपुर, फिलेटेलिक सोसायटी, जयपुर के अध्यक्ष जतनमल ढोर, पद्मभूषण डी.आर. मेहता-जयपुर, समारोह अध्यक्ष आचार्य डॉ. नारायण शास्त्री कांकर ने संयुक्त रूप से आवरण को जारी किया।

**मलकापुर (ता.प्र.)-** सेठ विजराज जुगराज संचेती लोकसेवा ट्रस्ट द्वारा 19 नवम्बर 2015 को रोग निदान शिविर आयोजित किया गया, जिसमें आयुर्वेद रीति से उपचार किया गया।

## बधाई

### प्रो. धर्मचन्द जैन एवं डॉ. तारा डागा सम्मानित

जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय के संस्कृत विभाग के प्रोफेसर एवं 'जिनवाणी'



पत्रिका के प्रधान सम्पादक धर्मचन्द जैन को जैन, बौद्ध एवं भारतीय दर्शन में चिन्तन पूर्ण लेखन हेतु कोलकाता में 20 दिसम्बर 2015 को 'हेमचन्द्राचार्य साहित्य सम्मान' प्रदान किया गया। 29 वर्षों से कार्यरत विचार मंच, कोलकाता संस्था द्वारा त्रिपुरा के राज्यपाल श्री तथागत राय के मुख्य आतिथ्य एवं समाजसेवी उद्योगपति श्री पवन धूत की अध्यक्षता में आयोजित समारोह में प्रो. जैन को ताम्र-पदक एवं 51000/- की राशि के चैक से सम्मानित किया गया। इसी कार्यक्रम में डॉ. तारा डागा को जैन साहित्य एवं प्राकृत-अपभ्रंश जैसी प्राच्य भाषाओं के अध्यापन एवं शोध कार्य हेतु 'श्री गणेश ललवानी सम्मान' प्रदान किया गया। सम्मान के रूप में पदक के साथ 31000/- रुपये की राशि का चैक प्रदान किया गया।



**जोधपुर-** डॉ.संजीव जी पटवा सुपुत्र सुश्रावक श्री पुखराजजी पटवा ने मोदी साइंस एण्ड



टेक्नोलॉजी विश्वविद्यालय लक्ष्मणगढ़, सीकर (राज.) से "Object Oriented Software System : A study of Factors Affecting Testing Techniques with reference to object oriented Software Engineering" विषय पर शोध पूर्ण कर पी-एच्.डी की उपाधि प्राप्त की। वर्तमान में आप मोदी साइंस एण्ड टेक्नोलॉजी

विश्वविद्यालय सीकर में सहायक प्रोफेसर पद पर कार्यरत हैं।

**जोधपुर-** सुश्री अक्षिता जैन (कम्पनी सेक्रेटरी) सुपुत्री श्रीमती ममताजी एवं धर्मचन्दजी जैन-रजिस्ट्रार, अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, जोधपुर ने बी.कॉम, 2013 में वाणिज्य संकाय में प्रथम स्थान प्राप्त किया है। इस उपलक्ष्य में सुश्री जैन को जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय, जोधपुर द्वारा स्वर्णपदक से सम्मानित किया गया है। इससे पूर्व राजस्थान सरकार की योजना के अन्तर्गत भी उन्हें लेपटॉप प्रदान कर सम्मानित किया जा चुका है। सुश्री अक्षिता जैन वर्तमान में कल्पतरू ग्रुप ऑफ कम्पनीज, मुम्बई में कम्पनी सेक्रेटरी के रूप में कार्यरत है।



**जोधपुर-** रूहान मेहता सुपुत्र श्रीमती बिन्दू मेहता ने साढ़े तीन वर्ष की अल्पायु में सामायिक सूत्र, दशवैकालिक का प्रथम अध्ययन, 25 बोल के 1 से 10 बोल कठस्थ किए। आप अखिल भारतीय श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल की महासचिव श्रीमती बीनाजी मेहता के दौहित्र हैं।



**ब्यावर-** रत्नवंश के युवारत्न मनोजजी सांड 'सी.ए.' सुपुत्र डॉ. मंजूजी-श्री चिरंजीलालजी सांड ने अमेरिका की टी.सी.एस.न्यूयार्क सिटी मेराथन (42.2 किमी) में भाग लेकर गौरवान्वित किया। भारत का प्रतिनिधित्व करने वाले 216 व्यक्तियों में से श्री सांड का चयन उनकी भारत में सम्पादित मैराथन उपलब्धियों के कारण हुआ। मनोज कई वर्षों से मुम्बई स्थित विख्यात रियल एस्टेट कम्पनी निर्मल लाइफस्टाइल में कार्यरत हैं।

**जयपुर-** संचेतना मिशन द्वारा युवारत्न श्री दिलीपकुमारजी गाँधी को पर्यावरण-संरक्षण के क्षेत्र में विशिष्ट योगदान हेतु 27 दिसम्बर 2015 को समाज रत्न अवार्ड मुनि प्रज्ञा सागरजी म.सा. के हाथों से प्रदान किया गया। आपको पूर्व में संगीत और साहित्य के क्षेत्र में 'विवेकानन्द गौरव अवार्ड-2015' भी प्राप्त हुआ है।

## श्रद्धाञ्जलि

### प्रवर्तक श्री गणेशमुनिजी का देवलोकगमन

**उदयपुर-** साहित्य मनीषी श्रमणसंघीय प्रवर्तक श्री गणेशमुनिजी शास्त्री का 29 नवम्बर 2015 को संधारे सहित देवलोकगमन हो गया। 30 नवम्बर को उनकी अन्तिम यात्रा में बड़ी संख्या में श्रावक-श्राविकाओं ने भाग लिया। शहर के चित्रकूटनगर में आयोजित श्रद्धांजलि सभा में राजस्थान के गृहमंत्री श्री गुलाबचन्द कटारिया, पूर्व विधानसभाध्यक्ष श्री शान्तिलाल चपलोत, उदयपुर की पूर्व महापौर श्रीमती रजनी डांगी, वर्तमान महापौर श्री चन्द्रसिंहजी

कोठारी के अलावा उदयपुर के विभिन्न संघों व संस्थाओं के तथा जैन कॉन्फ्रेंस के पदाधिकारी तथा अनेक गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे। उन्होंने मात्र 14 वर्ष की उम्र में वि.सं. 2003 आश्विन शुक्ल दशमी (5 अक्टूबर 1946) को महास्थविर मुनि ताराचन्द्रजी और उपाध्याय श्री पुष्करमुनिजी के सान्निध्य में दीक्षा ली। उपाध्याय श्री पुष्करमुनिजी उनके गुरु थे तथा आचार्य श्री देवेन्द्रमुनिजी उनके ज्येष्ठ गुरुभ्राता थे। 69 वर्षों की दीक्षा पर्याय एवं 83 वर्ष की वय में आपने देह छोड़ी। इस समय प्रवर्तक श्री रूपमुनिजी 'रजत' भी वहाँ मौजूद थे। प्रवर्तक गणेशमुनिजी अच्छे लेखक, कवि और प्रवचनकार थे। उन्होंने शोधग्रंथ, कविता, कहानी, नाटक, उपन्यास, आगम-सूक्तियाँ आदि अनेक विधाओं में कलम चलाई। उनके द्वारा लिखित, सम्पादित, संयोजित लगभग सवा तीन सौ पुस्तकें प्रकाशित हुईं। उनके साहित्य पर सुखाड़िया विश्वविद्यालय के एक छात्र ने पी-एच्.डी. की। वे कतिपय वर्षों से उदयपुर में स्थिरवास कर रहे थे।

**रायपुर (झालावाड़)**- श्रुतधर श्री प्रकाशचन्द्रजी म.सा. की आज्ञानुवर्तिनी श्री भवरकुंवरजी म.सा., श्री अरविन्दकुंवरजी म.सा. की शिष्या श्री रंजनप्रभाजी म.सा. का 19 नवम्बर 2015 को देवलोकगमन हो गया है। आप श्री ने 1976 में दीक्षा अंगीकार की थी। 40 वर्ष का साधना एवं संयमयुक्त दीक्षा पर्याय था। अंतिम चातुर्मास रायपुर (झालावाड़) रहा है।

**जोधपुर**- श्रमणसंघीय उपाध्यायश्री पुष्करमुनिजी म.सा. की परम्परा की आज्ञानुवर्तिनी महासती श्री प्रेमकंवरजी म.सा. की सुशिष्या महासती श्री विमलवतीजी म.सा. का 18 नवम्बर 2015 को संधारापूर्वक महाप्रयाण हो गया। इस अवसर पर सिवाना, करमावास, समदड़ी, कानाना, पीपाड़, पाली, अहमदाबाद से श्रद्धालुजन उपस्थित हुए।

**शोरापुर (कर्नाटक)**- अनन्य गुरुभक्त संघ-सेवी, सुश्रावक वीरपिता श्री कांतिलालजी आंचलिया का 14 दिसम्बर 2015 को रायपुर (छत्तीसगढ़) में स्वर्गगमन हो गया। आचार्य श्री हीराचन्द्र जी म.सा., उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्रजी म.सा. प्रभृति संत-सतीवृन्द के प्रति उनकी अगाध श्रद्धा व भक्ति थी। शोरापुर चातुर्मास में आपने अपूर्व धर्म-ध्यान का लाभ प्राप्त किया। आपकी सुपुत्री सुश्री शीतलजी सम्प्रति परम पूज्य आचार्य भगवन्त श्री हीराचन्द्र जी म.सा. की आज्ञानुवर्ती व्याख्यात्री महासती श्री ज्ञानलताजी म.सा. की शिष्या महासती श्री लक्षितप्रभाजी म.सा. के रूप में रत्नसंघ एवं जिनशासन की महती प्रभावना कर रही है।

**अजमेर**- श्रावकरत्न श्री मूलराजजी चौधरी का 01 दिसम्बर 2015 को परलोकगमन हो गया। आपका जीवन सरलता, मधुरता, उदारता, सेवाभावना आदि सद्गुणों से युक्त था। संत-सतीवृन्द की आहार-विहार सेवा में उनकी व चौधरी परिवार की महनीय सेवाएँ प्राप्त होती रही हैं। वे संत-सतीवृन्द की सेवा में पधारकर दर्शन-वन्दन एवं प्रवचन-श्रवण का

लाभ प्राप्त करते रहते थे। आपने अपने जीवन में अनेक त्याग-प्रत्याख्यान ग्रहण कर रखे थे। जरूरतमन्द भाई-बहिनों को गुप्तरूप से सहयोग करने में वे तत्पर रहते थे। श्रावकरत्न ने वर्षों तक श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, अजमेर के अध्यक्ष पद का दायित्व कुशलतापूर्वक निर्वहन किया। सम्प्रति आप श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, अजमेर के परामर्शदाता के रूप में अपनी महनीय सेवाएँ प्रदान कर रहे थे।

**जयपुर-** धर्मानुरागी सुश्रावक श्री महावीरचन्दजी जरगड़ सुपुत्र स्व. श्री बंशीलालजी जरगड़



का 03 दिसम्बर 2015 को परलोकगमन हो गया। उन्होंने अपने आराध्य आचार्य श्री हस्तीमलजी म.सा. की पावन कृपा से परिस्थितियों पर कैसे विजय पायी जाए, यह कला सीखी थी। आप नियमित तीन सामायिक एवं स्वाध्याय करते थे। पर्युषण पर्व पर आयंबिल, पौषध, संवर, तपस्या आदि के लिए सभी को प्रेरणा करते रहते थे। आपका परिवार छोटी-बड़ी तपस्या के पारणे करवाने में दवा उपलब्ध करवा कर महत्वपूर्ण सहयोग प्रदान करता है। आप तेले की लड़ी व आयम्बिल की लड़ी के लिए धर्मदलाली करते हुए प्रेरणादायी बने। आचार्य भगवन्त श्री हीराचन्द्रजी म.सा. की आज्ञानुवर्ती महासती श्री रतनचन्दजी म.सा. की पावन प्रेरणा से आयम्बिल की लड़ी में ऐसे जुटे कि जब तक कोई आयम्बिल नहीं कर लेता, मुँह में पानी ही नहीं लेते थे। बड़ी से बड़ी तपस्या के पारणे कराने में भी वे निष्णात थे। पूरा जरगड़ परिवार संघ के प्रति पूर्ण समर्पित था।

**पीपाड़शहर-** श्राविकारत्न श्रीमती पुष्पलताजी कटारिया धर्मपत्नी स्व. श्री अमृतलालजी



कटारिया का 20 दिसम्बर 2015 को 68 वर्ष की आयु में देहावसान हो गया। आप नित्य 3-4 सामायिक, तप-त्याग, व्रत-प्रत्याख्यान करने वाली सुश्राविका थीं। आपने अपने जीवनकाल में उपवास, बेले, तेले से लेकर अठाई तप की आराधना की थी। पीपाड़ शहर में आगत सभी संत-सतीवृन्द की सेवा-शुश्रूषा एवं सुपात्रदान का विशेष लाभ लेती थी। आपके सुपुत्र श्री श्रेणिकजी कटारिया श्री जैन रत्न युवक परिषद्-शाखा पीपाड़ के अध्यक्ष रह चुके हैं।

**जोधपुर-** समाजसेवी, प्रेमहृदय श्री चन्दनमलजी सिंघवी सुपुत्र स्व. श्री केवलमलजी सिंघवी



का 85 वर्ष की आयु में 24 दिसम्बर 2015 को स्वर्गारोहण हो गया। गरीब-असहाय छात्रों के उत्थान व शिक्षा के लिये गांगाणी ग्राम में स्थापित 'सम्पर्क' नामक संस्था की स्थापना में आप अग्रणी थे। पिछले काफी समय से पेंशनर्स समाज, सरदारपुरा के अध्यक्ष व वर्तमान में संरक्षक पद पर कार्यरत थे। आप राजस्थान पेंशनर्स समाज के अध्यक्ष भी रहे और राज्य सरकार के आला

अफसरों से पेंशनर्स के हितों की रक्षा के लिये संघर्ष करते रहे। आप अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ के पूर्व महामंत्री श्री जगदीशमलजी कुम्भट के अग्रज साहू थे।

**जोधपुर-** प्राकृतिक चिकित्सक सुश्रावक श्री धनरूपमलजी सुपुत्र श्री मुकनमलजी सुराणा



का 24 नवम्बर 2015 को 81 वर्ष की वय में देहावसान हो गया। आपका जीवन सादगीपूर्ण था। स्वास्थ्य जागृति एवं प्राकृतिक जीवन की प्रेरणा द्वारा आप पिछले 40 वर्षों से समाज-सेवा में समर्पित रहे। 'मासिक प्राकृतिक चिकित्सा विचार' के संस्थापक एवं वहाँ से प्रकाशित पत्रिका के सम्पादक होने के साथ ही अन्य लेखन भी आपने किया। जिनवाणी व निरामय जीवन जैसी पत्रिकाओं में कई लेख भी प्रकाशित हुए हैं। सरल, मधुर, उदार, सेवाभावी एवं स्पष्टवादी व्यक्तित्व के धनी श्री सुराणाजी का जीवन ही प्रेरणास्पद रहा है।

**जोधपुर-** धर्मारोधिाका सुश्राविका श्रीमती मेघनाजी (नीतूजी) लोढ़ा का 07 दिसम्बर 2015 को मुम्बई में देहावसान हो गया। आपका जीवन सरलता, मधुरता, उदारता, सेवाभावना आदि सद्गुणों से युक्त था। आपने अपने जीवन में अनेक त्याग-प्रत्याख्यान ग्रहण कर रखे थे। लोढ़ा परिवार संत-सतीवृन्द की सेवा-भक्ति में भी सदैव तत्पर रहता था। स्वधर्मी वात्सल्य एवं आतिथ्य-सत्कार में आपका परिवार सदैव समर्पित रहा है। रत्नसंघ द्वारा संचालित सभी प्रवृत्तियों में लोढ़ा परिवार का महत्त्वपूर्ण योगदान प्राप्त होता रहा है।

**भोपाल-** उदारमना कर्मठ कार्यकर्ता श्री चिरंजीलालजी कटारिया का 74 वर्ष की आयु में देवलोकगमन हो गया। आप आचार्यश्री हस्तीमलजी म.सा. एवं आचार्य श्री हीराचन्द्रजी म.सा. के अनन्य श्रद्धावान भक्त थे। आप सदाचारी, सरल स्वभावी एवं मिलनसार थे तथा सभी संत-सतियों की सेवा-शुश्रूषा में अग्रणी रहते थे।



**चेन्नई-** धर्मनिष्ठ सुश्रावक श्री जुगराजजी खिंवसरा (बाबरा-राजस्थान निवासी) का 88 वर्ष की आयु में 12 अक्टूबर 2015 को समाधिपूर्वक स्वर्गवास हो गया। आपका जीवन सरलता व सेवा भावना जैसे सद्गुणों से प्रशंसनीय एवं अनुकरणीय था। आप प्रतिदिन सामायिक करते थे। आपका जीवन लिलोती, बड़ी स्नान एवं सामूहिक भोज में जमीकंद का संपूर्ण त्याग-प्रत्याख्यान से युक्त थे। आपने जन सेवा व समाज सेवा में भी बहुत कार्य किया तथा 13 वर्ष तक बाबरा में सरपंच पद पर रहकर गांव के विकास में सहयोग दिया।

**जयपुर-** सुश्रावक श्री हरिचन्दजी सुपुत्र स्व. श्री सरदारमलजी काष्ठिया का 23 नवम्बर 2015 को स्वर्गवास हो गया। आपका जीवन कर्तव्य परायणता, सेवाभावना, स्वधर्मी वात्सल्य, विनम्रता, मृदुभाषिता आदि अनेक गुणों से ओतप्रोत था। बचपन से प्राप्त

सुसंस्कारों के कारण आप निरन्तर धर्म-ध्यान में लगे रहते थे। आप सभी संत-सतियों की सेवा में सदैव तत्पर रहते थे।



**देवली-** सुश्राविका श्रीमती आशाजी लोढ़ा धर्मपत्नी श्री धर्मचन्दजी लोढ़ा (लिपिक ग्रेड प्रथम) पुत्रवधू श्री माणकचन्दजी लोढ़ा का हृदयगति रुक जाने से 16 दिसम्बर 2015 को स्वर्गवास हो गया। आप धर्मनिष्ठ थीं एवं श्री कन्हैयालाल जी लोढ़ा के छोटे भाई माणकचन्दजी की पुत्रवधू थीं।

**चेन्नई-** बालरत्न श्री जतिनकुमार सुपुत्र श्री नीतेशकुमारजी कटारिया एवं सुपौत्र श्री गौतमचन्द जी कटारिया का 10 वर्ष की अल्पवय में 8 दिसम्बर 2015 को परलोकगमन हो गया। आपके पिताश्री चेन्नई रत्न युवक परिषद् के अध्यक्ष पद पर कार्यरत हैं। आपका समस्त परिवार तप-प्रत्याख्यान, सामायिक-स्वाध्याय एवं संत-सतीवृन्द की सेवा में सदैव अग्रणी रहता है।



**जोधपुर-** सुश्रावक श्री मदनलालजी पटवा का 5 दिसम्बर 2015 को स्वर्गारोहण हो गया।



आपका जीवन सरलता, मधुरता, उदारता, सेवाभावना आदि सद्गुणों से युक्त था। संघ-समाज की धार्मिक एवं सामाजिक गतिविधियों में आप सदैव सक्रिय रहे थे। संत-सतीवृन्द की सेवा-भक्ति में भी वे सदैव तत्पर रहते थे। उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्रजी म.सा. के आप विशेष कृपापात्र थे। स्वधर्मी वात्सल्य एवं आतिथ्य-सत्कार में भी आप सदैव समर्पित रहे थे।

उपर्युक्त दिवंगत आत्माओं के प्रति सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जिनवाणी-परिवार तथा अ.भा. श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए उनके परिवारजनों के प्रति गहरी संवेदना व्यक्त करते हैं।

## वीतरागता अपनाया कर.....

श्री देवेन्द्रनाथ मोदी

मनवा, पल-पल में क्रोधित न हो जाया कर,  
स्नेह-प्यार-अनुराग हर समय बरसाया कर। मनवा....|1|  
धन-वैभव, सुख-समृद्धि की अंधी दौड़ में,  
लोगों के कुछ काम कभी तो आया कर। मनवा....|2|  
वैर-द्वेष की अग्नि कभी नहीं सुलगाया कर,  
भाईचारे का पाठ सीख-समझाया कर। मनवा....|3|  
राग-द्वेष, कषाय विष को मन-मस्तिष्क में कभी न पाला कर,  
बुद्धि-बल, चातुर्य, क्षमा से वीतरागता अपनाया कर।  
मनवा, पल-पल में क्रोधित न हो जाया कर।|4|

- 'हुकूम', 5-ए/1, सुभाषनगर, पाल रोड़, जोधपुर-342008 (राज.)

## ❀ साभार-प्राप्ति-स्वीकार ❀

1000/-जिनवाणी पत्रिका की आजीवन (अधिकतम 20 वर्ष)

सदस्यता हेतु प्रत्येक

क्रम संख्या 15529 से 15544 तक 16 सदस्य बने।

**'जिनवाणी' मासिक पत्रिका हेतु साभार प्राप्त**

- 22000/- श्री महावीर जी बाफना, सूरत, जिनवाणी की बालस्तम्भ-प्रतियोगिता में पुरस्कार हेतु।
- 5100/- श्रीमती तनुजाजी (धर्मपत्नी स्व. श्री सुभाषचन्दजी) एवं कुशलचन्दजी जरगड़, जयपुर, पूज्य पिताजी श्री महावीरचन्दजी जरगड़ का 03 दिसम्बर 2015 को स्वर्गवास होने पर उनकी पुण्य स्मृति में।
- 3000/- श्री गौतमचन्दजी संकलेचा, कुंभकोणम्, चेन्नई, जिनवाणी पर प्रतियोगिता आयोजन हेतु।
- 2100/- डॉ. धर्मचन्दजी, ऋषभचन्दजी, टीकमचन्दजी, विनोदकुमारजी जैन (अलीगढ़ वाले), जोधपुर, चि. मुदित (सुपुत्र श्रीमती मधुजी-डॉ. धर्मचन्दजी जैन) का शुभविवाह सौ. दीपांशी सुपुत्री श्री रमेशकुमारजी जैन (रानीपुरा वाले) कोटा, के संग 04 दिसम्बर 2015 को कोटा में सम्पन्न होने पर।
- 2100/- श्री गणपतराजजी, बसन्तराजजी चौधरी, चेन्नई, सौ.कां. शर्मिलाजी चौधरी धर्मपत्नी श्री बसन्तराजजी चौधरी के मासखमण की तपस्या सानन्द सम्पन्न होने की खुशी में सप्रेम भेंट।
- 2100/- श्री मदनलालजी, सुरेशचन्दजी, नीतेशजी, प्रदीपजी खींवसरा, चेन्नई, पूज्य पिताश्री श्री जुगराजजी खींवसरा (बाबरा वाले), चेन्नई का 12 अक्टूबर 2015 को समाधिपूर्वक देहावसान होने पर उनकी पुण्य स्मृति में भेंट।
- 2000/- श्री राजरूपमलजी जैन, शिवाकाशी, श्री दिनेशजी सुपुत्र श्री संजयजी राजकुमारीजी जैन के प्रथम वेतन से अंशदान स्वरूप सप्रेम भेंट।
- 1101/- श्री ताराचन्दजी, टीकमचन्दजी जैन, कुशतला-सवाईमाधोपुर, पूज्य पिताश्री स्व. सूरजमलजी जैन की पावन स्मृति में भेंट।
- 1101/- श्री रमेशकुमारजी, ओमप्रकाशजी लोहिया, सवाईमाधोपुर, चि. अंकित के शुभविवाह के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।
- 1101/- श्री भैरूलालजी, पारसमलजी जैन, चौथ का बरवाड़ा, चि. रवि सुपुत्र श्री पारसजी जैन के 13 दिसम्बर को सम्पन्न शुभविवाह के उपलक्ष्य में।
- 1101/- श्री महावीरप्रसादजी, मनीषजी जैन 'कसेरा वाले', सवाईमाधोपुर, चि. विनोद (सुपुत्र श्रीमती निर्मलादेवी-महावीरप्रसादजी जैन) संग सौ. रेखा (सुपुत्री श्रीमती संतरादेवी-रमेशचन्द्रजी जैन) के विवाहोपलक्ष्य में।
- 1101/- श्री त्रिलोकचन्दजी, सुरेन्द्र कुमारजी, प्रकाशचन्दजी जैन (चौधरी), सवाईमाधोपुर, श्री राजेन्द्र प्रसादजी जैन का 26 नवम्बर 2015 को स्वर्गवास हो जाने पर उनकी पुण्य स्मृति में।
- 1101/- श्री महावीरप्रसादजी, मनीषजी जैन 'कसेरा वाले' हाउसिंग बोर्ड-सवाईमाधोपुर, चि. विनोद सुपुत्र श्रीमती निर्मलादेवी-महावीरप्रसादजी जैन संग सौ. रेखा सुपुत्री श्रीमती संतरादेवी-

रमेशचन्दजी जैन के शुभविवाह के उपलक्ष्य में भेंट।

- 1100/- श्री चिरंजीलालजी, गौतमचन्दजी जैन (पचाला वाले), सवाईमाधोपुर, चि. परितोष संग सौ. कां. रेणुकाजी का शुभविवाह 26 नवम्बर 2015 को सुसम्पन्न होने की खुशी में।
- 1100/- श्री देवेन्द्रजी, डॉ. महावीर प्रसादजी जैन, सूरवाल-सवाईमाधोपुर, पूज्या माताजी श्रीमती पुष्पादेवीजी धर्मपत्नी स्व. श्री रामकरणजी जैन के देवलोकगमन की पुण्य स्मृति में भेंट।
- 1100/- श्री छगनलालजी, मंजूजी जैन, इन्दौर, चि. सुमितजी सुपौत्र स्व. श्री नानकरामजी का शुभविवाह सौ. कां. मनीषाजी सुपुत्री श्री बुद्धिप्रकाशजी संतोषजी जैन (बूंदी वाले), जयपुर का 22 नवम्बर 2015 को सुसम्पन्न होने की खुशी में सप्रेम भेंट।
- 1100/- श्री प्रकाशचन्दजी, शांतिलालजी, महावीरचन्दजी लोढ़ा (नाइसर वाले), जोधपुर, श्रीमती राजबालाजी सुपुत्री श्री प्रकाशचन्दजी लोढ़ा के अठाई तपस्या सानन्द सम्पन्न होने की खुशी में।
- 1100/- श्री लड्डूलालजी, दिलीप कुमारजी जैन, इंदौर, स्व. श्रीमती रामकन्यादेवीजी पुत्रवधू स्व. श्री फूलचन्दजी जैन (नौहरा वाले) की पुण्य स्मृति में भेंट।
- 1100/- श्रीमती मीनाक्षीजी, महेन्द्रजी लोढ़ा, गुडगाँव, अपने दोहिते प्रणीतजी सिंघवी सुपुत्र प्राचीजी नितिनजी सुपौत्र उषाजी नेमीचन्दजी सिंघवी के जन्म दिवस 7 मार्च 2015 के उपलक्ष्य में।
- 1100/- श्री पारसमलजी, शांतिलालजी, संजयजी कटारिया, भोपाल, श्री चिरंजीलालजी कटारिया का 74 वर्ष की आयु में आकस्मिक निधन हो जाने पर उनकी पुण्य स्मृति में भेंट।
- 1100/- श्री महेश कुमारजी, शीतल कुमारजी, नवीन कुमारजी जैन, रवांजना वाले, सवाईमाधोपुर, पूज्य पिताश्री श्री हेमराजजी जैन की पुण्य स्मृति में भेंट।
- 1100/- श्री बाबूलालजी, कमलजी, राजेन्द्रजी, अनिलजी जैन, सवाईमाधोपुर, श्रीमती प्रेमदेवीजी धर्मपत्नी श्री बाबूलालजी जैन के 29 सितम्बर 2015 को सम्मोदशिखर में मोक्ष गमन की पुण्य स्मृति में भेंट।
- 1100/- श्री लड्डूलालजी, पारसचन्दजी, मुकेशकुमारजी, मनीषकुमारजी, जितेशकुमारजी जैन, सवाईमाधोपुर, श्री राजमलजी जैन का देवलोकगमन हो जाने पर उनकी पुण्य स्मृति में भेंट।
- 1100/- श्री सरदारमलजी, वीरेन्द्र कुमारजी, बसंत कुमारजी मोदी, कोटा, स्व. श्रीमती बदामबाईजी धर्मपत्नी स्व. श्री भगवतीलालजी मोदी की पुण्य स्मृति में भेंट।
- 1100/- श्री विमलजी, विनोदजी जैन, उनियारा, चि. ऋषित कुमारजी सुपौत्र श्री विमलजी सुपुत्र श्री विनोदजी जैन (चेन्नई) के जन्मोत्सव के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।
- 1100/- श्री हरकचन्दजी, विरेन्द्रजी, राकेशजी सदावत मेहता, जोधपुर, श्री हरकचन्दजी-सुशीलादेवी के विवाह के 50 वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष्य में।
- 1100/- श्री देवेन्द्रनाथजी-कमलाजी, लोकेन्द्रनाथजी-ऋतुजी, लोरी-यिशिता मोदी, जोधपुर, कीर्तिशेष श्री हुकमनाथजी-श्रीमती कृष्णाजी मोदी की पुण्यस्मृति में भावांजलि स्वरूप।
- 1100/- श्री पुखराजजी एवं श्रीमती लीलाजी पटवा, जोधपुर, डॉ. संजीवजी पटवा के पी-एच.डी. उपाधि प्राप्ति के उपलक्ष्य में।
- 1100/- श्रीमती बीनाजी धर्मपत्नी श्री भागचन्दजी मेहता, जोधपुर, अपने दोहित्र श्री रूहान मेहता के साढ़े तीन वर्ष की अल्पायु में सामायिक सूत्र, 25 बोल के 10 बोल एवं दशवैकालिक सूत्र का एक अध्ययन कण्ठस्थ करने की खुशी में।
- 1100/- मोहनलालजी, अनिलजी मकाना, चेन्नई, अपनी सुपुत्री सौ. कां. आरती का शुभविवाह चि. अक्षय (सुपुत्री श्री सुभाषजी भण्डारी) के संग 14 दिसम्बर 2015 को सानन्द सम्पन्न

होने के उपलक्ष्य में।

- 1100/- श्री धर्मचन्दजी लोढ़ा, देवली, स्व. श्रीमती आशाजी लोढ़ा धर्मपत्नी श्री धर्मचन्दजी लोढ़ा का 16 दिसम्बर 2015 को स्वर्गवास हो जाने पर उनकी पुण्य स्मृति में भेंट।

### अ.भा.श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, जोधपुर

#### संघ-सेवा सोपान के अन्तर्गत साभार प्राप्त

- 110000/- श्री वर्द्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक संघ, शोरापुर, जीवदया हेतु।  
 4000/- श्री नरेशकुमारजी, प्रेमचन्दजी नागसेठिया, होलनांथा, जिला-धुलिया, स्व. श्रीमती बदाम बाईजी धर्मपत्नी श्री मोतीलालजी नागसेठिया की पावन स्मृति में संघ सहायतार्थ।  
 1100/- श्रीमती नीलमजी मेहता, जोधपुर, संघ सहायतार्थ।

### श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, जोधपुर हेतु साभार प्राप्त

- 2100/- डॉ. धर्मचन्दजी, ऋषभचन्दजी, टीकमचन्दजी, विनोदकुमारजी जैन (अलीगढ़ वाले), जोधपुर, चि. मुदित (सुपुत्र श्रीमती मधुजी-डॉ. धर्मचन्दजी जैन) का शुभविवाह सौ. दीपांशी सुपुत्री श्री रमेशकुमारजी जैन (रानीपुरा वाले) कोटा, के संग 04 दिसम्बर 2015 को सम्पन्न होने पर।  
 2100/- श्री त्रिलोकचन्दजी, प्रकाशचन्दजी, विजयकुमारजी, अजयकुमारजी जैन चौधरी, सवाईमाधोपुर, अपने पूज्य पिताश्री राजेन्द्रकुमारजी जैन की पुण्यस्मृति में भेंट।  
 1101/- श्री देवेन्द्रकुमारजी, डॉ. महावीरजी जैन, सूरवाल, सवाईमाधोपुर, पूज्य माताजी श्रीमती पुष्पादेवी धर्मपत्नी स्व. श्री रामकरणजी जैन की पुण्य स्मृति में।  
 1101/- श्री चिरंजीलालजी, गौतमचन्दजी, पचाला, सवाईमाधोपुर, अपने सुपुत्र चि. परितोष के शुभ विवाह के उपलक्ष्य में।

### गजेन्द्र निधि द्वारा आचार्य हस्ती स्कॉलरशिप फण्ड

#### (अखिल भारतीय श्री जैन रत्न युवक परिषद् द्वारा क्रियान्वित)

#### दानदाता एवं दान एकत्रित करने वालों की सूची

- 3,00,000/- श्री रिखबचन्दजी सुखानी 'रायचूर वाले', एगोर चेन्नई।  
 24000/- श्री दिनेशचन्द्रजी लोढ़ा, मुम्बई।  
 12000/- श्री सागरमलजी, महावीरजी, राजेशजी छाजेड़, चेन्नई।  
 12000/- श्री नेमीचन्दजी, रूपचन्दजी चोरडिया।  
 12000/- श्री नरेशचन्द्रजी, डूंगरमलजी बुरड 'जलगांव वाले', आबूधाबी।  
 12000/- श्री दीपचंदजी रांका, गुलाबपुरा।

छात्रवृत्ति-योजना में इच्छुक दानदाता एक छात्र के लिए 12000/- रु. अथवा उनके गुणक में जितनी छात्रवृत्तियाँ देना चाहें तदनुसार दानराशि 'गजेन्द्र निधि आचार्य हस्ती स्कॉलरशिप फण्ड' योजना के नाम चैक या ड्राफ्ट(Donations to Gajendra Nidhi are exempted u/s 80G of IncomeTax Act 1961) से निम्नांकित पते पर भेजने का कष्ट करें- **Sh. M. Harish Kawad, No. 5, Car Street, Poonamallee, Chennai-600056(T.N.) (Mob. 9543068382)**

(आगामी पर्व तिथियाँ पृष्ठ संख्या 11 पर देखें)

## रत्नसंघीय परिवारों का सूचना संग्रहण कार्यक्रम

रत्नसंघीय परिवारों के सम्बन्ध में सूचना संग्रह की जा रही है, जिसके उद्देश्य हैं- 1.संघ सदस्यों की धार्मिक, व्यावसायिक एवं सामाजिक जानकारी एकत्रित करना, 2. संघ के सभी कार्यक्रमों की सूचना अपने सदस्यों को पहुँचाने के लिए सूचना तंत्र विकसित करना, 3. संघ सदस्यों से प्राप्त जानकारी एकत्रित कर उपलब्ध संसाधनों का समुचित उपयोग करना, 4. प्राप्त आंकड़ों के आधार पर संघ के भावी कार्यक्रमों की रूपरेखा तय करना, 5. संघ एवं संघ की सहयोगी संस्थाओं से सम्बन्धित सभी जानकारी एक ही जगह पर संकलित करना, 6. संघ के सभी सदस्यों में सक्रियता का संचरण करना। इस हेतु पंजीकरण 4 जनवरी 2016 से प्रारम्भ। आप सूचना अवश्य भेजें। [WWW.RATNASANGH.COM](http://WWW.RATNASANGH.COM)

1. नाम-.....2. मध्य नाम-..... 3. आखिरी नाम-.....
4. जन्मतिथि-.....5. आयु-..... 6. लिंग-.....
7. ब्लड ग्रुप-.....
8. वैवाहिक स्थिति-.....विवाह वर्षगाँठ-.....
9. पारिवारिक स्थिति (सदस्यों का विवरण) - रिश्ते, नाम, जन्मतिथि, शिक्षा, व्यवसाय
10. ससुराल पक्ष के सम्बन्धों की जानकारी- रिश्ते, नाम, व्यवसाय, शहर, राज्य
11. शैक्षणिक योग्यता- शिक्षा, शाखा, डिग्री, प्रतिशत, संस्थान, उत्तीर्ण वर्ष, विशेष कथन
12. व्यावसायिक विवरण- स्थिति, प्रकार, पद का नाम, संस्थान का नाम, शहर का नाम, विशेष कथन
13. वर्तमान पता- फ्लेट/डोर/प्लॉट नं., बिल्डिंग, रोड़ नं., स्थान चिह्न, देश, राज्य, शहर।
14. मूल निवास- फ्लेट/डोर/प्लॉट नं., बिल्डिंग, रोड़ नं., स्थान चिह्न, देश, राज्य, शहर।
15. कार्यालय पता- फ्लेट/डोर/प्लॉट नं., बिल्डिंग, रोड़ नं., स्थान चिह्न, देश, राज्य, शहर।
16. सम्पर्क सूत्र- घर, कार्यालय, मोबाइल, ईमेल
17. वीर परिवार सदस्य- संत-सती का नाम, सांसारिक सम्बन्ध
18. धार्मिक अध्ययन- सूत्र, थोकड़े, आगम
19. शिक्षण बोर्ड परीक्षा- रोल नम्बर
20. स्वाध्याय संघ- पहली बार स्वाध्यायी.....  
स्वाध्यायी रूप में सेवा (प्रतिक्रमण/प्रवचन कला/गायन कला/अन्य).....
21. सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल- जिनवाणी सदस्यता नम्बर, साहित्य सदस्यता नम्बर
22. तपस्या- मासक्षण, एकासन वर्षीतप, उपवास वर्षीतप, सिद्धितप।
23. व्रत- सामायिक, 12 व्रत, पौषध, शीलव्रत, चार खंद
24. नियम- चौविहार, रात्रिभोजन-त्याग, जमीकंद त्याग, सामूहिक रात्रिभोजन-त्याग।

गजेन्द्र निधि द्वारा संचालित

## आचार्य हस्ती मेधावी छात्रवृत्ति योजना

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न युवक परिषद् द्वारा क्रियान्वित

पुण्यार्जन का सुनहरा अवसर

सदस्यता अभियान से जुड़िये, गुरु भाइयों की शिक्षा में सहयोग करिए।

आदरणीय रत्नबंधुवर,

अत्यधिक हर्ष का विषय है कि छात्रवृत्ति योजना की लाभार्थी सुश्री श्वेता और सुश्री स्मिता सुपुत्री श्री मुकेशजी बुरड़-शिरपुर के कम्प्यूटर इंजीनियर बनने के बाद शिरपुर में A. R Patil CBSE School में दोनों प्रोफेसर के पद पर कार्यरत हैं। इन्होंने अपनी भावना से प्रथम वेतन में से एक-एक छात्र की छात्रवृत्ति राशि का सहयोग किया है। संघ द्वारा ऐसी छात्राओं को तहेदिल से धन्यवाद एवं हार्दिक आभार।

छात्रवृत्ति योजना संघ की महत्त्वपूर्ण योजनाओं में से एक योजना है, अब इस योजना की निरन्तरता के लिए समिति-पदाधिकारियों ने निर्णय लिया है कि छात्रवृत्ति योजना में अर्थसहयोग के लिए सदस्यता अभियान का प्रारम्भ किया जायेगा, जिसमें सदस्यों द्वारा प्रतिवर्ष अर्थसहयोग किया जायेगा। सदस्यता अभियान का प्रारूप इस प्रकार है-

आचार्य हस्ती मेधावी छात्रवृत्ति योजना सदस्यता अभियान

हीरक स्तम्भ सदस्य

(5 लाख रुपये प्रति वर्ष)

स्वर्ण स्तम्भ सदस्य

(1 लाख रुपये प्रति वर्ष)

रजत स्तम्भ सदस्य

(50 हजार रुपये प्रति वर्ष)

**नोट:-** सदस्यता को ग्रहण करने वाले सभी सदस्यों का नाम जिनवाणी पत्रिका में प्रति माह प्रकाशित किया जायेगा। जो भी अनन्य गुरुभक्त योजना में अर्थ सहयोग करके सदस्यता ग्रहण करना चाहते हैं वे एक छात्र के लिए 12000/- रुपये अथवा उनके गुणक में छात्रवृत्ति राशि का सहयोग करने के लिए चैक, ड्राफ्ट या नकद राशि द्वारा जमा कर सकते हैं या भेज सकते हैं। बैंक खाते का विवरण इस प्रकार है- A/c **Name-** Gajendra Nidhi Acharya Hasti Scholarship Fund, A/c No. 168010100120722, **Bank Named & Address-** AXIS BANK LTD. Anna Salai, Chennai (TN), IFSC Code- UTIB0000168, PAN No. AAATG1995j (Note- Donation to Gajendra Nidhi are exempted U/s 80G of Income Tax Act 1961).

छात्रवृत्ति योजना में सदस्यता अभियान के सदस्य बनकर योजना की निरन्तरता को बनाये रखने में अपना अमूल्य योगदान कर पुण्यार्जन किया, ऐसे संघनिष्ठ, श्रेष्ठीवर्यों के नामों की सूची-

1. **हीरक स्तम्भ सदस्य (5 लाख रुपये प्रतिवर्ष)**- 1. श्री मोफतराजजी मुणोत-मुम्बई, 2. श्री हरीशजी कवाड़-चेन्नई, 3. श्री राजीव नीताजी डागा-ह्यूस्टन।
2. **स्वर्ण स्तम्भ सदस्य (1 लाख रुपये प्रतिवर्ष)**- श्री दूलीचंदजी बाघमार एण्ड संस-चेन्नई, 2. श्री लक्ष्मीमलजी लोढ़ा-जोधपुर, 3. श्री दलीचंदजी सुरेशजी कवाड़-पुन्नमल्लई, 4. गुप्त सहयोगी-चेन्नई, 5. श्री प्रेमजी कवाड़-चेन्नई, 6. श्री गणपतजी हेमन्तजी बाघमार-चेन्नई।
3. **रजत स्तम्भ सदस्य (50 हजार रुपये प्रति वर्ष)**-

सहयोग के लिए चैक या ड्राफ्ट कार्यालय के इस पते पर भेजे-**B. Budhmal Bohra**, "Pooja Foundation", Door No. 921, 1st Floor, Poonamalle High Road, EVR 1st Lane, Chennai-600084(TN), Mob.-09543068382, Email- guruhasti\_scholarship@yahoo.co.in

# अलविदा बाईपास सर्जरी

अब बाईपास सर्जरी के बारे में कभी ना सोचिये

## काउन्टर पलसेशन थैरेपी

(ई.ई.सी.पी.)

द्वारा प्राकृतिक बाईपास करवायें

काउन्टर पलसेशन थैरेपी (ई.ई.सी.पी.) में क्या होता है :-

हृदय रोगी को साधारणतया 35 दिन तक प्रतिदिन एक घंटे की थैरेपी ई.ई.सी.पी. मशीन जो कि एफ.डी.ए., अमेरिका द्वारा मान्यता प्राप्त है, पर दी जाती है। यह थैरेपी ई.ई.सी.पी. मशीन के विशेष प्रकार के बिस्तर पर रोगी को लिटाकर दी जाती है। तीन बड़े हवा से फूलने वाले कफ पैड जो ब्लड प्रेशर उपकरण के कफ पैड की तरह के होते हैं, उन्हें रोगी की पिंडलियों, जांघ एवं कमर के निचले हिस्से पर बाँधा जाता है एवम् इन कफ पैड के इनफ्लेशन एवम् डिफ्लेशन की क्रिया को मशीन से जुड़े कम्प्यूटर द्वारा निर्देशित किया जाता है। इस सारी प्रक्रिया का इलेक्ट्रोकार्डियोग्राफ मशीन के पर्दे पर अवलोकन किया जाता है। मशीन पर उपचार के दौरान कफ पैड के फैलने पर रक्त पूर्ण दबाव से हृदय की ओर जाता है एवं इस दबाव के कारण हृदय के पास सुप्त पड़ी धमनियों में रक्त तीव्र गति से प्रवाहित होकर इन धमनियों को क्रियाशील कर देता है व हृदय को पर्याप्त मात्रा में रक्त मिलने से व्यक्ति को एन्जिना दर्द (छाती दर्द) नहीं होता है। 35 दिन तक यह थैरेपी लेने से हृदय के पास सुप्त पड़ी धमनियाँ स्थायी रूप से खुल जाती है और छोटी-छोटी धमनियाँ आपस में जुड़कर नई धमनियों का निर्माण करती है।

श्रीमती गुलाब कुम्भट मेमोरियल चेरिटेबल ट्रस्ट द्वारा संचालित

## समर्पण हार्ट एण्ड हेल्थ केयर सेन्टर

ए - 12, इण्डस्ट्रीयल एस्टेट, उद्योग भवन  
के पास, न्यू पावर हाऊस रोड, जोधपुर (राज.)

फोन : 2432525

Email : samarpanjodhpur@gmail.com

सम्पर्क : धीरिन्द्र कुम्भट

93147 14030

ॐ चारित्र आत्माओं के लिए ट्रस्ट द्वारा निःशुल्क उपचार ॐ



जयगुरु हस्ती

जयगुरु हीरा

जयगुरु मान



साधना के मार्ग में प्रगतिशील वही बन सकता है,  
जिसमें संकल्प की दृढ़ता हो।

- आचार्य श्री हस्ती

**C/o CHANANMUL UMEDRAJ  
BAGHMAR MOTOR FINANCE  
S. SAMPATRAJ FINANCIERS  
S. RAJAN FINANCIERS**

# 218, Ashoka Road, Lashkar Mohalla,  
Mysore-570001 (Karnataka)

*With Best Compliments from :*

*C. Sohanlal Budhmal Sampathraj Rajan  
Abhishek, Rohith, Saurabh, Akhilesh Baghmar*

Tel. : 821-4265431, 2446407 (O)

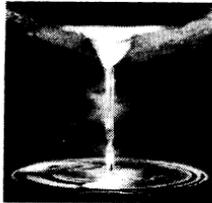
Mo. : 9845126407 (B), 9845580407 (S), 9845113334 (R)



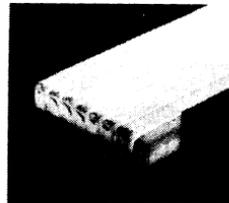
Gurudev



DRI Plant



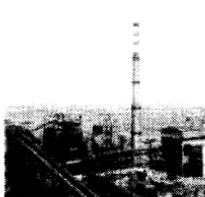
Electric Arc Furnace



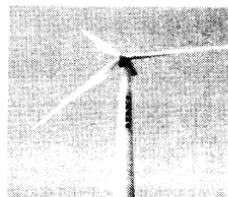
Billets



Rolling Mill



Captive Power Plant



Windmill

With best wishes from



**SURANA INDUSTRIES LIMITED**

INTEGRATED STEEL PLANT

MANUFACTURE OF TMT BARS AND ALL KIND OF ALLOY STEEL

# 29, Whites Road, II Floor, Royapettah, Chennai 600 014/ Ph : 044-28525127 (3 lines) 28525596. Fax: 044-28521143

Email: steelmktg@suranaind.com / www.surana.org.in

**STEEL | POWER | MINING**

॥ श्री महावीराय नमः ॥

हस्ती-हीरा जय जय !

हीरा-मान जय जय !



छोटा सा नियम धोवन का ।  
लाभ बड़ा इसके पालन का ॥

अखण्ड बाल ब्रह्मचारी चारित्र चूड़ामणि, भक्तों के भगवान् 1008  
श्री हस्तीमल जी म.सा. के चरणों में हृदय की असीम आस्था से समर्पण  
उनके अनमोल खजाने के हीरे-मोती जन-जन के तारणहार  
पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री हीराचन्द्र जी म.सा.,  
पण्डित रत्न उपाध्याय प्रवर श्री मानचन्द्रजी म.सा.

एवं समस्त

रत्नाधिक साधु साध्वी मण्डल

के चरण कमलों में भावभरा कोटिशः वन्दन एवं समर्पण...

**OUR HUMBLE SALUTATIONS TO THE MOST NOBLE SOULS**

**PRITHVIRAJ PREM KUMAR KAVAD**

690, Trunk Road, Poonamallee, Chennai - 600 056

Ph. 044-26272196 Mob. : 93810-07273



**MANGILAL HARISH KUMAR KAVAD**

**GURU HASTI THANGA MAALIGAI**

(JEWELLERS & BANKERS)

5, Car Street, Poonamallee, Chennai-600 056

Ph. : 044-26272609 Mob. : 95-00-11-44-55

गजेन्द्र निधि द्वारा संचालित

**आचार्य हस्ती मेधावी छात्रवृत्ति योजना**

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न युवक परिषद्

॥ पुण्यार्जन का सुनहरा अवसर ॥

सदस्यता अभियान से जुड़िये, गुरु भाईयों की शिक्षा में सहयोग करिये।

आदरणीय रत्नबंधुवर,

छात्रवृत्ति योजना संघ की महत्वपूर्ण योजनाओं में से एक योजना है, अब इस योजना की निरन्तरता के लिए समिति के पदाधिकारियों ने निर्णय लिया है कि छात्रवृत्ति योजना में अर्थसहयोग के लिए सदस्यता अभियान प्रारम्भ किया जायेगा, जिसमें सदस्यों द्वारा प्रतिवर्ष अर्थसहयोग किया जायेगा। सदस्यता अभियान का प्रारूप इस प्रकार है -

## आचार्य हस्ती मेधावी छात्रवृत्ति योजना सदस्यता अभियान

हीरक स्तम्भ सदस्य

( 5 लाख रुपये प्रति वर्ष )

स्वर्ण स्तम्भ सदस्य

( 1 लाख रुपये प्रति वर्ष )

नोट-सदस्यता को ग्रहण करने वाले सभी सदस्यों का नाम जिनवाणी पत्रिका में प्रति माह प्रकाशित किया जायेगा।

जो भी अनन्य गुरुभक्त योजना में अर्थसहयोग करके सदस्यता ग्रहण करना चाहते हैं एवं एक छात्र के लिए 12000/- रुपये अथवा उनके गुणक में छात्रवृत्ति राशि का सहयोग करने के लिए बैंक, ड्राफ्ट या नकद राशि द्वारा जमा या भेज सकते हैं। कोष का खाता विवरण इस प्रकार है -

A/c Name- Gajendra Nidhi Acharya Hasti Scholarship Fund

A/c No. 168010100120722

Bank Name & Address - AXIS BANK LTD. Anna Salai, Chennai(TN) IFSC Code - UTIB0000168  
PAN No. - AAATG1995J

Note- Donation to Gajendra Nidhi are exempted u/s 80G of Income Tax Act 1961.

छात्रवृत्ति योजना में सदस्यता अभियान के सदस्य बनकर योजना की निरन्तरता को बनाये रखने में अपना अमूल्य योगदान कर पुण्यार्जन किया, ऐसे संघनिष्ठ, श्रेष्ठीवर्यों के नामों की सूची -

हीरक स्तम्भ सदस्य ( 5 लाख रुपये प्रति वर्ष )	स्वर्ण स्तम्भ सदस्य ( 1 लाख रुपये प्रति वर्ष )
श्रीमान् मोफतराज जी मुणोत, मुम्बई। युवारत्न श्री हटीश जी कवाड़, चैन्नई। श्रीमान् राजीव जी नीता जी डागा, ह्यूस्टन	श्रीमान् दूलीचंद बाघमार एण्ड संस, चैन्नई। श्रीमान् लक्ष्मीमल जी लोढ़ा, जोधपुर। श्रीमान् दलीचंद जी सुरेश जी कवाड़, पूनामल्लई। गुप्त सहयोगी, चैन्नई। श्रीमान् प्रेम जी कवाड़, चैन्नई। श्रीमान् राजेश जी विमल जी पवन जी बोहरा, चैन्नई। श्रीमान् गणपत जी हेमन्त जी बाघमार, चैन्नई।

सहयोग के लिए बैंक या ड्राफ्ट कार्यालय के इस पते पर भेजें-

M. Harish Kumar Kavadi - 5, Car Street, Poonamallee, CHENNAI-600056 (TN)

छात्रवृत्ति योजना से संबंधित जानकारी के लिए सर्मक करें- मनीष जैन, चैन्नई (Mob.095430 68382)

Jai Guru Heera

Jai Guru Hasti

Jai Guru Maan

# ॥ जैनं जयति शासनम् ॥

*With Best Compliments from:*

## **Dharamchand Paraschand Exports**

**Paras Chand Hirawat**

CC 3011-3012, Bandra Kurla Complex, Bandra (E),

Mumbai-400 098 (MH)

Tel. : +91 22 4018 5000

Email : dpe90@hotmail.com

## **KANTILAL SHANTILAL RAJENDRA LUNKER**

**PACHPADRA-PALI-ERODE**

**K.L. ASSOCIATES**

'Sanskar', 177-B, Adarsh Nagar, Pali-306401 (Raj.)

Mobile : 094141-22757

135, N.M.S. Compound, ERODE-638001 (T.N.)

Tel. : 3205500 (O), Mobile : 093600-25001

## **BHANSALI GROUP**

**Dhanpatraj V. Bhansali**

## **BHANSALI DEVELOPERS**

Sharda Bhawan, 2nd Floor, Nandapatkar Road, Vile Parle (E),

Mumbai-400057 (MH) Tel. : 26185801, 32940462 (O),

E-mail : bhansalidevelopers@yahoo.com

## **S.D. GEMS & SURBHI DIAMONDS**

**Prakash Chand Daga**

**Virendra Kumar Daga (Sonu Daga)**

FC51, Bharat-Diamond Bourse,

Bandra Kurla Complex,

Bandra (E), Mumbai-400098 (MH)

Ph. : 022-23684091, 23666799 (o), 022-28724429

Fax : 22-40042015, Mobile : 098200-30872

E-mail : sdgems@hotmail.com

## **Basant Jain & Associates, C.A.**

**BKJ & Associates, C.A.**

**BKJ Consulting Pvt. Ltd.,**

**Megha Properties Pvt. Ltd.**

**Ambition Properties Pvt. Ltd.**

**बसंत के जैन**

अध्यक्ष: श्री जैन रत्न युवक परिषद, मुम्बई

ट्रस्टी : गजेन्द्र निधि ट्रस्ट

601, Dalamal Chambers, New Marine Lines,

Mumbai - 400020 (MH)

Ph. : 022-22018793, 22018794 (o), 022-28810702

## **NARENDRA HIRAWAT & CO.**

**N.H. Studios**

**Launches**

**N.H. Jewells**

A/1502, Naman Midtown, S.B. Road, Elphistone Road, Mumbai-400013 (MH)

Web. www.nhstudioz.tv, Tel. : 022-24370713

॥जय गुरु हस्ती॥

॥श्री महावीराय नमः॥

॥जय गुरु हीरा-मान॥



रात्रि भोजन त्याग रूप व्रत को  
आत्म-कल्याण के लिए  
स्वीकार करना चाहिए।  
- भगवान महावीर



रात्रि भोजन त्याग के  
साथ-साथ भक्ष्य-अभक्ष्य  
का विचार करके ही  
अन्न ग्रहण करना चाहिए।  
- आचार्य हस्ती



रात्रि भोजन सदोष व  
तामसी आहार होता है।  
समाधि का अभिलाषी साधक  
ऐसी तामसी आहार से  
दूर ही रहता है।  
- आचार्य हीरा

रात्रि भोजन करें या  
न करें, अगर त्याग नहीं है तो  
उसे दोष लग ही रहा है। अतः  
रात्रि भोजन का प्रत्याख्यान  
करना आवश्यक है।  
- उपाध्याय मान

## सामूहिक रात्रि भोजन आयोजन त्याग हेतु विनम्र अपील

प्रभु वीर का शासन मिला, गुरु भगवन्तों का सानिध्य मिला ।  
श्रद्धा-भक्ति के भाव जगे, सामूहिक भोज रात्रि को तजे ॥

रात्रि भोजन त्याग जैनों की प्रमुख पहचान है।

रात्रि भोजन करना दुर्गति का कारण है।

रात्रि भोजन अनर्थदण्ड व पाप का कारण है।

आओ - हम सब संकल्प करें कि सामूहिक रात्रि भोजन का आयोजन कदापि नहीं करेंगे।

विनीत - समस्त जैन समाज

सौजन्य से : मधु कवाड़, चैन्नई

आर.एन.आई. नं. 3653/57 डाक पंजीयन संख्या JaipurCity/413/2015-17  
मुद्रण तिथि दिनांक 5 से 8 जनवरी, 2016  
वर्ष : 74 ★ अंक : 01 ★ मूल्य : 10 रु.  
डाक प्रेषण तिथि 10 जनवरी, 2016 ★ पौष, 2072

 KALPATARU®



Artist's impression

**waterfront**  
at KALPATARU  
**riverside**  
PANVEL

**Premium 2 & 3 BHK residences**

 **022 3064 3065**

Promoters: M/S Kalpataru + Sharyans

Site Address: Opp. Panch Mukhi Hanuman Temple, Old Mumbai - Pune Highway, Panvel - 410 206. | Head Office: 101, Kalpataru Synergy,  
Opp. Grand Hyatt, Santacruz (E), Mumbai - 400 055. Tel.: +91 22 3064 3065 | Fax: +91 22 3064 3131 | Email: sales@kalpataru.com | visit: www.kalpataru.com

Images are for representative purposes only. This property is secured with Housing Development Finance Corporation Limited.

The No Objection Certificate / Permission would be provided, if required. Conditions apply.

स्वामी सम्पन्ना प्रचारक मण्डल के लिए प्रकाशक, मुद्रक - विनय चन्द डागा द्वारा दी डायमण्ड प्रिंटिंग प्रेस, मोतीसिंह भोमियों का रास्ता, जौहरी बाजार, जयपुर राजस्थान से मुद्रित एवं सम्पन्ना प्रचारक मण्डल, शॉप नं. 182 के ऊपर, वापू बाजार, जयपुर-3 राजस्थान से प्रकाशित। सम्पादक-डॉ. धर्मचन्द जैन